www.rajsevak.com

मासिक

शिविरा पत्रिका

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

वर्ष : 62 | अंक : 02 | अगस्त, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

संदेश

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान ने उच्च माध्यमिक स्तर के नतीजे घोषित कर दिए हैं। पिछले सत्र (2020-21) में कोरोना की काली छाया के बावजूद बच्चों की पढ़ाई के लिए हमने प्रयत्न एवं प्रबन्ध किए। शिक्षा के ऑनलाइन तरीकों एवं विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क साधकर शिक्षण-अधिगम का दीप जलाए रखा। वर्तमान पीढ़ी ने यह सपने में भी नहीं सोचा होगा। भावी पीढ़ियां जब यह वृत्तांत अपने बुजुर्गों से सुनेंगी अथवा पुस्तकों में पढ़ेंगी तो सीधे-सीधे विश्वास ही नहीं करेंगी कि कभी ऐसा भी हुआ था। इससे बचना बहुत जरूरी है। पूर्व में मेरे द्वारा किए गए निवेदन को पुनः दोहराते हुए संक्षेप में बस यही कहना चाहूँगा कि हम वांछित सावधानियां रखें। शासन द्वारा जारी एडवाइजरी का सख्ती से स्वयं पालन करते हुए इसके लिए सकारात्मक वातावरण बनाएं।

शिक्षक संवेदनशील एवं दयावान होता है। करुणा उसके हृदय का आभूषण होती है। मुंशी प्रेमचंद का एक कथन मुझे याद आ रहा है, वे कहते हैं 'रोगी को देखकर आना एक बात है और दवा लाकर देना दूसरी बात है। पहली बात शिष्टाचार से होती है जबकि दूसरी सच्ची संवेदना से।' उपन्यास सम्राट के इस कथन को गहराई से समझना चाहिए। हमें प्रशासन में संवेदनशील होकर न केवल जरूरतमंदों के हालचाल ही पूछने हैं बल्कि सच्चे मन से उनकी सहायता भी करनी है।

कोरोना महामारी की चपेट में आने से मेरे वृहत शिक्षा परिवार के अनेक सदस्य-शिक्षक एवं कर्मचारी असमय काल के गाल में समा गए। मैं उन हुतात्माओं के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए परिवार जन के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूँ। हम उनके साथ हैं। न केवल कोरोना से ही अपितु किसी भी कारण से सेवारत शिक्षा कार्मिक का निधन जाने पर मैं चाहूँगा कि-

(1) स्वयं संस्थाप्रधान शोकाकुल परिवार से मिलकर विभाग की ओर से संवेदनाएं प्रकट करें। उन्हें आश्वस्त करें कि हम उनके साथ हैं। ऐसा उत्तम परिवार भाव होना चाहिए।

(2) परिवार में किसी जिम्मेदार व्यक्ति को दिवंगत कार्मिक को देय परिलाभों एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए परिवार के स्तर से करणीय औपचारिकताओं के बारे में समझाएं।

(3) विद्यालय के किसी कार्मिक को इस बात के लिए उत्तरदायी बनाएं कि वह निरंतर सम्बन्धित परिवार एवं सक्षम अधिकारी (जिशिअ., संयुक्त निदेशक, निदेशक) कार्यालय के साथ समन्वय कर सेवा समाप्ति आदेश एवं अन्य आवश्यक प्रमाण पत्र जारी करवाएं।

(4) दिवंगत कार्मिक के सेवा अभिलेख में जमा उपार्जित अवकाश के नकदीकरण का लाभ अधिकतम 15 दिन में दिलाना संस्थाप्रधान का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व होगा। इसी प्रकार हितकारी निधि से नियमानुसार देय अनुग्रहित राशि का भुगतान भी 15 दिन में परिवार को दिलाना सुनिश्चित करें।

(5) अनुकम्पा नियुक्ति आवेदन पत्र परिवार से मिलने के पश्चात संस्थाप्रधान, पीईईओ., जिशिअ, संयुक्त निदेशक कार्यालयों से होते हुए अधिकतम एक सप्ताह में निदेशालय में पहुंच जाना चाहिए।

(6) दिवंगत कार्मिक के राज्य बीमा, सा.प्रा.नि. में जमा राशि ग्रेच्युटी का भुगतान भी परिवार को अविलम्ब मिलना चाहिए। पेंशन कुलक तैयार कर भिजवाना एवं ध्यान देकर यथा समय स्वीकृति जारी करवाना हमारा नैतिक दायित्व है। इस पुण्य के कार्य को पूर्ण तत्परता से करना चाहिए।

शिक्षा निदेशक से लेकर संस्थाप्रधान तक भी अधिकारियों से मेरी भावुक अपील है कि सेवा में रहते दिवंगत होने वाले कार्मिक के परिवार को देय परिलाभों एवं सुविधाओं को समय पर दिलवाने के लिए वे नोन-स्टोप कार्यवाही करते हुए सूक्ष्म प्रबोधन करें। हम उन्हें उतना ही देते हैं, जितना नियमानुसार देय है : मगर हमारी तत्परता एवं संवेदनशीलता के कारण परिवार की विभाग के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान में वृद्धि होती है। हम वृहत शिक्षा परिवार की बात करते हैं। वास्तव में शिक्षा परिवार कहलाना तभी सार्थक होगा जब हम नियमानुसार देय लाभों एवं सुविधाओं को आगे बढ़कर मधुर व्यवहार के साथ उन्हें उपलब्ध करवाएंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हर स्तर पर विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी मेरी भावना के अनुरूप कार्य करेंगे।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई है। सघन वृक्षारोपण का कार्य करना ही है। वृक्ष की महिमा बताते हुए पदम पुराण में कहा गया है-'जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फलता-फूलता है, जितने वर्षों तक वह वृक्ष फलता-फूलता है।' आइए, वृक्ष लगाकर धरती माता का शृंगार करें।

भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई एवं शुभकामनाओं के साथ!

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"शिक्षक संवेदनशील एवं दयावान होता है। करुणा उसके हृदय का आभूषण होती है। मुंशी प्रेमचंद का एक कथन मुझे याद आ रहा है, वे कहते हैं 'रोगी को देखकर आना एक बात है और दवा लाकर देना दूसरी बात है। पहली बात शिष्टाचार से होती है जबकि दूसरी सच्ची संवेदना से।' उपन्यास सम्राट के इस कथन को गहराई से समझना चाहिए। हमें प्रशासन में संवेदनशील होकर न केवल जरूरतमंदों के हालचाल ही पूछने हैं बल्कि सच्चे मन से उनकी सहायता भी करनी है।"

www.rajsevak.com

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 2 | श्रावण-भाद्रपद, २०७९ | अगस्त, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- हमारी प्राथमिकता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 5
  आलेख
- महात्मा गांधी का आर्थिक चिंतन 6
  विजय सिंह माली
- भारतीय दर्शन में ज्ञान 7
  डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी
- नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम (NMMSS) 9
  रोहताश
- आध्यात्म व विज्ञान 10
  डालचन्द गुप्ता
- प्राणायाम की महत्ता 11
  देवकरण सिंह
- शिक्षण में नवाचार : स्माइल-3 12
  विमलेश चन्द्र
- हमारे प्राचीन शिक्षा केन्द्र 14
  रामावतार मित्तल
- 'आश्रम से स्मार्ट क्लास तक-शिक्षक' 16
  डॉ. मांगीलाल मिस्त्री 'मनीष'
- संकल्प से सृष्टि 17
  सीमा गोयल
- स्काउट : पशु-पक्षियों का मित्र एवं प्रकृति प्रेमी 18
  घनश्याम स्वामी
- एप से ऑनलाइन शिक्षा 19
  डॉ. देवेन्द्र सिंह राणावत
- डिजिटल दुनिया का संचार आईसीटी 20
  कान्ता मीना
- किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर इंटरनेट का प्रभाव 32
  डॉ. जयश्री माथुर
- लोकगीतों की विविधता 33
  ओम जोशी
- किताबें कुछ कहना चाहती हैं 34
  शालिनी थ्योफ्लस
- The Challanges and The Advantages 35
  Subhash Chandar
- बच्चों में जगाएँ लेखन प्रवृत्ति 36
  दिनेश विजयवर्गीय

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2021 21-29
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 30-31
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 37-42

- सृजन-संवाद
  लेखक : डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : **अतुल कनक**
- **अदीठ साच**
  लेखक : **कमल रंगा**
  समीक्षक : **डॉ. मदन सैनी**
- **राजस्थानी लोकनाट्य विज्ञान**
  लेखक : बी. एल. माली 'अशांत'
  समीक्षक : **राजाराम स्वर्णकार**
- **हम अजेय अपराजेय हैं**
  कवि : राजाराम स्वर्णकार
  समीक्षक : **अशफाक कादरी**
- **'कुछ पढ़ते....कुछ लिखते'**
  लेखकः डॉ. प्रमोद कुमार चमोली
  समीक्षक : **शरद केवलिया**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

www.rajsevak.com

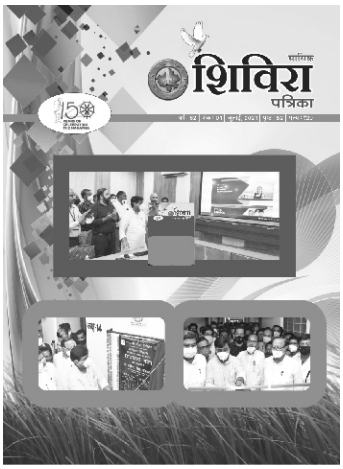

▼ चिन्तन

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।
अहार्यत्वाद्दनर्घ्यत्वाद्दक्षयत्वाच्च सर्वदा।।

अर्थात- सब द्रव्यों में विद्यारुपी द्रव्य सर्वोत्तम है, क्योंकि वह किसी से हरा नहीं जा सकता; उसका मूल्य नहीं हो सकता, और उसका कभी नाश नहीं हो सकता।

पाठकों की बात

● शिविरा पत्रिका का जुलाई, 2021 का अंक विद्यालय में समय पर उपलब्ध हुआ। अप्रेल से जून तक कोविड-19 के चलते शिविरा के इस अंक की महत्ता और बढ़ जाती है। जुलाई, 2021 का अंक इस लिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इस वर्ष के प्रारम्भ में ही **स्माईल-3** व **आओ घर से सीखें** कार्यक्रम नए कलेवर में आगे बढ़े हैं। **''अपनों से अपनी बात''** में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने ग्रीष्मावकाश पश्चात विद्यालय खुलने व कोविड-19 के कारण विद्यार्थी विद्यालय नहीं आ पाए तो विभिन्न तकनीक से यथा स्माईल-3, हवा महल, ई-कक्षा, दूरदर्शन, रेडियो व आओ विद्यालय चलें आदि महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों से छात्र-छात्राओं के ज्ञान में अभिवृद्धि में सहायता मिलेगी। शिक्षक हमेशा सुधार का वाहक रहा है। मंत्री महोदय ने जहाँ कोरोना की गाईडलाइन पालन करने के लिए आगाह किया है वहीं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की पंक्तियां भी प्रेरणादायी हैं। **'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ'** में निदेशक महोदय ने नये शिक्षा सत्र में सभी का अभिनन्दन करते हुए सत्र 2021-22 में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों (CWSN) के लिए **'समर्थ'** अभियान बहुत ही लोकप्रिय हो रहा है। निदेशक महोदय का यह प्रयास प्रशंसनीय कहा जाएगा और शिक्षा जगत में लम्बे समय तक याद रहेगा। इस अंक में महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय आम नागरिकों द्वारा पसन्द किए जा रहे हैं। माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की ओर रूझान बढ़ रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में और विद्यालय अंग्रेजी माध्यम के बनाने पर विचार करना पड़ेगा। अन्य सभी स्थायी स्तम्भ व साहित्यिक सामग्री बहुत ही रुचिकर व पठनीय लगी। शिविरा को प्रभावी व ज्ञानवर्धक एवं लोकप्रिय बनाने के लिए शिविरा टीम को बधाई!

-रामजीलाल, प्रधानाचार्य, लूनकरणसर

● माह जुलाई 21 की शिविरा बहुत प्रतीक्षा के बाद आज मिली। पूरी पढ़ी। प्रथम पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक। फिर कुछ लिखने को मन चाहा। कुछ पढ़कर सो, कुछ लिख कर सो, आज सुबह जहाँ से जगा, उससे आगे बढ़कर सो। हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त शीर्षक से आदरणीय शिक्षामंत्री गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर को याद कर अपने शिक्षा प्रेमी होने का तात्कालिक परिचय दिया वह प्रशंसनीय है। दिशाकल्प मेरा पृष्ठ में श्रीयुत निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने एक नवीन योजना **'समर्थ नायक'** विशेष योजना बना रहा है। उस ओर संकेत मिला। मिशन समर्थ का उद्देश्य विद्यार्थियों को मुख्यधारा में लाकर उनकी आवश्यकतानुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ सीखने की निरन्तरता बनाए रखने का अनुग्रह मिला। विशेष लेख मन को पसन्द आए और जिन्हें मैंने पढ़ा है वे हैं- ध्यान की शक्ति सकारात्मक सोच, विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास, जीवन की नींव उत्तम स्वास्थ्य, सीखने की परिस्थितिकी, सर्वे भवन्तु सखिनः सर्वे सन्तु निरामया, मानव जीवन में गुरु का महत्त्व, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का महत्त्व, संक्षिप्त आलेख सबसे अच्छा लगा। ओलंपिक दौड़ने वाले प्रेरणापुंज मिल्खा सिंह व बाल शिविरा की कहानी व कविता शिक्षा मेरी पसंद है। शिविरा के लेखकों को चयन हेतु हार्दिक बधाई। उनका यह नवीन प्रयास बाल शिविरा बालकों को आगे चलकर लिखना-सिखाने की प्रथम सीढ़ी है। बहुत-बहुत शुभकामनाओं के साथ।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

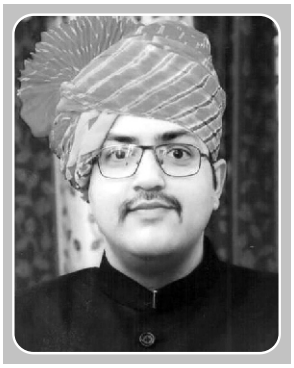

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

> "यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिला है। राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले यह हमारी प्राथमिकता है और हम सभी अपनी प्राथमिकता के प्रति सचेत हैं, प्रतिबद्ध हैं। विशेष परिस्थितियों के बावजूद हमें अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत योगदान देकर राज्य को शिक्षा का सिरमौर बनाना है।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

हमारी प्राथमिकता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

हम भारतीय अपना स्वतंत्रता दिवस 'राष्ट्रीय पर्व' के रूप में प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को गर्व और गौरव के साथ मनाते हैं। इस वर्ष 15 अगस्त को राष्ट्र, स्वतंत्रता के 74 वर्ष पूर्ण कर 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आप सभी को 75वें स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत बधाई! हार्दिक शुभकामनाएँ!!

आप सभी स्वस्थ और प्रसन्न रहते हुए अपने-अपने कर्त्तव्य का श्रेष्ठतम रूप में निर्वहन करें।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिला है। राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले यह हमारी प्राथमिकता है और हम सभी अपनी प्राथमिकता के प्रति सचेत हैं, प्रतिबद्ध हैं। विशेष परिस्थितियों के बावजूद हमें अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत योगदान देकर राज्य को शिक्षा का सिरमौर बनाना है। मैं अपने शिक्षकों, अभिभावकों, भामाशाहों और समस्त नागरिकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने-अपने क्षेत्र में विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के लिए न केवल प्रेरित करें अपितु पूर्ण सकारात्मकता के साथ अपना सहयोग प्रदान करें।

आज के विद्यार्थी हमारे देश के कल के भविष्य हैं मजबूत राष्ट्र की इस 'नींव' को 'भव्य भवन' बनाने में हम सभी नए उत्साह और उमंग के साथ कार्य करें।

उत्सव और पर्व हमारे लोक जीवन में नया उत्साह भरते हैं, हमारी सांस्कृतिक चेतना को नया प्रवाह देते हैं। श्री कृष्णजन्माष्टमी पर्व हमें कर्त्तव्य पथ पर निरन्तर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा देता है साथ ही रक्षाबंधन पर्व भाई बहिन के प्रेम को रेखांकित करता है। आप सभी को इस माह के विशेष पर्व श्री कृष्णजन्माष्टमी और रक्षाबंधन की बहुत-बहुत बधाई!

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ

(सौरभ स्वामी)

www.rajsevak.com

है गांधी का नाम जिसे इतिहास समादर देता है। जिनके पदचिह्नों को आगे बढ़कर उर पर अंकित कर देता है।

महात्मा गांधी विश्व के ऐसे महान व्यक्तियों में से है जिनके विचारों और कार्यों ने देश, समाज ही नहीं अपितु विश्व स्तर पर वैचारिक परिवर्तन का सूत्रपात किया। उन्होंने मानव जीवन के मौलिक सिद्धांतों में दृढ़ विश्वास रखते हुए समाज को नया मार्ग दिखाया। गांधीजी के आर्थिक चिंतन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य था। उन्होंने धन को मानव कल्याण का साधन मात्र माना और धन की अपेक्षा मनुष्य को अधिक महत्त्व प्रदान किया। वे अर्थशास्त्र को व्यवहारिक और नैतिक शास्त्र मानते थे। गांधीजी के अर्थशास्त्र का पहला बुनियादी सिद्धांत है–**सादा जीवन उच्च विचार**। गांधीजी सरल जीवन के पक्ष में थे। उनका मानना था कि जीवन में जितनी अधिक आवश्यकता बढ़ेगी उतनी ही अधिक लालसाएँ बढ़ती जाएगी और जीवन दुखमय हो जाएगा। उनका मानना था कि वास्तविक खुशी इच्छाओं की कमी में है, उनको बढ़ाने में नहीं। गांधीजी का मानना था कि उपभोग की मात्रा उतनी ही हो जितनी कि एक व्यक्ति उत्पादन कर सकता है। गांधीजी ने उपभोग का लक्ष्य जीवन स्तर को उठाना नहीं वरन मूल्यों को उठाने को माना। उन्होंने भारत को भोगभूमि के स्थान पर कर्मभूमि के रूप में विकसित होकर अपने खोए हुए ऐश्वर्य की प्राप्ति करने की अपेक्षा की थी। गांधीजी भारत को पहचानते थे उनका मानना था कि वास्तविक भारत गांवों में बसता है शहरों में नहीं, इसलिए उन्होंने भारत को किसानों का देश कहा। उनका विचार था कि गांव के विकास में ही देश का विकास निहित है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था जितनी सबल होगी देश उतना ही अधिक सुखी एवं सम्पन्न होगा। उनका विचार था कि प्रत्येक गांव को स्वयं में सम्पन्न एवं आत्मनिर्भर होना चाहिए। गांधीजी ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने ग्रामीणों की कला एवं औजारों में सुधार करने, कृषि की पैदावार बढ़ाने पर बल दिया। वास्तव में गांधीजी समृद्ध कृषि विकेन्द्रित उद्योग एवं लघु स्तरीय सहकारी संगठनों के साथ प्राचीन ग्रामीण समुदाय का पुनर्जागरण चाहते थे। साथ ही वह

गांधी की 150वीं जयन्ती विशेष

महात्मा गांधी का आर्थिक चिंतन

❒ विजय सिंह माली

सभी स्तरों पर लोगों की सहभागिता चाहते थे। गांधीजी ने शारीरिक श्रम वालों को ही उत्पादक माना और उन्हीं की मेहनत को सामाजिक व्रत बनाकर स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने श्रम को एक सामाजिक व्रत बताया। उनका मानना था कि जब व्यक्ति श्रम को व्रत बना लेगा तो शोषण न केवल बंद होगा वरन् समाज के वर्ग विभेद भी मिटेंगे, समाज, प्रेम और सहानुभूति से परिपूर्ण होगा। उनका मानना था कि मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं अपने श्रम एवं परिवार से होनी चाहिए। इसके लिए बाजार पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। मानव का व्यक्तित्व श्रम से ही निखरता है। श्रम ही आनंद तथा संस्कृति का सृजन करता है। उनका मानना था कि बिना शारीरिक श्रम के कोई भी भोजन का हकदार नहीं है। संपन्न को भी रोटी के लिए शारीरिक श्रम करना चाहिए। श्रमिकों की स्थिति में सुधार हेतु न्यूनतम निर्वाह मजदूरी के लिए कहा तथा बच्चों के काम को राष्ट्रीय अपकर्ष माना। कारखानों में सुरक्षा उपायों की मांग की। उन्होंने अहिंसा और सत्य पर आधारित हड़ताल का भी समर्थन किया। उनके अनुसार पूंजी श्रम की सेवक होनी चाहिए। गांधीजी ने इस बात पर बल दिया कि धनी वर्ग को अपने धन का उपयोग समाज के कल्याण हेतु करना चाहिए। वह आर्थिक समानता की स्थाई स्थिरता के माध्यम से हिंसक व रक्त क्रांति को रोकना चाहते थे। उन्होंने इसी उद्देश्य से ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया। गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का मूल तत्व है कि समस्त संपत्ति समाज की है और धनी वर्ग इस धन के प्रति स्वयं को केवल एक ट्रस्टी माने। जैसे एक ट्रस्टी ट्रस्ट की संपत्ति की देखभाल करता है उसी प्रकार धनी वर्ग जिनके पास आर्थिक उत्पादन के साधन हैं वह इनका प्रयोग इस प्रकार करे कि समाज का लाभ हो और जनकल्याण बढ़ सके। गांधीजी यांत्रिकीकरण व बड़े पैमाने में उद्योग के पक्ष में नहीं थे। उनके दृष्टिकोण से एक विकसित यांत्रिक औद्योगिक प्रणाली एवं अहिंसात्मक समाज में समन्वय स्थापित करना संभव नहीं है। वह यांत्रिकीकरण को उसी स्थिति में अच्छा मानते थे जब नियत कार्य को करने के लिए लोगों की उपलब्धता कम हो। उन्होंने ऐसे उपकरणों एवं मशीनों का स्वागत किया जो व्यक्तिगत श्रम बचाते हो और लाखों कुटीर श्रमिकों के भार को हल्का करते हो। वे मानते थे कि मशीनीकरण उत्पादन को कुछ क्षेत्रों तक केन्द्रित कर देगा। धन के असमान वितरण में उत्पन्न होने वाली बुराइयों के हल के लिए उन्होंने लघु उद्योग प्रणाली एवं हथकरघे जैसे उद्योगों को प्रोत्साहन देने की बात कही। गांधीजी ने एक अर्थशास्त्री की भांति लोक आय व व्यय के प्रभावपूर्ण उपयोग हेतु विचार दिए। उनका मानना था कि कर वसूल करते समय सरकार को कर देने की क्षमता का सिद्धांत का पालन करना चाहिए और इस प्रकार जो धन एकत्र हो उसका उपयोग लोक कल्याण के लिए करना चाहिए। सरकार द्वारा व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए तथा मितव्ययिता से काम लेना चाहिए। इस नियम का पालन करने से कर प्रणाली अधिक न्याय पूर्ण रहेगी। साधनों का अपव्यय नहीं होगा तथा जन कल्याण संभव होगा।

गांधीजी ने चरखे के माध्यम से देश की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के निदान का उपाय दिया। उनका चरखा मानवता के सामने एक मूक संदेश देता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अतिरिक्त समय में सूत कात सकता है। चरखे के लिए बहुत कम पूंजी की आवश्यकता होती है। वह संचालन में भी सरल है और बेरोजगारी की समस्या को हल करने में भी सहायक है। गाँधीजी स्वदेशी के पक्षधर थे। वे कहते थे कि स्वदेशी के विविध अर्थ में यथासंभव विदेशी वस्तुओं का परित्याग एवं गृह निर्मित सभी वस्तुओं का प्रयोग करना जिससे गृह उद्योगों का संरक्षण हो। उनके एकादशी व्रतों में स्वदेशी की महत्ता खादी में प्रकट होती है।

www.rajsevak.com

खादी के विचार का आधार है-प्रत्येक उपभोक्ता पहले उत्पादक बने। प्रत्येक गांव को आत्मनिर्भर होना चाहिए तथा स्वयं निर्मित आवश्यक वस्तुओं को दूसरे गांव में से विनिमय करना चाहिए जहाँ वह स्थानीय स्तर पर उत्पादित नहीं होती। वे मानते थे कि जो व्यक्ति स्वदेशी के अनुशासन को स्वीकार कर लेता है उसे वस्तुओं की अनुपलब्धता की स्थिति में भी अशांति एवं असुविधा नहीं होती। गांधीजी शांति एवं सह-अस्तित्व के माध्यम से विकास के पक्षधर थे। गांधी जी ने जियो और जीने दो के साथ दूसरों के लिए जियो का भी दर्शन दिया। उन्होंने एक ऐसी सहकारी समाज व्यवस्था और सामूहिक जीवन पद्धति को विकास का प्रारूप दिया जिससे प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण हो और मानव रूपी व्यक्ति के उच्चतम विकास में सहायक हो सके। गांधीजी आर्थिक शक्तियों के केन्द्रीय करण के पक्ष में नहीं थे। उनके अनुसार समाज छोटे-छोटे आत्मनिर्भर गांव में बंटा होना चाहिए जिससे मनुष्य की सभी आवश्यकता आसपास में ही पूर्ण हो जाए। गांधीजी देश में स्थाई आर्थिक, सामाजिक शांति बनाए रखने के लिए उद्योगों के विकेन्द्रीकरण को आवश्यक मानते थे। लोकतंत्र के जीवित रहने एवं अहिंसा की स्थिति की स्थापना के लिए विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। यद्यपि गांधीजी एक पेशेवर अर्थशास्त्री नही थे परन्तु विभिन्न आर्थिक समस्याओं को सुलझाने का उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण एक कुशल अर्थशास्त्री का ही था। उनके विचार केवल आदर्शवादी ही नहीं बल्कि व्यावहारिक भी थे। उन्होंने आर्थिक समस्याओं के वास्तविक स्वरूप को समझ कर उनके समयानुकूल संसाधन अनुरूप एवं व्यावहारिक समाधान देने का प्रयास किया जिससे ना केवल मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करके जीवन स्तर में सुधार कर सके वरन आध्यात्मिक मूल्यों के आर्थिक अंगीकरण द्वारा मानवता के पथ पर आने वाली भावी बाधाओं का भी उन्मूलन कर सके। आधुनिक युग में भी गांधीजी का आर्थिक दर्शन प्रासंगिक बना हुआ है।

प्रधानाचार्य
श्री धनराज बदामिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सादड़ी, पाली (राज.)
मो: 9829285914

आत्मिक - ज्ञान

भारतीय दर्शन में ज्ञान

❒ डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी

भारतीय दर्शन की उर्वर भूमि 'जीवन' एवं 'दर्शन' एक ही लक्ष्य को सामने रखकर एक ही मार्ग पर साथ-साथ चलने वाले दो पथिक है। वे दोनों ही रूप मिलकर उस परम तत्व के पूर्ण रूप का अनुभव कराते हैं। 'जीवन' एवं 'दर्शन' दोनों के चरम लक्ष्य एक ही है- आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक। इन तीन प्रकार के दुखों का आत्यंतिक नाश एवं अखंड आनंद की प्राप्ति। सभी यह मानते हैं कि इस लक्ष्य प्राप्ति के त्रिविध साधन है- श्रवण, मनन एवं निदिद्यासन। आत्मा का साक्षात्कार करना जो श्रवण, मनन (युक्तियुक्त बौद्धिक चिंतन से) तथा निदिद्यासन और समाधि अर्थात सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा परीक्षण। चार्वाक मत को छोड़कर लगभग सभी दर्शनों ने इसे न्यूनाधिक रूप में स्वीकार किया है। इन तीनों साधनों को क्रमशः 'आगम'या 'आप्तवाक्य' तर्क तथा 'साक्षात अनुभव' भी कहा जाता है।

श्रुति तथा तत्व ज्ञानियों का साग्रह और सानुरोध यह निर्देश है कि युक्तियों द्वारा जब तक किसी प्रतिपादन, आगम या आप्तवाक्य के बारे में सांगोपांग रूप से विचार कर निर्णय न कर लिया जाए तब तक किसी भी अभिमत या कथन को अंधवत् नहीं मान लेना चाहिए। तैतिरीय उपनिषद् की शिक्षावल्ली में स्नातक को उपदेश देते हुए आचार्य कहते हैं-'हे स्नातक! हमने जो जो अच्छे कर्म किए हैं, उन्हीं का तुम अनुसरण करना। मेरे निंदनीय कर्मों का अनुसरण कभी न करना।' भारतीय दर्शन की परम्परा अनुसार राग द्वेष रहित 'तर्क' को बहुत उच्च स्थान दिया गया है।

भारतीय जीवन में चिंतन की पुराकालीन परंपरा में लम्बे अर्से तक ज्ञान की उपासना करते हुए यह ऋषि आत्मदर्शी थे, तत्वदर्शी थे तथा जीवन एवं जगत की रहस्यमयता को भली-भांति समझते थे। इन ऋषियों के मुख्य दो सम्प्रदाय थे-प्रवृत्ति धर्मानुयायी और निवृत्ति धर्मानुयायी। प्रवृत्ति धर्मानुयायी कर्मकांड के प्रवर्तक एवं कर्मकांड में बताए गए मंत्रों के द्रष्टा या रचयिता थे, जबकि निवृत्ति धर्मानुयायी मोक्ष के साक्षात्कर्ता या तत् विषयक ज्ञान के प्रतिपादक थे। संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद आदि के मोक्ष विषयक ज्ञान के प्रतिपादक निवृतिधर्मा ऋषियों में अग्रगण्य रहे हैं-वाक्-आम्भूणी, जनक विदेह, अजातशत्रु तथा कोंपल आदि। इन ऋषियों के दो संप्रदाय हुए-आर्ष और अनार्ष। 'आर्ष' के अंतर्गत सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, मीमांसा तथा वेदांत एवं अनार्ष के अंतर्गत जैन, बौद्ध दर्शनों को सम्मिलित किया जाता है। आर्ष एवं अनार्ष दोनों सम्प्रदायों का एक ही चरम उद्देश्य हैं-परम पद की उपलब्धि। भारतीय दर्शन को तात्पर्य भेद से दो संप्रदायों में विभक्त किया गया है- नास्तिक तथा आस्तिक। इनमें छह 'नास्तिक' दर्शन है-चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक तथा आर्हत। इनमें छह 'आस्तिक' दर्शन हैं- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा तथा वेदान्त। वैदिक दर्शन में संहिता से लेकर उपनिषद तक अद्वैतवाद का विकास हुआ है। इस मत की दृष्टि में प्रोफेसर चन्द्रधर शर्मा ने वेदों से निम्नांकित उद्धरण प्रस्तुत किए है जो सटीक प्रतीत होते हैं-

1. उस एक सत्य का ही विद्वान अनेक रूपों में वर्णन करते हैं। (एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति ऋग्वेद 1-164-46)
2. पुरुष ही यह सब कुछ है; भूत, वर्तमान और भविष्य में जो कुछ था, है या होगा वह सब पुरुष ही है। (पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूत यच्चं भव्यम-पुरुषसूक्त ऋग्वेद 10-90 ऋग्वेद)
3. उस एक ही महान सत की उपासना ऋग्वेदी 'उक्थ' के रूप में, यजुर्वेदिय अग्नि के रूप में और सामवेदी 'महाव्रत' के रूप में किया करते हैं। (ऐतरेय आरण्यक 3-2-3-12)
4. वह प्रकाशमान अपरिमेय तत्व 'अदिति' है। अदिति ही प्रकाश है, अंतरिक्ष है, माता है, पिता है, पुत्र है, समस्त देवमंडल है, सारा मानव समुदाय है जो कुछ उत्पन्न हुआ

www.rajsevak.com

है और जो भी उत्पन्न होने वाला है वह अदिति ही है। (ऋग्वेद 1-89-10)

5. वेदों में सत को सत्ता की दृष्टि से सत्य नैतिक नियमन की दृष्टि से 'ऋत' अनुशासन या व्यवस्था तथा आनन्द की दृष्टि से 'मधु' या 'मधुमान' कहा गया है। यह पृथ्वी, आकाश, वायुमंडल, सरिताएं पर्वत, बृहस्पति और सूर्य सब मधुमय है। (ऋग्वेद-9-108-8)
6. सृष्टि के आदि काल में न सत् था न असत् न वायु थी न आकाश.... न मृत्यु थी ना अमरता, न रात थी न दिन, उस समय केवल वही एक था जो वायुरहित स्थिति में भी अपनी शक्ति से साँस ले रहा था, उसके अतिरिक्त कुछ नहीं था। यदि उस समय कोई था तो एकमात्र अव्यक्त चेतन था। उसी अव्यक्त चेतन से ज्ञान, इच्छा और क्रियाशक्तियों का प्रादुर्भाव होकर बाद में व्यापक सृष्टि का निर्माण हुआ। उस अव्यक्त चेतन को विश्वकर्मा अद्वितीय सर्वव्यापक, आत्मज्योति, परम व्योमन और परम श्रेय कहा गया है। (ऋग्वेद, नासदीय सूक्त 10-129)
7. इस 'उच्छिष्ट' (प्रपंच निषेध के बाद अवशिष्ट सत) पर नाम रूप आश्रित है; इसी पर सारा लोक आश्रित है।
8. इस पुरुष का एक पाद (अंश) यह सारा चराचर विश्व है; इसके तीन पाद इस विश्व के पार अमृत में स्थित है।

छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े तत्वों के स्वरूप का साक्षात दर्शन वेद के ऋषियों को हुआ था और वे सब अनुभव वेदों में व्यक्त रूप में वर्णित हैं। उसमें लौकिक तथा अलौकिक सभी बातें हैं। स्थूलतम तथा सूक्ष्मतम रूप से भिन्न-भिन्न तत्वों का परिचय वेद के अध्ययन से प्राप्त किया जा सकता है। उपनिषद भारतीय दर्शन की अमूल्य निधि है और उसके मूल स्रोत भी। भारतीय दर्शनों की कोई ऐसी विचारधारा नहीं है, जिसका उद्गम उपनिषद में न हो।

1. दो प्रकार की विद्याएँ होती हैं; 'परा तथा अपरा।' 'अपरा विद्या' के तहत ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद शिक्षा, कल्प तथा व्याकरण आदि शामिल किए जाते हैं। जबकि 'परा विद्या' में अक्षर ब्रह्म की

प्राप्ति।

2. उपनिषद में ज्ञान का प्रधान है; 'कर्म एवं उपासना' गौण है। कर्म एवं उपासना चित्त शुद्धि तथा चित्त एकाग्रता के लिए आवश्यक है, किन्तु ब्रह्म प्राप्ति के साधन नहीं है।
3. उपनिषदों का मुख्य विषय 'आत्मा' है। संहिता से लेकर आरण्यक पर्यंत 'ब्रह्मा' को आत्मा से भिन्न रूप में बताया गया है, किन्तु उपनिषदों में इन्हें अभिन्न माना गया है। वस्तुतः इन दोनों के अभिन्न होने से (दैवी तथा आध्यात्मिक शक्तियों) आत्मा के अतिरिक्त विश्व में अब कोई पदार्थ ही नहीं रहा। 'आत्मन' ही सर्वव्यापी है और विश्व के सभी पदार्थ इसी के गर्भ में विलीन हो जाते हैं। आत्म चैतन्य के उत्तरोत्तर उत्कृष्ट चार स्तर निर्दिष्ट हैं जो इस प्रकार हैं; तुरीय चैतन्य, सुषुप्ति चैतन्य, स्वप्न चैतन्य, जागृत चैतन्य। उपनिषदों में आत्म-चैतन्य की ये चारों अवस्थाएँ माण्डूक्योपनिषद् (217) में वर्णित हैं। जागृत अवस्था में आत्मा स्थूल पदार्थों का सुखोपभोग करती है। इसमें आत्मा को बाह्य पदार्थों से सम्पूर्ण संसार का ज्ञान होता है अतः इसे 'विश्व' कहते हैं। स्वप्नावस्था में आत्मा सूक्ष्म वस्तुओं का आनन्द लेती है यह कहा जाता है कि इस अवस्था में आत्मा शरीर के बन्धनों से मुक्त होकर इतस्ततः (यहाँ-वहाँ) भ्रमण करती है और ''तैजस'' कहलाती है। सुषुप्तावस्था में स्थूल व सूक्ष्म सभी विषयों का अभाव होता है। यह स्वप्नरहित अवस्था है यहाँ ज्ञाता-ज्ञेय का भी भेद समाप्त हो जाता है। इस अवस्था में जीव कुछ समय के लिए ब्रह्म से एक हो जाता है। अतः यह 'प्राज्ञ' अवस्था कहलाती है। चैतन्य के उत्तरोत्तर विकास की अन्तिम अवस्था 'तुरीयवस्था' है जिसमें विषय, विषयी भेद समाप्त हो जाता है। यह पूर्ण आनन्दानुभूति की अवस्था है। ओंकार इसका उपलक्षण है।
4. **ब्रह्म तत्व-** इसके अंतर्गत सृष्टि के विकास क्रम को पंचकोशों द्वारा समझाया गया है- 1. अन्नमय कोश, 2. प्राणमय कोश, 3. मनोमय कोश, 4. विज्ञानमय कोश, 5. आनंदमय कोश।

ब्रह्मा इन पंचकोशों के भी पार है। निर्विशेष, निर्गुण एवं अनिर्वचनीय ब्रह्म का नित्य और प्रखंड आनन्द के रूप में साक्षात, निर्विकल्प अनुभव किया जा सकता है। किन्तु वर्णन करते ही वह सविशेष हो जाता है। ब्रह्म को ही परमात्मा भी कहा जाता है। अविद्या के कारण बंधन में पड़कर यह 'जीवात्मा' कहलाता है। जो पूर्व जन्म के कर्मानुसार सुख एवं दुःख के भोग के लिए इस संसार में आता है और जन्म-मरण से युक्त रहता है।

अंत में यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि उपनिषद भारतीय तत्त्व विद्या के स्रोत हैं। वे अनेकता में एकता स्थापित करके जीवन की विभिन्न धाराओं को एक ही महार्णव में विलयित होने का प्रतिपादन करते हैं। उनमें समाविष्ट विचारों की उत्कृष्टता इसमें है कि उनके द्वारा समस्त मानवता के लिए समान रूप से श्रेय और प्रेय का निर्देशन किया गया है।

वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय वैशाली नगर,
अजमेर (राज.)

''जिस शिक्षा से हम जीवन निर्माण कर सकें, चरित्र गठन कर सकें, मनुष्य बन सकें और विचारों के सामंजस्य के साथ बेहतर निर्णय ले सकें, वही वास्तव में 'शिक्षा कहलाने योग्य है।''

-अज्ञात

www.rajsevak.com

राष्ट्रीय छात्रवृत्ति

नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम (NMMSS)

❒ रोहताश

परिचय– नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप (NMMS) एक केन्द्र प्रायोजित योजना है। इसकी शुरूआत मई 2008 में की गई थी। स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा इसका संचालन एवं क्रियान्वयन किया जाता है। निदेशक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (RSCERT), उदयपुर इसके राज्य नोडल अधिकारी (Liasion Officer) है। अतः राज्य स्तर पर संचालन और मॉनिटरिंग राराशैअप्रप उदयपुर द्वारा की जाती है। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मु.) इसके जिला नोडल अधिकारी है।

उद्देश्य– मई, 2008 में शुरू की गई एनएमएमएस छात्रवृत्ति का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अपनी उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को पूरा करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि कक्षा 8 के बाद स्कूलों की ड्रॉप आउट दर में सुधार हो सके। प्रत्येक वर्ष कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थी की राज्य स्तर पर चयन परीक्षा होती है। इस परीक्षा में चयन बाद कक्षा 9 से 12वीं तक के नियमित राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी NMMS छात्रवृत्ति को प्राप्त करते हैं।

छात्रवृत्ति राशि– एनएमएमएस में चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 9 से 12वीं तक नियमित अध्ययनरत रहने पर नियमानुसार 12,000 रुपये प्रति वर्ष की दर से छात्रवृत्ति मिलती है। एनएमएमएस छात्रवृत्ति के तहत छात्रवृत्ति की राशि का भुगतान स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा एकमुश्त किया जाता है। राशि को सीधे ही विद्यार्थियों के खातों में PFMS द्वारा स्थानांतरित किया जाता है। प्रत्येक राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों को छात्रवृत्ति की संख्या आवंटित की गई है।

पात्रता मापदंड

1. कक्षा 8 में राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी।
2. अभिभावक/माता-पिता की सभी स्रोतों से वार्षिक आय 1.5 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए।

कौन पात्र नहीं है?

1. जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, सैनिक स्कूल के छात्र।
2. राज्य सरकार द्वारा संचालित आवासीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र जहाँ बोर्डिंग, लॉजिंग और शिक्षा जैसी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।
3. निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र।
4. राजकीय छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी।

पात्रता व छात्रवृत्ति की निरन्तरता हेतु न्यूनतम उत्तीर्णांक

क्र.सं.	कक्षा	न्यूनतम प्राप्तांक
1	7	55
2	8	55
3	9	55
4	10	60
5	11	55

सभी कक्षाओं में SC और ST को 5 प्रतिशत की छूट है। कक्षा 7, 8, 9, 10, 11 में न्यूनतम उत्तीर्णांक से कम प्राप्तांक होने पर अपात्र होगा।

नोटः– यदि किसी कक्षा में राज्य सरकार के नियमानुसार बिना परीक्षा के प्रोन्नत किया गया है, उस कक्षा के लिए न्यूनतम प्राप्तांक में शिथिलता प्रदान की जाएगी।

NMMS परीक्षा के लिए आवेदन, स्टेट नोडल राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर द्वारा हर वर्ष पात्र विद्यार्थियों से आवेदन मांगे जाते हैं। परीक्षा के लिए संस्थाप्रधान को ऑनलाइन आवेदन शाला दर्पण के माध्यम से करना होता है। परीक्षा शुल्क यूपीआई ऐप/नेट बैंकिंग/डेबिट कार्ड/ क्रेडिट कार्ड/बैंक चालान के माध्यम से जमा करा सकते हैं। यह परीक्षा केवल एक ही बार होती है तथा छात्रवृत्ति चार वर्षों तक मिलती है।

NMMS आवेदन पत्र के लिए आवश्यक दस्तावेज–

- कक्षा 7 की अंकतालिका/प्रमाण पत्र (केवल राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत)
- जाति प्रमाण-पत्र।
- माता-पिता की आय का प्रमाण पत्र (अनिवार्य)।
- दिव्यांग प्रमाण पत्र (यदि लागू होता है)।
- राजस्थान का मूल निवास।
- आधार कार्ड।

परीक्षा पैटर्न– पात्र विद्यार्थियों के चयन के लिए राज्य स्तर पर एक चयन परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस चयन परीक्षा के प्रश्न पत्र में दो भाग होते हैं। मानसिक योग्यता परीक्षण व शैक्षिक योग्यता परीक्षण। दोनों भागों में कुल 180 प्रश्नों (प्रत्येक में 90) को हल करने के लिए 180 मिनट का समय निर्धारित है। हालांकि विशेष आवश्यकता वाले परीक्षार्थियों को टेस्ट पूरा करने के लिए 30 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाता है। इस परीक्षा में कक्षा 7 व 8 के स्तर के प्रश्न पूछे जाते हैं। मानसिक योग्यता परीक्षण में मानसिक योग्यता, हिन्दी व अंग्रेजी के प्रश्न तथा शैक्षिक योग्यता परीक्षण में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व गणित के प्रश्न पूछे जाते हैं। जिनके दिशा-निर्देश साक्षरता एवं स्कूल शिक्षा विभाग भारत सरकार की गाइडलाइन में दिए गए हैं।

परीक्षा परिणाम– चयन परीक्षा के बाद सभी आवेदकों का परिणाम घोषित किया जाता है। NMMS योजना में राजस्थान राज्य का कोटा (छात्रवृत्ति संख्या) 5471 है। जिसका जिला और श्रेणीवार वर्गीकरण किया हुआ है। अतः छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए इसकी मेरिट में आना आवश्यक है। आवेदकों को चयन परीक्षा में सामान्य वर्ग में 40 प्रतिशत एवं SC व ST श्रेणियों के आवेदकों को इस एनएमएमएस छात्रवृत्ति लाभ पाने के लिए न्यूनतम अंक 32 प्रतिशत है। दिव्यांग श्रेणी के आवेदकों को अपनी श्रेणी में 3 प्रतिशत आरक्षण देय है।

www.rajsevak.com

छात्रवृत्ति में आरक्षण निम्नानुसार है–

क्र. सं.	वर्ग	प्रतिशत	छात्रवृत्ति संख्या	दिव्यांग 3%
1	SC	16	875	26
2	ST	12	656	20
3	सामान्य	72	3940	118
		योग	5471	164

परीक्षा में चयन के बाद करणीय कार्य–

1. **छात्रवृत्ति के लिए आवेदन–** परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 9 में प्रवेश लेने के बाद नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल (NSP) पर पंजीकरण कराना होगा तथा कक्षा 12 तक हर वर्ष नवीनीकरण कराना होगा।
2. **वेरिफिकेशन–** नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल (NSP) पर विद्यार्थी की लॉगिन आई डी से पंजीकरण या नवीनीकरण करने के बाद पहले सम्बन्धित संस्थाप्रधान तत्पश्चात जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मु.) द्वारा वेरिफिकेशन किया जाता है।

नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर विद्यार्थी लॉगिन से छात्रवृत्ति की स्थिति जान सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए https:\\rajshaladarpan.nic.in/SD4/NMMS/scholaership.aspx पर विजिट करें।

सहायक प्रोफेसर
एन एम एम एस प्रकोष्ठ, आर एस सी ई आर टी,
उदयपुर (राज.)
मो:9828474829

आध्यात्म व विज्ञान

❒ डालचन्द गुप्ता

अमेरिका के अंतरिक्ष उडड्यन के संचालक डॉ. वार्न ने चन्द्र यात्रा की सफलता पर अपनी अभिव्यक्ति में 'इस महान सफलता से हमें लगता है कि मनुष्य जीवन के सम्बन्ध में हम अब तक कहीं मूर्खतापूर्ण दृष्टिकोण न लिए बैठे हो।' इन शब्दों में अपने भौतिकवादी दृष्टिकोण से फिसलने और आध्यात्मिक सत्य को स्वीकारने के स्पष्ट संकेत हैं।

विज्ञान दुःखी लोगों को, बच्चों को खिलौने देकर प्रसन्न करने के सामान है। नक्षत्रों की गतिविधि के बारे में भविष्यवाणी करता है, परमाणुओं की रचना व पदार्थों में क्या है, इसका विश्लेषण करता है। इस प्रकार मनुष्य जीवन की रक्षा का प्रयत्न करता है। प्रकृति की अनन्त क्लिष्टता को तो बताने का प्रयास करता है, परंतु उत्तेजना, क्रोध, प्रेम, लालसा आदि भाव क्या हैं, क्यों हैं, कहाँ से आते हैं, यह कुछ नहीं बताता। इसलिए वह परमात्मा के सम्बन्ध में सोचने को मजबूर करता है, इस प्रकार विज्ञान स्वयं ही ईश्वर का भाव प्रदान करता है।

आध्यात्म अनुभूति का पथ है, आत्मानुसंधान का मार्ग है आत्मचेतना के अनावरण का विज्ञान है, अपने ईश्वरीय स्वरूप के उद्घाटन का विधान है। इस रूप में यदि धार्मिक कर्मकांड व पूजा को विधि विधान व भावपूर्ण रीति से अपनाया जाए तो वे क्रमशः आध्यात्मिक अनुभूतियों की ओर ले जाते हैं, अन्यथा कोरे कर्मकांड व्यक्ति को उलझा देते हैं; धार्मिक होने के भ्रम में व्यक्ति अंधविश्वासी, अहंकारी व कट्टर बन जाता है। फलतः प्रबुद्ध व्यक्तियों की धर्म के प्रति नकारात्मक धारणा बनती है और वे इससे दूर रहना ही उचित समझते हैं। विश्व भर में किसी धर्म से अपनी पहचान न जोड़ने की प्रबुद्ध वर्ग की बढ़ती प्रवृत्ति के पीछे यही सत्य है।

कुछ बुद्धिजीवी आज भी धर्म व आध्यात्म शब्द से बिदकते हैं और इन्हें समाज के लिए घातक मानते हैं और इन्हें वैज्ञानिक सोच से हीन मानते हैं, इन्हें पोंगापंथी अंधविश्वास एवं कपोल कल्पना में जीने का नाम समझते हैं।

आध्यात्म जिसका आधार विवेकपूर्ण नैतिकता अर्थात जीवन जीने की कला है, जिसको व्यवहार में लाने पर मनुष्य मात्र आर्थिक, सामाजिक, नैतिक व संवेदना बन राष्ट्र को ऊँचा उठाने में मददगार साबित होता है।

संवेदना ही वह निर्मल स्रोत है, जहाँ से समस्त सद्गुण जन्म लेते हैं और विकसित होते हैं, जहाँ संवेदनाओं का अभाव है वहाँ सद्गुणों का सर्वथा अभाव होता है। कई बार सत्य व संवेदना को विरोधी मान लिया जाता है जो इन्हें विरोधी समझते हैं वे ही विज्ञान और आध्यात्म को विरोधी होने की बात करते हैं।

जबकि सत्य व संवेदना वास्तव में एक–दूसरे के पूरक हैं। सत्य, संवेदना को संकल्पनिष्ठ बनाता है तो वहीं दूसरी ओर संवेदना सत्य को भावनिष्ठ, जीवननिष्ठ बनाती है। सर्वांगीण विकास के लिए, सत्यान्वेषण के लिए दोनों को एक–दूसरे का परिपूरक होना आवश्यक है।

वहीं विज्ञान का आधार 'प्रयोग' है परन्तु वैज्ञानिक प्रयोग एकांगी है और इसी कारण वे सत्य से वंचित है। सत्य सदैव शाश्वत होता है, परन्तु विज्ञान के प्रयोग व सिद्धांत कालान्तर में झूठे साबित होते देखे गए हैं। उदाहरण के लिए वर्नियर कैलीपर्स से मिलीमीटर के केवल दसवें भाग तक ही मापा जा सकता है तो स्क्रूगेज से सौवें भाग तक और कोई उपकरण अधिक छोटी मोटाई माप सकता है। अतः विज्ञान में सत्य निरंतर गतिशील है, शाश्वत नहीं।

परन्तु वैज्ञानिक आध्यात्म के प्रयोगों में किसी भी निषेध व नकार का कोई स्थान नहीं है। वास्तव में वैज्ञानिक आध्यात्म के प्रयोगों की निरंतरता जीवन को सत्यान्वेषी व संवेदनशील बनाए रखती है। इसमें वैज्ञानिक प्रतिभा के साथ–साथ संत की संवेदना का सकुशल समायोजन व संतुलन भी बन पड़ता है। इसका विस्तार यदि समाज व्यापी होगा तो समाज आध्यात्म विशेष, मत विशेष व पंथ विशेष के प्रति आग्रही व हठी नहीं होगा, तब विश्व के सभी मतों व पंथों की समस्त श्रेष्ठताएं सहज ही सम्मानित होंगी और वैज्ञानिक आध्यात्म के प्रयोगों के सभी परिणाम समाज में आध्यात्मिक मानवतावाद की प्रतिष्ठा करेंगे।

युगनायक स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में आध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का युगांतकारी उद्घोष किया था, इसके बाद आइन्स्टाइन की उक्ति सही जान पड़ती है कि– 'बिना आध्यात्म के विज्ञान अंधा है और बिना विज्ञान के आध्यात्म पंगु है।' इस तरह अंधे व पंगु की जोड़ी का साथ मिलकर चलना मानव हित में है तथा आध्यात्म व विज्ञान का समन्वय अभीष्ट भी है। आध्यात्म विज्ञान सम्मत बने व विज्ञान आध्यात्म परक।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बागीदौरा,
बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9413017577

www.rajsevak.com

शारीरिक शिक्षा

प्राणायाम की महत्ता

❒ देवकरण सिंह

यूं तो योग सदियों से चला आ रहा है मगर वह योग हिमालय जैसी वादियों तक ही सीमित था। योग को आधुनिक भारतीय योगाचार्यों ने जो विद्युत, चुंबकीय गति प्रदान की है उससे करोड़ों की संख्या में लोगों को कैंसर, अस्थमा, डायबिटीज, सोरायसिस, लीकोडरमा, हृदय रोग जैसी असाध्य बीमारियों से छुटकारा मिल रहा है, यह काम प्रशंसनीय है। मानव शरीर का प्राणायाम से अटूट संबंध जन्म के समय से ही प्रारंभ हो जाता है। बच्चा जब जन्म लेता है वह चीखता है, गहरी श्वास लेकर सुबकता है। यही उसके प्राणायाम की विधि है। वही बच्चा स्वस्थ रहता है जो गर्भ के समय या जन्म के समय प्राण प्रक्रिया से ठीक से गुजरता है। बच्चे की प्राण प्रक्रिया में कमी से रोग दोष उत्पन्न हो जाते हैं वह रोगी बन जाता है प्राणायाम की इस कमी की पूर्ति प्राणायाम करके ही की जा सकती है।

श्वसन से संबंधित रोग, फेफड़े हृदय एवं मस्तिष्क से संबंधित रोग दोष निवारण हेतु भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम व नाड़ी शोधन प्राणायाम की सलाह दी है, प्राणायाम करने से यह रोग ठीक होने का कारण है-जब हम लंबी श्वास ग्रहण करते हैं तो वायु में उपस्थित ऑक्सीजन श्वास नलिका द्वारा वायु कोशों में पहुँचती है तथा यहाँ से रुधिर के द्वारा शरीर के विभिन्न भागों तक पहुँचती है। वायु में 21% ऑक्सीजन, 78% नाइट्रोजन, 0.4% कार्बन डाई ऑक्साइड और 0.6% अन्य से होती हैं।

अब प्रश्न ये उठता है कि श्वास के साथ ली गई वायु में से रुधिर के साथ ऑक्सीजन ही क्यों जाती है अन्य गैस क्यों नहीं जाती? क्योंकि ऑक्सीजन जल में बहुत कम मात्रा में घुलनशील है एवं रक्त में पाए जाने वाले हीमोग्लोबिन नामक लोहे युक्त यौगिक में अधिक घुलनशील होती है। अतः जिस व्यक्ति के रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा अधिक होती है वह व्यक्ति श्वसन क्रिया में अधिक ऑक्सीजन ग्रहण कर सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति के 100

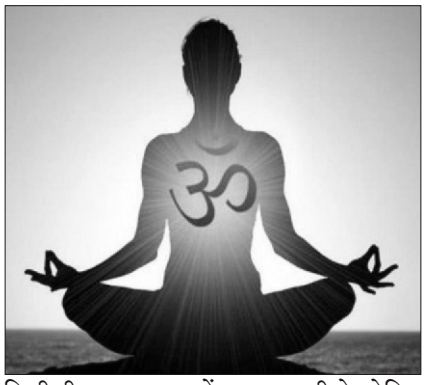

मिलीलीटर शुद्ध रक्त में 15 ग्राम हीमोग्लोबिन पाया जाता है इसी कारण कम हीमोग्लोबिन वाले व्यक्ति की श्वसन क्रिया के द्वारा कम ऑक्सीजन का परिवहन होता है।

जीवित प्राणियों को विभिन्न क्रियाएँ करने हेतु ऊर्जा की आवश्यकता होती है। उन्हें ऊर्जा की प्राप्ति भोजन के दहन से होती है। कोशिकाओं में भोजन के दहन के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। प्राणियों द्वारा ऑक्सीजन वातावरण से ग्रहण की जाती है जिसे श्वसन क्रिया कहते हैं और योग की भाषा में इसे पूरक कहा जाता है। पूरक में प्राप्त ऑक्सीजन रक्त के साथ मिलकर ऑक्सीजनित हीमोग्लोबिन बन जाता है यह ऑक्सीजन युक्त हीमोग्लोबिन पचित भोजन के अवयवों के संपर्क में आकर ऑक्सीकरण की क्रिया द्वारा अणुओं के रूप में ऊर्जा मुक्त करता है और भोजन के दहन से प्राप्त अपशिष्ट पदार्थ कार्बन डाई ऑक्साइड गैस प्रश्वास जिसे योग की भाषा में रेचन कहते हैं के द्वारा निष्कासित होती है।

अब प्रश्न ये उठता है कि प्रश्वास में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस ही बाहर क्यों निकलती है? क्योंकि रक्त का द्रव रूप जिसे प्लाज्मा कहते हैं, प्लाज्मा में कार्बन डाई ऑक्साइड घुलनशील है अतः भोजन के दहन से प्राप्त कार्बन डाई ऑक्साइड जो अपशिष्ट पदार्थ के रूप में प्राप्त होती है जो कोशिकाओं से रुधिर में विसरित हो जाती है। क्योंकि कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का ऑक्सीजन गैस की अपेक्षा 20 गुना तेजी से विसरण होता है। इसलिए प्रश्वास के द्वारा कार्बन डाई ऑक्साइड गैस ही बाहर निकलती है।

कार्बन डाई ऑक्साइड गैस युक्त रक्त को अशुद्ध रक्त कहते हैं। शिराओं के द्वारा यह अशुद्ध रक्त शरीर के विभिन्न भागों से हृदय तक पहुँचता है। हृदय से यह अशुद्ध रक्त धमनियों के द्वारा फेफड़ों तक पहुँचता है। कार्बन डाई ऑक्साइड की विसरण क्षमता ऑक्सीजन से अधिक होने के कारण फुफुसीय रक्त से कार्बन डाई ऑक्साइड प्रश्वास के साथ तेजी से बाहर आती है। इस प्रकार लंबे श्वास लेने पर ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन अंदर प्रवेश करती है तथा लंबा प्रश्वास करने पर ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड बाहर निकलती है।

भोजन का पाचन होकर ऊर्जा का निर्माण होता है; रक्त का शुद्धिकरण होता है साथ ही साथ हृदय की पेशियों में फैलने व सिकुड़ने का गुण होता है जिसे हृदय की धड़कन कहते हैं। हृदय की धड़कन के कारण से शरीर में रक्त परिसंचरण होता है। एक स्वस्थ व्यक्ति का हृदय 1 मिनट में 72 बार धड़कता है। शरीर में रक्त परिसंचरण सही बना रहे इसके लिए आवश्यक है-

1. नियमित व्यायाम
2. वसा युक्त पदार्थों का कम सेवन
3. पौष्टिक भोजन करना
4. तनाव मुक्त रहना
5. उम्र के अनुसार वजन संतुलित रखना।

इस प्रकार केवल भस्त्रिका और अनुलोम विलोम प्राणायाम में लंबे श्वास लेना तथा लंबे श्वास छोड़ने से फेफड़े, हृदय, रक्त परिसंचरण व मस्तिष्क से संबंधित रोग, दमा, नजला, जुकाम, अनिद्रा, तनाव, उच्च रक्तचाप जैसे रोग दूर होते हैं। प्राणायाम से शरीर को अधिक ऑक्सीजन मिलती है जिससे रक्त में उपस्थित श्वेत रक्त कणिकाएँ जो रोग प्रतिरोधक का कार्य करती हैं, पुष्ट होती हैं जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती

www.rajsevak.com

है।

क्या कारण है कि पशुओं में आयोडीन युक्त नमक की आवश्यकता नहीं होती जबकि मनुष्य आयोडीन युक्त नमक का उपयोग करते हैं? क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति एवं पशुओं में तो आवश्यक तत्वों की पूर्ति उनके भोजन से ही हो जाती है। परंतु अस्वस्थ व्यक्ति अपने भोजन से आवश्यक तत्वों की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। इनका पाचन तंत्र ठीक नहीं होने की वजह से इनके शरीर में लोहा, जिंक, सोडियम, कैल्शियम, आयोडीन आदि तत्वों की कमी हो जाती है, जिसकी पूर्ति के लिए उन्हें टेबलेट या इंजेक्शन के रूप में यह तत्व दिए जाते हैं।

यदि अस्वस्थ व्यक्ति को या जिसका पाचन तंत्र ठीक से काम नहीं करता है, को नियमित रूप से कपालभाति प्राणायाम करवाया जाए तो उसका पाचन तंत्र बलिष्ट बनेगा उसने जो भोजन लिया है उसी भोजन में से आवश्यक तत्व शरीर को प्राप्त होंगे। प्राणायाम से पंचतत्व- पृथ्वी, आकाश, वायु, अग्नि एवं जल जिनसे शरीर बना है सक्रिय होते हैं।

इसी कारण नियमित प्राणायाम करने से इन तत्वों के मूल गुण व्यक्ति में परिलक्षित होने लगते हैं। जैसे पृथ्वी जैसा धैर्य, आकाश जैसा विशाल हृदय, वायु जैसा वेग, अग्नि जैसा तेज एवं जल जैसी शीतलता आदि गुणों से ओतप्रोत व्यक्ति साक्षात ब्रह्म रूप में होता है।

प्राणायाम नहीं करने से पंचतत्व प्रदूषित हो जाते हैं। पंचतत्वों में उत्पन्न इन्हीं दोषों के कारण व्यक्ति में शारीरिक एवं मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिन्हें नियमित प्राणायाम करके रोग मुक्त हुआ जा सकता है। इस प्रकार प्राणायाम में ही शरीर की सारी शक्ति विद्यमान है; यह शरीर प्राणों पर ही टिका है शरीर से प्राण निकाल दिए जाए तो शरीर मिट्टी का लोथड़ा रह जाता है।

अतः प्राण ब्रह्म है, प्राण औषध है, प्राण सखा है, प्राण भ्राता है, प्राण पिता है, प्राण गुरु है, प्राण आचार्य है। हम चित्त, चेतना को गुरु के साथ आत्मसात करेंगे, योग को आत्मसात करेंगे।

प्रधानाचार्य एवं योग प्रशिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तारानगर,
चूरू (राज.)
मो: 7976041941

नवाचार

शिक्षण में नवाचार: स्माइल-3

❒ **विमलेश चन्द्र**

भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य राजस्थान पिछले साल से ही कोरोना महामारी के कारण एक कठिन दौर से गुजर रहा है। इस महामारी का प्रतिकूल प्रभाव प्रदेश की अर्थव्यवस्था उद्योग-धंधों एवं आम आदमी पर पड़ा। शैक्षिक ढांचा भी इससे बुरी तरह प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। लम्बे समय से विद्यालय विद्यार्थियों के लिए बंद चल रहे हैं जिसके कारण शिक्षक व शिष्य के मध्य दूरी बढ़ती जा रही है। अभी कोरोना की तीसरी लहर आने की सम्भावना है एवं उसका सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा। ऐसी परिस्थितियों में सरकार फिलहाल स्कूल खोलकर किसी भी प्रकार की रिस्क नहीं लेना चाहती। सरकार कोरोना काल में भी बच्चों के भविष्य के साथ किसी प्रकार का खिलवाड़ नहीं करना चाहती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आज कोरोना महामारी के कारण जो परिस्थतियाँ उत्पन्न हुई हैं, उनसे हमें हार नहीं माननी है। आत्मविश्वास एवं दृढ इच्छा-शक्ति के बलबूते पर हम इन परिस्थतियों का सामना कर सकते हैं। अब हमें कोराना संग ही रहना है, अत: सरकार द्वारा जारी प्रोटोकॉल की पूर्णतया पालना की जानी चाहिए।

कोरोना महामारी से उत्पन्न परिस्थतियों में चूँकि विद्यालय खोल पाना सम्भव नहीं है, अत: बच्चों को विद्यालय से जोड़े रखने एवं शैक्षिक गैप कम करने हेतु तथा कोविड-19 की दूसरी लहर से बेपटरी हुई शिक्षा व्यवस्था को वापस ट्रैक पर लाने के लिए शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा कई नवाचार किए गए हैं। इन नवाचारों की विश्व पटल पर भी प्रशंसा हुई है। इन्हीं नवाचारों का नतीजा है कि सरकारी विद्यालयों के नामांकन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है एवं एक गरीब व्यक्ति के बच्चे को भी शिक्षा का संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुआ है। जी हाँ, ये सच है एवं ऐसा ही एक नवाचार है- Smile education programme. आइए जानते हैं Smile शैक्षिक कार्यक्रम के बारे में।

- **क्या है Smile –** Smile एक ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रम है, जहाँ Smile का विस्तारित रूप है - **Social Media Interface For Learning Engagement.** वर्तमान शैक्षिक सत्र 2021-22 में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य हेतु शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा Smile-3.0 नवाचारी कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
- **Smile-3.0 नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम का प्रारम्भ एवं उद्देश्य-** ऑनलाइन नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम Smile-3.0 का प्रारम्भ शिक्षा विभाग द्वारा 21 जून 2021 से किया गया है जिससे राजस्थान के 1.5 करोड़ से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं तथा इसका मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों में अधिगम सक्रियता बनाए रखना है। शिक्षा विभाग के इस नवाचारी कार्यक्रम में आओ घर से सीखें, स्माइल-3.0, शिक्षावाणी, शिक्षादर्शन, व्हाट्सएप क्विज एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समर्थ अभियान शामिल हैं।
- **Smile-3.0 नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम के तहत किए जा रहे कार्य-** स्माइल-3.0 में गत सत्र 2020-21 के समान ही विद्यालयों द्वारा दैनिक रूप से प्राप्त होने वाली शैक्षणिक सामग्री के लिंक को विद्यार्थियों तक कक्षावार बनाए गए व्हाट्सएप ग्रुपों के माध्यम से साझा करने के साथ ही हमारे शिक्षकगण निम्न कार्य कर शिक्षा की ज्योत जगा रहे हैं।
- **प्रत्येक विद्यार्थी की पोर्टफोलियो फाइल तैयार करना-** शिक्षक हैडटीचर के मार्गदर्शन में स्माइल-3.0 कार्यक्रम के तहत प्रत्येक विद्यार्थी की पोर्टफोलियो फाइल तैयार कर उसमें विद्यार्थी के शैक्षणिक कार्य एवं शैक्षणिक कार्यों से सम्बन्धित अन्य कार्यों व उनके परिणामों को एकत्र कर उसमें

www.rajsevak.com

उनका संकलन करते हैं ताकि पाठ्यक्रम के अधिगम का स्तर, विद्यार्थी के सीखने की प्रगति और शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन किया जा सके। पोर्टफोलियो जहाँ विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों को लक्षित करने व उद्देश्यों को हासिल करने में मदद करता है वहीं शिक्षकों को विद्यार्थी के शैक्षिक कार्य के संकलन, कार्य की निरंतर समीक्षा और क्रमिक मूल्यांकन से उनके सीखने के स्तर की सटीक एवं स्पष्ट जानकारी भी देता है।

- **स्माइल कॉलिंग–** प्रत्येक शिक्षक स्माइल-3.0 कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन कम से कम 5 विद्यार्थियों से फोन द्वारा सम्पर्क कर उनकी अध्ययन से सम्बन्धित समस्याओं का निस्तारण करता है एवं दिनांक वार उनका रिकॉर्ड शिक्षक दैनन्दिनी में संधारित करता है। इसके अलावा अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ भी स्माइल कॉलिंग के दौरान विद्यार्थियों के साथ साझा की जाती हैं। स्माइल कॉलिंग शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य एक महत्त्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है।
- **आओ घर से सीखें–** जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास फोन नहीं है, हमारे शिक्षकगण कोरोना काल में भी उनके घर-घर जाकर आओ घर से सीखे कार्यक्रम के तहत उन्हें विभागीय नियमानुसार गृहकार्य देते हैं, उसकी जाँच करते हैं एवं उसका संकलन करते हैं। घर पर ही उनसे कार्यपत्रक हल करवाया जाता है एवं साथ ही उन्हें शनिवारीय क्विज प्रश्न प्रिंट पेपर के रूप उपलब्ध करवाया जाता है।
- **व्हाट्सएप क्विज–** प्रत्येक शनिवार को स्माइल-3.0 कार्यक्रम के तहत विभाग द्वारा व्हाट्सएप क्विज लिंक प्राप्त होता है। हमारे शिक्षक इस क्विज लिंक को सम्बन्धित कक्षा ग्रुप में ऑनलाइन शेयर कर विद्यार्थियों को हल करने हेतु प्रेरित करते हैं एवं क्विज हल करने में आई समस्याओं का समाधान करते हैं। विद्यार्थी द्वारा हल की गयी क्विज का सम्बन्धित विषयाध्यापक के पास पोर्टफोलियो में रिकॉर्ड रहेगा। विभाग द्वारा अगस्त के अंत तक 10 से 12 क्विज पूर्ण करवाई जाएगी तथा विद्यार्थी की 7 सबसे अधिक अंक वाली क्विज का आकलन किया जाएगा, जो कि प्रथम परख होगा।
- **शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन –** राज्य के 1.5 करोड़ से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़ने हेतु आओ घर से सीखे कार्यक्रम के तहत उन्हें घर पर ही शिक्षण उपलब्ध करवाने हेतु विभाग द्वारा शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। शिक्षावाणी का प्रसारण रेडियो पर प्रात: 11:00 बजे से 11:55 बजे तक आकाशवाणी के जयपुर, अजमेर, झुंझुनू, भरतपुर, धौलपुर, बारां, बूंदी, जोधपुर, जालौर, पाली, सिरोही, उदयपुर, राजसमन्द, बीकानेर, चूरू, कोटा, बांसवाड़ा, झालावाड़, डूंगरपुर व चौहटन आदि विभिन्न स्टेशनों पर किया जा रहा है वहीं शिक्षादर्शन कार्यक्रम का प्रसारण डिटीएच के चैनल नम्बर 2204, डिश टीवी के चैनल नम्बर 245, आइपीटीवी के चैनल नम्बर 195, एयरटेल टीवी के चैनल नम्बर 404, सिटी केबल के चैनल नम्बर 577, वीडियोकॉन के चैनल नम्बर 868, रिलायन्स टीवी के चैनल नम्बर 389, सन टीवी के चैनल नम्बर 716 तथा टाटा स्काई के चैनल नम्बर 1190 पर किया जाता है। शिक्षादर्शन कार्यक्रम का प्रसारण समय कक्षा 1 से 8 हेतु दोपहर 3:00 बजे से 4:15 बजे तक व कक्षा 9 से 12 हेतु दोपहर 12:30 से 2:30 बजे तक है। शिक्षकों से विनम्र आग्रह है कि वे कक्षाव्हाट्स ग्रुप में शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन की साप्ताहिक समय- सारिणी विद्यार्थियों के साथ साझा करें एवं उन्हें शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन कार्यक्रम से लाभान्वित होने हेतु प्रेरित करें। शिक्षक स्वयं को तथा अभिभावक व विद्यार्थियों को शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन देखने के बाद विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए फीडबैक लिंक को प्रतिदिन अवश्य भरना चाहिए।
- **पूर्व निर्धारित गृहकार्य–** स्माइल-3.0 में गत सत्र की भांति कक्षाव्हाट्स ग्रुप में विभाग द्वारा जारी पूर्व निर्धारित गृहकार्य विद्यार्थियों के साथ साझा किया जाता है। कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों को सप्ताह में एक बार डिजिटल रूप से प्रत्येक सोमवार को होमवर्क वर्कशीट साझा की जा रही है, वहीं कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थियों को सप्ताह में दो बार डिजिटल रूप से प्रत्येक सोमवार व बुधवार को होमवर्क वर्कशीट साझा की जा रही है। जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षक घर विजिट के समय वर्कशीट प्रिन्ट कर उपलब्ध करवाते हैं एवं अगली विजिट के समय उन्हें एकत्र कर उनकी जाँच कर पोर्टफोलियो फाइल में संधारित करते हैं। डिजिटल पहुँच वाले विद्यार्थियों की वर्कशीट को व्हाट्सग्रुप से एकत्र कर उनकी जाँच कर पोर्टफोलियो फाइल में संधारित करते हैं।
- **स्टूडेंट–शिक्षक मैपिंग –** शिक्षक द्वारा अपनी शालादर्पण स्टाफ विन्डो से लॉगिन कर स्माइल-3.0 विकल्प के चयन पश्चात स्टूडेंट- शिक्षक मैपिंग की जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को गृहकार्य भेजने का माध्यम, जाँच का माध्यम एवं संकलन का माध्यम आदि प्रविष्टियों की पूर्ति स्टूडेंट-शिक्षक मैपिंग के तहत शिक्षक द्वारा शालादर्पण स्टाफ विन्डो से लॉगिन कर की जाती है। इसके अलावा हर सप्ताह साप्ताहिक गृहकार्य जाँच विवरण एवं विद्यार्थी से फोन द्वारा सम्पर्क करने की दिनांक की प्रविष्टि भी शालादर्पण स्टाफ विन्डो से लॉगिन कर की जाती है।
- **वाकई में शिक्षक का स्थान** समाज में सबसे ऊपर है एवं होना भी चाहिए। वो शिक्षक ही है जो स्वयं मोमबत्ती की तरह जलकर दूसरों के जीवन में उजाला ला रहे हैं। कोरोना काल में भी डिजिटल एवं नॉन डिजिटल रूप से शिक्षण कार्य करवा रहे हैं। आज शिक्षा विभाग के अभिनव नवाचार- स्माइल-3.0 के तहत शिक्षक घर-घर जाकर शिक्षण करवा रहे हैं एवं इसके अलावा विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को राज्य- सरकार की योजनाओं से अवगत करवाने के साथ ही कोरोना संक्रमण रोकने के उपाय भी बता रहे हैं। शिक्षा विभाग के समस्त कार्मिकों को नए शैक्षणिक सत्र 2021-22 हेतु मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ !

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़, चूरू (राज.)
मो: 9460489940

www.rajsevak.com

भारतीय गौरव

हमारे प्राचीन शिक्षा केन्द्र

❒ रामावतार मित्तल

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन पृथिव्या सर्व मानवाः।।

प्राचीन काल में पूरी पृथ्वी से लोग अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करने भारत आया करते थे। भले ही यह बात आज स्वप्न जैसी प्रतीत होती हो लेकिन आज से 3500 वर्ष पहले से लेकर 1000 वर्ष पहले तक पूरे विश्व से लोग अध्ययन करने या अपने ज्ञान और विद्वत्ता को प्रमाणित करने के लिए भारत आया करते थे। बारहवीं शताब्दी तक भारत विश्व का सर्वोत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र था। उस समय पूरे यूरोप में अंधकार का युग चल रहा था। शिक्षा चर्च के अन्दर सिमटी हुई थी। शेष पूरा विश्व शिक्षा के लिए भारत की ओर देखता था। सुदूर उत्तर में मंगोलिया से लेकर पूर्व में चीन और जापान तक और पश्चिम में पूरे मध्य पूर्व तथा अफ्रीका तक भारत के शिक्षा केन्द्रों की ख्याति फैली हुई थी। उस समय भारत में अनेक विश्वविद्यालय थे जिनका परिचय क्रमशः निम्नानुसार है-

1. नालंदा विश्वविद्यालय- यह विश्वविद्यालय प्राचीन मगध राज्य (वर्तमान बिहार) में राजगीर के तप्त कुंडों से 7 मील उत्तर की ओर वर्तमान बडगाँव के पास स्थित था। गुप्त वंश के शासक कुमारगुप्त प्रथम के समय 450 ई. में इसको विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ था। यहाँ भगवान बुद्ध ने भी कुछ समय निवास किया था। पाश्चात्य इतिहासकारों के अनुसार बुद्ध का काल 2500 वर्ष पूर्व का है परन्तु पुराणों के अनुसार बुद्ध 3500 वर्ष पूर्व हुए।

परिसर- 14 एकड़ में फैला यह महा विहार एक ऊँचे प्राकार से परिवेष्ठित उत्तुंग द्वारों से सुशोभित 6 विहारों का समूह था। इसके विहारों के शिखर बादलों को छूते थे। इसके परिसर में 10 मंदिर और 6 बौद्ध मठ थे। यह पूरी तरह आवासीय था। यहाँ 1,500 आचार्य व 10,000 विद्यार्थी थे। मुख्य महाविद्यालय में 7 सभागार व 300 कक्षाएँ थी। यह एक मील लम्बा व आधा मील चौड़ा था। पुजारियों के भवन चार मंजिला थे जिसके स्तंभ लाल मोती के रंग के थे और छत को ऐसी टाइलों से सजाया गया था जिनसे प्रकाश कई रंगों में प्रतिबिंबित होता था। पुरातात्विक खुदाई में 3 मठ और एक मंदिर निकला था। इन भवनों की दीवारें साढ़े 6 फीट से लेकर साढ़े 7 फुट तक मोटी थी। प्रत्येक कमरे में 2 आले बने हुए थे।

शैक्षणिक वातावरण- यहाँ पहली से लेकर परा स्नातक तक पढ़ाई होती थी। पहली के लिए 6 वर्ष की आयु में व उच्च शिक्षा के लिए 20 वर्ष की आयु में प्रवेश दिया जाता था। उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए कड़ी परीक्षा होती थी। प्रवेश के लिए व्याकरण हेतु विद्या (न्याय) और अभिधर्म कोश का ज्ञान आवश्यक था। हेनसांग के वर्णन से पता चलता है कि प्रवेश परीक्षा के लिए आने वाले विद्यार्थियों में केवल 20% ही उत्तीर्ण होते थे। सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों का संघ बना हुआ था जिसमें सभी स्तर के शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए नियमों का निर्धारण किया करता था। सभी संस्थान कुछ सीमा तक स्वाधीन तो कुछ सीमा तक एक दूसरे से सम्बद्ध भी हुआ करते थे। इस सीमा रेखा का निर्धारण संघ ही किया करता था। विद्यार्थियों के लिए नैतिकता का उच्चतम मापदंड स्थापित किया जाता था। शिक्षा उनके लिए तपस्या का विषय था न कि राजनीति का।

पाठ्यक्रम- अलेक्जेंडर वर्जिन के अनुसार तिब्बती परम्परानुसार 4 दार्शनिक विचारधाराओं का अध्ययन कराया जाता था। सर्वास्तिवाद वैभाषिकी, सर्वास्तिवाद सूत्रान्तिका, माध्यमिका-नागार्जुन का महायान दर्शन, सीतामात्र-आसंग व वसुबन्धु का महायान दर्शन। प्रारंभ में यहाँ बौद्ध मत का बोलबाला था किन्तु बाद में वैदिक मत को भी उतनी ही प्रतिष्ठा दी जाने लगी। 4 वेद व उसके 6 अंगों की शिक्षा दी जाती थी। योग, सांख्य, संस्कृत व्याकरण, न्याय और दर्शन की भी पूरी शिक्षा उपलब्ध थी। तंत्र में रसायन विद्या और यंत्र विद्या भी शामिल थी। वैशेषिक का परमाणुवाद व आयुर्वेद भी पढ़ाए जाते थे। क्षत्रियों को धनुर्विद्या भी पढ़ाई जाती थी। खगोलशास्त्र और ज्योतिष भी प्रमुख विषय थे। यहाँ विशेष वेधशालायें व जलघड़ी भी बनाई गई थी। यहाँ से बताया गया समय पूरे मगध साम्राज्य में मान्य होता था। बौद्ध और वैदिक सभी विद्यार्थियों के लिए संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य था। महायानों का शून्यवाद और विज्ञानवाद अनिवार्य विषय थे। मंजुश्रीमित्र के समय यहाँ ज्ञान के सभी क्षेत्रों का अध्ययन कराया जाता था। बौद्ध धर्म के 18 मतों के अतिरिक्त न्याय चिकित्सा योग वेद और सांख्य दर्शन का भी अध्ययन कराया जाता था। यहाँ के कुलपति आचार्य शीलभद्र ने सभी ग्रंथों का पारायण किया था। वे अपने योगशास्त्रीय ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। यहाँ के आचार्य ज्ञानचंद, जिनमित्र व प्रभामित्र क्रमशः आदर्श चरित्र, वार्तालाप व तार्किकता के लिए प्रसिद्ध थे। हर्ष के समय आचार्य धर्मकीर्ति बहुत प्रसिद्ध थे। यहाँ के आचार्य आगमों व कलाओं में निष्णात थे। प्रबंध के लिए 2 समिति होती थी-शैक्षिक समिति पाठ्यक्रम और व्याख्यानों का आयोजन करती थी और प्रशासनिक समिति अन्य व्यवस्था देखती थी। हर्षवर्धन के समय में चीनी यात्री हेनसांग ने यहाँ अध्ययन किया। इसके बाद इत्सिंग ने यहाँ 10 वर्ष अध्ययन किया और लौटते समय अपने साथ संस्कृत के 400 ग्रन्थ ले गया। 7वीं सदी में तिब्बत के राजा गम्पो ने अपने मंत्री थानवी को शिक्षा ग्रहण करने यहाँ भेजा। यहाँ के अंतिम प्रशासक शाक्यश्रीभद्र थे जो 1204 में तिब्बत चले गए थे।

पुस्तकालय- यहाँ के पुस्तकालय को धर्मगंज (सत्य का कोष) कहा जाता था। यह हस्तलिखित पांडुलिपियों के लिए प्रसिद्ध था। इसमें 9 मंजिल ऊँचे 3 विशाल भवन थे- रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक इनमें एक करोड़ से अधिक पुस्तकें थी। रत्नसागर में प्रज्ञापारमिता सूत्रों तथा तांत्रिक ग्रंथों का संकलन था।

अर्थव्यवस्था- यह प्रारंभ में समाज की

www.rajsevak.com

सहायता पर ही चलता था। गुप्तकाल में इसे राजकीय सहायता भी मिलती थी। कुमारगुप्त प्रथम, नरसिंह गुप्त, बालादित्य तथा बुद्धगुप्त ने इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जावा, सुमात्रा, श्रीलंका, तिब्बत और भूटान आदि देशों के राजा भी इसे दान दिया करते थे। विद्यार्थियों के लिए संयुक्त भोजनालय की व्यवस्था थी भिक्षावृत्ति केवल शिक्षा के लिए हुआ करती थी जिससे वे विनम्र बनें और अहंकार से दूर रहें। यहाँ कभी राजकीय हस्तक्षेप नहीं रहा। यहाँ राजाओं के पुत्र साधारण विद्यार्थी की तरह रहकर अध्ययन करते थे। इसके सैकड़ों उदाहरण हैं कई प्रसंग ऐसे भी हैं जब राजकुमारों ने यहाँ अध्ययन करने के बाद राज्य त्याग दिया और यहीं पर अध्यापन किया। ऐसे राजकुमार कुछ यहाँ कुलपति भी बने।

2. विक्रमशिला विश्वविद्यालय– नालंदा के बाद मगध का दूसरा बड़ा शिक्षा केन्द्र पालवंश के शासक धर्मपाल द्वारा स्थापित विक्रमशिला विश्वविद्यालय था। यह वर्तमान बिहार के भागलपुर जिले के आंटीचक गाँव में स्थित था। इसे पालवंशी शासकों का संरक्षण प्राप्त था इसके विशाल परिसर में 6 महाविद्यालय थे। यहाँ प्रत्येक महाविद्यालय में आचार्यों की संख्या 108 होती थी। यहाँ बौद्ध धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्वज्ञान और व्याकरण आदि विषयों की दीक्षा दी जाती थी। सभी धर्मों में तंत्रवाद का अध्ययन यहाँ का लोकप्रिय विषय था। बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय के लिए इसकी विशेष प्रतिष्ठा थी।

द्वारपंडित– यहाँ महाविद्यालयों से सम्बद्ध आचार्यों को द्वारपंडित कहा जाता था। तिब्बती लेखक तारानाथ के अनुसार उसके समय प्रथम केन्द्रीय द्वार का पंडित रत्नवृज, द्वितीय केन्द्रीय द्वार का पंडित ज्ञानश्री मिश्र, पूर्वीद्वार का पंडित रत्नाकर शांति, पश्चिमी द्वार का पंडित वागीश्वर कीर्ति और उत्तरी द्वार का पंडित नारोपन्त था। यहाँ के अनेक विद्वानों ने विभिन्न ग्रंथों की रचना की जिनमें रक्षित, विरोचन, दीपंकर और ज्ञानपाद प्रमुख थे।

3. उदयन्तपुर विश्वविद्यालय– यह विश्वविद्यालय हिरन्य प्रभात पर्वत और पंचानन नदी के तट पर स्थित था। वर्तमान में यह नालंदा जिले का मुख्यालय है और बिहार शरीफ के नाम से जाना जाता है। यह मगध का तीसरा विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना पाल वंश के शासक धर्मपाल ने 8 वीं सदी में की थी। प्रभाकर यहाँ का प्रसिद्ध विद्वान था। इस विश्वविद्यालय ने बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार किया तथा तिब्बत में बौद्ध विहारों के निर्माण को प्रेरणा दी।

4. तक्षशिला विश्वविद्यालय– यह पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के रावलपिंडी जिले की एक तहसील है। इस नगर की स्थापना मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भाई भरत ने की थी और इसका प्रशासन उसके पुत्र तक्ष को सौंपा गया था। अतः इसका नाम तक्षशिला पड़ गया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना ईसा से 600 वर्ष पहले हुई थी। धोनसुख जातक के अनुसार सम्पूर्ण देश से ब्राह्मण और क्षत्रिय यहाँ पढ़ने के लिए आते थे। यहाँ शिक्षा प्रारंभ करने की आयु 16 वर्ष निधारित थी। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। लेखन में ब्राह्मी और खरोष्ठी दोनों लिपियों का प्रयोग होता था। यहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उपाधि प्राप्ति के बजाय स्वांतः सुख था। यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी शिल्प व्यवसाय आदि का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा देश देशांतर के रीति रिवाजों का अध्ययन करने के लिए भ्रमण भी किया करते थे। यहाँ पर आचार्यों के अनेक स्वतंत्र विद्यापीठ थे। यहाँ ऐसे भी आचार्य थे जिन्हें राज्य की ओर से भूमि प्रदान की जाती थी। वे उसकी आय से विद्यापीठ चलाते थे जिसे ब्रह्मदेय कहा जाता था। कौटिल्य ने ऐसे आचार्यों का भी उल्लेख किया जिन्हें राज्य की ओर से वेतन दिया जाता था जिसे पूजा वेतन कहा जाता था।

विद्यार्थी– यहाँ विद्यार्थी आचार्यों के घर पर रहकर ही शिक्षा प्राप्त करते थे। ये तीन प्रकार के होते थे–आचार्य भागदायिक–वे विद्यार्थी जो आचार्य को भाग (शुल्क) देकर शिक्षा प्राप्त करते थे। किसी भी विद्यापीठ का शुल्क 1,000 कार्षापण था। ऐसा शिष्य आचार्य के घर पर ज्येष्ठ पुत्र की तरह रहकर अध्ययन करता था। धमंतेवासिक–वे विद्यार्थी जो आचार्य को शुल्क देने में असमर्थ होते थे। ऐसा शिष्य आचार्य की सेवा करते हुए अध्ययन करता था। ये धर्म शिष्य होते थे जो दिन में गुरु के कार्य करते थे और रात में शिल्प सीखते थे। पश्चदायिक–वे विद्यार्थी जो प्रतिज्ञा करते थे कि वे शिक्षा प्राप्त करने के बाद आवश्यक शुल्क चुका देंगे।

चरक, चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य और बिम्बिसार राजवैद्य जीवक ने यहाँ से स्नातक किया था। चीनी यात्री फाह्यान 405 में यहाँ आया था। चीनी यात्री हेवनसांग 630–643 के मध्य यहाँ आया था।

तक्षशिला के अवशेष 3 बड़े नगरों में विभाजित है–हाथल छठी सदी ईसा पूर्व से दूसरी सदी ईसा पूर्व तक। सिर्कप– इसका निर्माण दूसरी सदी ईसा पूर्व में ग्रीको बैक्ट्रियन शासकों द्वारा हुआ था। सिर्सुख–यह नगर कुषाण राजाओं से सम्बन्धित था।

5. वल्लभी विश्वविद्यालय– इस नगर की स्थापना तीसरी सदी में सौराष्ट्र में विजयसेन नामक क्षत्रिय ने की। यह वर्तमान वाला (काठियावाड़) के निकट स्थित था। इसके प्रथम विहार का निर्माण मैत्रक शासक ध्रुवसेन प्रथम की बहिन की पुत्री दद्दा ने करवाया था। दूसरा विहार राजा धरसेन ने 580 में बनवाया था जिसका नाम श्रीबप्पपाद था। यह बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय का प्रमुख केन्द्र था। आचार्य स्थिरमति और गुणमति यहाँ के प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान थे। यह जैन धर्म का भी केन्द्र था। यहाँ विधि, गणित, अर्थशास्त्र और साहित्य की शिक्षा दी जाती थी।

6. भोजशाला विश्वविद्यालय– यह विश्वविद्यालय पूर्व मध्य काल में शिक्षा के लिए बहुत प्रसिद्ध था। इसकी स्थापना राजा भोज ने अपनी राजधानी धारा नगरी में की थी। राजा मुंज के शासनकाल में यह हिन्दू धर्म और शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। परमार शासक भोज एक विद्वान व प्रतिभाशाली राजा था। उसकी राजसभा में धनपाल, विज्ञानेश्वर और उवट आदि अनेक विद्वान लेखक रहते थे। दसरुपक का लेखक धनंजय और यशोरुपावलोक का लेखक भी धारा नगरी के आश्रित थे।

7. कांची विश्वविद्यालय– पल्लवी शासकों के नेतृत्व में यह दक्षिण भारत का प्रमुख शिक्षा केन्द्र था। दक्षिण भारत के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों के निवासी भी यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आते थे। महाकवि दंडिन ने काँची के राज्याश्रय में रहकर ही अनेक ग्रंथों की रचना की। वात्स्यायन और दिन्नाग ने भी यहीं पर शिक्षा

www.rajsevak.com

प्राप्त की।

काशी (वाराणसी)– भविष्य पुराण में काशी को हिन्दू शिक्षा का विख्यात केन्द्र कहा है। यह बौद्ध और जैन धर्म व दर्शन का भी प्रधान केन्द्र थी। उपनिषदों की रचना के बाद यहाँ वैदिक शिक्षा दी जाने लगी। 6 सदी ईसा पूर्व यहाँ अनेक आचार्य 3 वेद व 18 शिल्प का अध्ययन कराते थे। यहाँ के विद्यापीठों में वेद, वेदांग, इतिहास, पुराण, ज्योतिष, कला और शिल्प की विशेष शिक्षा दी जाती थी। 10वीं सदी के अंत में अलबरुनी हिन्दू शास्त्रों से परिचय के लिए यहाँ आया था। गहड़वाल वंश के शासकों ने इसे अपनी दूसरी राजधानी बनाया। उनके संरक्षण में यह शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गई थी। कबीर और तुलसी जैसे कवि यहीं से सम्बन्धित थे। कश्मीरी कवि श्री हर्ष ने नैषध चरित की रचना यहीं पर की। आज भी परम्परागत शिक्षा के लिए इसका महत्त्व बना हुआ है।

कश्मीर– यह शैव मत के साथ ही बौद्ध मत का भी प्रधान केन्द्र रहा है। प्रथम सदी में सम्राट कनिष्क ने चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन यहाँ कुंडलवन में ही कराया था। यहाँ ब्राह्मण शिक्षा के केन्द्र मठ कहलाते थे। ललितादित्य, दिद्दा और अनंत आदि शासकों ने शिक्षा के विकास के लिए मठों और बिहारों को दान दिया।

हरिविजय, वृहत्कथामंजरी और श्रीकंठचरित आदि ग्रंथों के लेखक रत्नाकर, क्षेमेन्द्र, सोमेन्द्र और मन्खक आदि विद्वान यहीं के निवासी थे। यहीं पर कल्हण ने राजतरंगिणी की रचना की थी।

सारनाथ– बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं पर दिया था। यहीं पर उन्होंने बौद्ध संघ की स्थापना की थी। स्पष्टतः यह बौद्ध शिक्षा का प्रथम केन्द्र बना। हेनसांग के अनुसार ये विहार हीनयान संप्रदाय से सम्बन्धित थे। हर्ष ने इसके भवनों का पुनरुद्धार कराया। पाल शासकों ने यहाँ के शिक्षा केन्द्रों की प्रगति में बहुत योगदान दिया। उनके प्रयास से अष्ट महास्थान शैल गंध कुटी का निर्माण हुआ। बाद में यहाँ पर महायान संप्रदाय की शिक्षा भी दी जाने लगी।

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुस्तला,
सवाई माधोपुर (राज.)-322029
मो: 9413023662

स्मार्ट शिक्षा

'आश्रम से स्मार्ट क्लास तक - शिक्षक'

❐ डॉ. मांगीलाल मिस्त्री 'मनीष'

शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, निर्माण और विनाश इसकी गोद में पलते हैं।–आचार्य चाणक्य

सौभाग्य से हमारी सनातन संस्कृति की गौरव गरिमा ने शिक्षकों को 'गुरु-गोविन्द' का महा प्रसाद देकर इनकी नौकरी पेशा आजीविका और व्यक्तित्व को महिमापूर्ण कर, उन्हें परमात्मा से भी बड़ा बना दिया है। एक अलौकिक महिमा से विभूषित होकर इसका आस्वादन तो अध्यापक अनुभव कर ही रहे हैं। सामान्य पानी में गंगा-जल मिला देने पर पूरा पानी गंगा-जल का गौरव ले लेता है।

निश्चय ही हमारे परम्परागत गुरु ज्ञानी, ध्यानी और विज्ञानी रहे हैं। ऐसे महा गुरुओं की त्याग, तपस्या और साधना ने जो विरासत दी है, वह आज के अध्यापकों को बिना मूल्य चुकाए स्वतः ही मिल गई है। इतिहास साक्षी है- भारतीय गुरु प्रवर मानस में ज्ञान और मस्तिष्क में शास्त्र और शस्त्र की समस्त ज्ञान धाराओं के प्रणेता रहे हैं। गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, परशुराम, द्रोणाचार्य, अगस्त्य, चाणक्य से लेकर आर्यभट्ट, शंकराचार्य, नानक, गुरु गोविन्द सिंह के साथ पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पिछली शताब्दी के महान शिक्षाविद् ज्योतिबा फुले, सत्येन्द्रनाथ बोस, लाला हरदयाल, कुमार गंधर्व, श्रीनिवास रामानुजम्, सी.वी. रमन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर से लेकर डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन और महान वैज्ञानिक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सच्चे अर्थों में शिक्षा जगत और देश को विश्वस्तरीय बहुआयाम की सौगात देकर गुरु गौरव को कायम रखा।

आज समय के साथ शिक्षा, शैक्षिक परिवेश और विद्यार्थी बदले। परिवर्तन के इस आधुनिक बयार से बहुत कुछ प्रभावित हुआ। फिर भी इस परिवर्तन के सकारात्मक पक्ष शिक्षक के पक्ष में ही रहे हैं। इस आधुनिक तकनीकी वातावरण ने शिक्षा और शिक्षक के ब्रह्मास्त्र को धार दी है। 'गुरु गोविंद' की गंगौत्री आज गंगासागर तक पहुँच कर भी शिक्षक को अमृत की पावन धरोहर दे दी गई है।

'आश्रम' से आज स्मार्ट कक्षाओं तक का युग आ गया है। आज समस्त ज्ञान-विज्ञान वेब और इंटरनेट में सुसज्जित है। निश्चय ही आज शिक्षक को ताजातरीन और बेहतरीन सुविधाएँ प्राप्त हो गई हैं। अतः आज का शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान-विज्ञान से बल्कि राष्ट्र कर्णधार और आदर्श नागरिक बनाने में आगे आए।

शिक्षकों! आज क्या नहीं है- आपके पास। समग्र विज्ञान अपने अत्याधुनिक संसाधनों के साथ आपके सामने हाथ जोड़े खड़ा है। संचार तंत्र अपने समृद्ध बाहुओं के साथ आपकी 'चाणक्य' वाली भूमिका को असंख्य 'चन्द्रगुप्त' सुलभ करा रहा है। आप अपने-अपने मन-मानस-मस्तिष्क को अपडेट कीजिए। अपने संस्कारों को समृद्ध कर उसके अमृत से नई पीढ़ी को संजीवित कीजिए। जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक प्रयासरत हो जाओ। 'तलाशो' और 'तराशो' आपकी कक्षाओं की खदानों के कोयलों में छिपे हीरों को।

शिक्षा को नित नवीन संसाधनों से सुसज्जित कर शिक्षण-प्रतिमानों को निर्धारित करने और समस्त ज्ञान-विज्ञान से शिक्षकों को चुनौतियों के अनुरूप ढालने में हमारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सी.बी.एस.ई. की प्रबुद्ध प्रतिबद्धता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद्, अन्य केन्द्रीय और राज्य स्तरीय विभाग, बी.एड., एम.एड. के पाठ्यक्रम आदि निरंतर सक्रिय रहे हैं, वे शिक्षक को बहुआयामी रूप से निखार भी रहे हैं।

शिक्षकों के लिए कुछ खास सुझाव निम्न हैं–

- शिक्षक को सबसे पहले अपने विषय और ज्ञान को निरंतर सुसमृद्ध और अपडेट रखना होगा। विद्यालयी रिक्त समय में प्रायः

शिक्षक 'ज्ञान के पेट्रोल पम्प' जैसे पुस्तकालयों में ऊर्जा लेते हैं। कितना अच्छा हो शिक्षक निरंतर अपने ज्ञान को समृद्ध कर इस महाप्रसादी का वितरण सच्चे मन से करें।

- इस संचार क्रांति के युग में स्मार्ट कक्षा से भी आगे स्मार्ट तकनीकी ज्ञान और इसका भरपूर शैक्षिक उपयोग हेतु शिक्षक को तत्पर होना ही होगा।
- आचरण के बिना समस्त ज्ञान 'कागज पर उकेरे अक्षर हैं।' अध्यापक को अपने आदर्श आचरण की छाप छोड़ने लायक बनना ही होगा। तभी उसकी शिक्षाएँ व्यवहार में सार्थक हो सकती है।
- शिक्षक को अपने नेतृत्वकर्त्ता वाले लक्ष्य निर्धारित कर इसके संसाधन और लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्पोरेट-कल्चर की तरह अपने को तैयार करना होगा।
- हर अध्यापक को कक्षा के हर समय याद रखना होगा कि उसके हाथों में विद्यार्थियों के जीवंत मस्तिष्क हैं। उसका प्रोडक्ट कारखाने का नहीं, राष्ट्र की भावी पीढ़ी है। इसलिए उसे सदैव गंभीरता अपने कर्त्तव्य में लानी है।
- एक अध्यापक को अध्यापन के लिए मिले समय के अलावा अतिरिक्त समय (जैसे ऐरेजमेंट) में छात्रों में निहित प्रतिभा को तलाशना और तराशना चाहिए। उनकी सकारात्मक पहल के शब्द विद्यार्थी के जीवन को नई ऊर्जा, नई दिशा दृष्टि दे सकते हैं।
- आज प्रत्येक शिक्षक को बगीचे के माली और घड़े बनाने वाले कुम्हार का कर्म स्मरण रखना चाहिए। बिना किसी डिग्री डिप्लोमा या साक्षरता से माली बगीचे को संवारता है। कुम्हार कच्ची लोच वाली मिट्टी से घड़े बनाकर उस मिट्टी को रूप रंग और आकार देता है।
- जिस तटस्थता और प्रशांत मनोभाव से एक यात्री एक्सप्रेस सा सुपर फास्ट गाड़ी का ड्राइवर अपने यात्रियों को गंतव्य तक हर हाल में पहुँचाता ही है तो आप अपनी कक्षा के 30-40 ही सही, बच्चों को उनके लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं। अपनी विद्यालयीन दिनचर्या में शिक्षक का क्षण-क्षण विद्यार्थी मुखी ही हो तो सब सिद्ध हो सकता है।

अंततः हमारे देश के माननीय शिक्षकों के लिए यही उद्‌बोधन है कि बेशक परिस्थितियों को काले बादलों ने शिक्षा और शिक्षकों के दायित्व को ढक अवश्य लिया है, लेकिन निगला नहीं है। निश्चय ही शिक्षक औपचारिक दायित्वों के मकड़जाल के चक्रव्यूह में है, लेकिन अभिमन्यु की जद्दोजहद अभी जीवंत है। अपने शैक्षिक कर्त्तव्य के साथ आपके तरकश में संस्कारों और संस्कृति के तीर ब्रह्मास्त्र की तरह है- इसका यथावसर उपयोग कीजिए। आपकी योग्यता इसी में है कि आपने कितनों को कितना योग्य बनाया।

8-बी-1 स्वर्ण वाटिका, पीपलीहाना रोड,
वंदना नगर के पास, इंदौर (म.प्र.)-452018
मो: 7974441766

BE POSITIVE

संकल्प से सृष्टि

❐ **सीमा गोयल**

वर्तमान समय में विश्व में कोरोना महामारी ने अपना विकराल रूप दुनिया को दिखाया है। जिस वजह से इस धरती पर मौजूद सम्पूर्ण मानव जाति में एक डर, निराशा, नकारात्मकता जैसे विचारों ने अपना प्रभाव-प्रभाविता के साथ दिखाना शुरू किया। मनुष्य तन से स्वस्थ होकर भी मन से, विचारों से अपने को स्वस्थ नहीं कर पाया है। इतने दिन के लॉकडाउन में उसने अपने शरीर के साथ-साथ अपने स्वस्थ विचारों को भी कुछ हद तक लॉक कर दिया, नतीजन या तो स्वयं अपनी जिंदगी से हार गया या जिंदगी में विचारों को पुनर्जीवित करने में तय समयावधि से अधिक समय और ऊर्जा देनी पड़ी।

आज हम सब अपने चारों ओर बातचीत में ये कहते हुए सुनते है 'Be Positive' कुछ तो इसे Status पर या Blood Group B+ से जोड़कर भी देखते है लेकिन क्या सिर्फ सुनने मात्र या Status पर लगाना या देखने से या सिर्फ पढ़ने से 'Be Positive' या सकारात्मक रहा जा सकता है? तो उत्तर है आंशिक रूप से, पूर्णतया नहीं क्योंकि जिस तरह आंशिक सूर्य या चन्द्रग्रहण का असर मानव मात्र पर नहीं होता उसी तरह सिर्फ 'Be Positive' को सोचने, देखने या सुनने से असर नहीं होता। सकारात्मक होने और उसे अपने में पूरी तरह से समाहित करने में पूरी ताकत, शक्ति, ऊर्जा देनी पड़ती है, हर क्षण, हर पल स्वयं को ये अनुभूति करानी पड़ती है कि हमारे विचार, हमारे भाव, ऊर्जावान, खुशी व आनंद के रंगों से रंगीन और फूलों की महक से महकते हुए है ये संकल्प। जी हाँ जब तक हम स्वयं से ये संकल्प नहीं करते कि हमारे द्वारा सोचा गया प्रत्येक विचार, हर क्षण, हर पल में आया भाव सुन्दर, सुखद और स्वस्थ है तब तक हम न तो स्वयं को ना अपने चारो ओर के वातावरण को सुन्दर-स्वस्थ-सुखद महसूस करा सकते हैं। इस संकल्प से हम अपने प्रत्येक विचार को सकारात्मक कर सृष्टि को नए आयाम दे सकते हैं क्योंकि प्रत्येक स्वस्थ भाव का हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है मन से बुद्धि पर और बुद्धि से कर्म पर स्वतः ही प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगता है। यदि संकल्प श्रेष्ठ है तो कर्म का प्रभाव स्वतः ही श्रेष्ठ होगा जिससे प्रारंभ में किए गए पाप कर्म का फल प्रभावहीन हो जीवन के प्रत्येक पल में आत्मसात कर उस पर सोचना, समझना और अपनाकर स्वयं को इस सकारात्मक ऊर्जा को संकल्प की यज्ञवेदि में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया है और अब आप स्वयं के साथ-साथ अपने चारों के वातावरण को इस यज्ञवेदि में आहुत करने के लिए समर्थ हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में ईश्वर का स्मरण कर उसे हर नए दिन को देने के लिए धन्यवाद देने के साथ-साथ ये संकल्प करना चाहिए कि मैं अपने मन, वचन, वाणी, कर्म से किसी का भी अहित, अपमान या किसी को भी दुखी नहीं करूँगा और सहयोग, सद्‌भावना, सद्‌विचारों के साथ समर्पित भाव लेकर अपने कर्मों को नए आयाम दूंगा तो निश्चित ही यह सृष्टि पुनः अपने सतयुग में होने का सुखद अहसास के साथ-साथ स्वस्थ होने का भी प्रमाण देगी। अतः निरन्तर अभ्यास करते रहिए.... संकल्प से सृष्टि की ओर।

प्राध्यापक (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापनगर,
भीलवाड़ा (राज.)

www.rajsevak.com

पर्यावरण जागरूकता

स्काउट : पशु-पक्षियों का मित्र एवं प्रकृति प्रेमी

❒ घनश्याम स्वामी

कोविड-19 द्वितीय लहर के दौरान पूरा राजस्थान लॉकडाउन की मार झेल रहा था। ऐसी स्थिति में पशु-पक्षियों एवं पेड़-पौधों की नियमित सार-संभाल कौन करे? इसका साहसी सेवा भावी बीड़ा उठाया राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के युवा रोवर्स स्काउट्स ने।

बीकानेर शिक्षा निदेशालय परिसर क्षेत्र में काफी भू-भाग खुला एवं पेड़-पौधों से आच्छादित है। यहाँ काफी संख्या में पक्षी जिसमें मोर, कबूतर, चिड़ियाएँ, कौए, तीतर आदि एवं श्वान, गोयिरे, साँप आदि भी विचरण करते हैं। निदेशालय के कुछ जीव-जन्तु प्रेमी कार्मिक सबके सहयोग से इनके लिए दाना-पानी आदि की व्यवस्था वर्ष पर्यन्त करते हैं। जिनमें हाल ही सेवानिवृत्त हुए श्री श्याम जी पंवार, देवराज जोशी, प्रेमसिंह आदि प्रमुख सेवादार हैं।

राज्य सरकार द्वारा दिनांक 18.04.2021 से प्रदेश में सम्पूर्ण लॉकडाउन की पालना में निदेशालय में भी लॉकडाउन रहा। ऐसे में निदेशालय में पशु-पक्षियों के लिए नियमित दाना-पानी एवं पेड़-पौधों के लिए सार-संभाल, नियमित पानी आदि की व्यवस्था में व्यवधान हो गया।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, बीकानेर द्वारा दिनांक 22 अप्रैल, 2021 विश्व पृथ्वी दिवस पर आगामी गर्मियों को देखते हुए सघन परिण्डा अभियान की शुरूआत की गई। अभियान का शुभारंभ श्रीमान नमित मेहता जिला कलेक्टर महोदय द्वारा किया गया। इस अभियान के तहत निदेशालय में भी शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ एवं राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के रोवर्स-रेंजर्स ने संयुक्त रूप से निदेशालय में पक्षियों के लिए परिण्डे लगाए। इस अवसर पर श्रीमती शारदा ढाका-सहायक निदेशक एवं श्री आनन्द साध, अध्यक्ष-शिक्षा विभागीय संयुक्त कर्मचारी संघ, श्री मान महेन्द्र सिंह भाटी-एएसओसी, श्रीमती ज्योतिरानी महात्मा-सीओ, गाइड, श्री घनश्याम स्वामी-रोवर लीडर व निदेशालय के वरिष्ठ कार्मिक श्री के.सी. व्यास, श्री सत्यनारायण व्यास, श्री अजय आचार्य, देवराज जोशी सहित रोवर स्काउट्स-रेंजर गाइड्स ने सक्रिय सहयोग दिया। इस अवसर पर श्री आनन्द साध व अन्य कार्मिकों के निवेदन पर पक्षियों के लिए नियमित दाना-पानी की व्यवस्था हेतु स्काउट-गाइड का सहयोग माँगा गया। इस सेवा प्रस्ताव को स्काउट्स गाइड्स द्वारा सहर्ष स्वीकार कर लिया एवं आश्वस्त किया कि आपकी इस सेवा प्रक्रिया को कोरोना काल में लॉकडाउन की वजह से बाधित नहीं होने दिया जाएगा।

शिक्षा निदेशालय रोवर क्रू ने उक्त सेवा को नियमित जारी रखने का संकल्प लिया। शिक्षा निदेशालय के आसपास रहने वाले युवा रोवर स्काउट की दिवस वार ड्यूटी श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित-सीओ (स्काउट) के निर्देशानुसार लगायी गई। दिन-प्रतिदिन की इस सेवा संकल्पना हेतु निदेशालय के श्री घनश्याम स्वामी-निजी सहायक (ए.एल.टी. रोवर स्काउट लीडर) श्री मदन मोहन मोदी-कार्यालय सहायक एवं श्री पंकज भटनागर-सेनि. निजी सहायक एवं रोवर लीडर ने भी रोवर स्काउट के साथ दिवसवार नियमित रूप से उपस्थित होकर सहयोग-मार्गदर्शन करना तय किया।

इस प्रकार संकल्पित होकर दिनांक 23 अप्रैल से ही कोरोना काल में सम्पूर्ण लॉकडाउन के समय नियमित रूप से प्रातःकाल पानी की आवक के समय उपस्थित होकर पक्षियों के लिए तारबंदी किए गए स्थल की साफ-सफाई करना, पानी की परिण्डों को साफ कर पुनः भरना, चुग्गा पात्र को साफ कर पुनः दाना डालना आदि करने के बाद परिसर के विभिन्न पार्कों में लगाए गए पौधों को पानी देना, आंधियों की वजह से आवश्यकतानुसार साफ-सफाई करना, पीएचईडी पानी सप्लाई ना होने पर विभिन्न स्थानों पर स्थापित मोटर को चलाकर पानी देना पुनः व्यवस्थित करना, निदेशालय में लगाए गए सभी परिण्डों में पुनः पानी भरना आदि-आदि विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के सार-संभाल के आवश्यकतानुसार कार्य करना। यह सब करते हुए अपने आपको भी एवं जीव-जंतुओं को भी बचाना व सावधानी रखना। श्वानों को रोटियां, बिस्किट आदि डालना। इस प्रकार यह नियमित सेवा का क्रम चलता रहा।

इस सेवा अवधि के दौरान समय-समय पर राजकीय कार्यवश पधारे निदेशालय अधिकारियों, कार्मिकों जिनमें श्री मनीष कस्वां-सहायक निदेशक, श्री अजय आचार्य-भण्डारपाल, श्री कमल नयन सिंह-केयर टेकर, श्री अभय सिंह राजपुरोहित-स्काउटर, श्री विजय बालेचा-कार्यालय सहायक, श्री हरिमोहन जी-मिस्त्री ने स्काउट्स गाइड्स की सेवा कार्य की सराहना की एवं शिक्षा विभाग के मुखिया श्रीमान निदेशक महोदय ने भी समय-समय पर विभाग के सोशल मीडिया ग्रुप के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर उत्साहवर्द्धन किया।

इसके अलावा राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड हैडक्वार्टर द्वारा कोरोना काल में रोवर्स-रेंजर्स के लिए कई प्रकार की ऑनलाइन गतिविधियाँ आयोजित की जा रही थी उनका समय होने पर निदेशालय से ही जुड़कर सेवारत रोवर्स ने भाग लिया जिसमें योगा क्लासेज, कोरोना जागरूकता, पर्यावरण जागरूकता, सेल्फी विद ट्री आदि-आदि अनेकों टास्क भी यहाँ सेवा देने वाले रोवर्स ने यही से जुड़कर पूरा कर उच्च स्थान प्राप्त किया।

जून के प्रथम सप्ताह में निदेशालय सीमित संख्या पर वापिस सुचारू रूप से संचालित होने लगा। 5 जून पर्यावरण दिवस पर प्रातः पुनः यहाँ नियमिति सेवा देने वाले श्री घनश्याम स्वामी, श्री मदन मोदी, श्री पंकज भटनागर एवं सर्विस रोवर स्काउट विश्वजीत सिंह, अर्जुन भाटी, गणेश गिरी, गौरीशंकर

www.rajsevak.com

प्रजापत, प्रदीप कुमार आदि ने मिलकर वृक्षारोपण किया। पेड़-पौधों की सार संभाल एवं दाना-पानी की व्यवस्था उपरांत विश्व पर्यावरण दिवस पर ऑनलाइन आयोजित वेबीनार में भाग लिया। पर्यावरण चेतना के निनाद लगाए गए एवं पर्यावरण सुरक्षा एवं जागरूकता का संकल्प लिया। निदेशालय परिसर का ऑनलाइन भ्रमण प्रसारण किया।

श्रीमान निदेशक महोदय द्वारा कोरोना काल में इस निःस्वार्थ एवं प्रेरणामयी सेवा करने वाले रोवर स्काउट्स एवं कार्मिकों को सम्मान-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले रोवर स्काउट श्री विश्वजीत सिंह भाटी, श्री गौरीशंकर प्रजापत, श्री गणेश गिरी, श्री प्रदीप कुमार एवं रोवर लीडर श्री घनश्याम स्वामी, श्री पंकज भटनागर, श्री अभयसिंह राजपुरोहित एवं कार्मिक श्री मदन मोदी, श्री देवराज जोशी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षा विभागीय संयुक्त कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री आनन्द स्वामी, श्री सत्यनारायण व्यास, श्री कुलदीप खड़गावत, श्री राजेन्द्र चौधरी, श्री कैलाश कविया एवं श्री मानमहेन्द्र सिंह भाटी- सहायक राज्य संगठन आयुक्त, श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित-सी.ओ. स्काउट, स्थानीय संघ सचिव श्री घनश्याम स्वामी आदि उपस्थित रहे।

इस सेवा काल का पर्यावरण को, पशु-पक्षियों को लाभ मिला उसी प्रकार सेवा देने वाले युवाओं, विद्यार्थियों को जो कि कोरोनाकाल में घरों में कैद होकर रह जाते उस समय का सदुपयोग हुआ, पर्यावरण जागरूकता के प्रति उनके मन में जो बीज पैदा हुआ वह सेवा भावना का वृक्ष बनकर समाज को भी लाभान्वित करेगा। युवाओं की एनर्जी को इस प्रकार सकारात्मक दिशा में लगाने का अवसर प्रदान किए जाने एवं इस सेवा भावना को अवसर देकर प्रोत्साहित किए जाने पर राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन श्रीमान निदेशक महोदय व शिक्षा विभागीय संयुक्त कर्मचारी संघ का धन्यवाद ज्ञापित करता है और आशा करता है कि भविष्य में सेवा का अवसर प्रदान करते रहेंगे।

निजी सहायक एवं ए.एल.टी. (रोवर)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414303345

ऑनलाइन शिक्षा

एप से ऑनलाइन शिक्षा

❒ **डॉ. देवेन्द्र सिंह राणावत**

आज के इस समय में जब सम्पूर्ण विश्व एक भयंकर महामारी के दौर से गुजर रहा है वहीं विद्यार्थियों तक शिक्षा की आसान पहुँच व निरन्तरता बनाए रखने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जहाँ हम नियमित विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों से सीधा कक्षा कक्ष में संवाद करते हैं, उन्हें अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाते हैं, गृहकार्य की जाँच करते हैं तथा उनकी समय-समय पर परीक्षा लेते हैं। परन्तु इस दौर में जब विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित ही नहीं हो रहे हो तो उक्त कार्य कुछ कठिन जान पड़ते हैं। परन्तु आज के इस तकनीकी युग में कुछ भी असंभव या कठिन नहीं है। कुछ मोबाइल एप की मदद से आसानी से सभी विद्यालयी कार्य ऑनलाइन किए जा सकते हैं। आइए आप और हम जाने की कौनसी एप या वेब ब्राउजर हमारी ऑनलाइन शिक्षा के लिए कितना उपयोगी है-

ZOOM APP- यह एक क्लाउड मीटिंग एप और ग्रुप वीडियो कॉलिंग एप है। इसके फ्री वर्जन में आप एक साथ 100 विद्यार्थियों के साथ निर्धारित समय 40 मिनट के लिए ऑनलाइन क्लास ले सकते हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को समय पूर्व क्लास के लिए अवगत करवाया जा सकता है तथा समय पूरा होने पर पुनः 40 मिनट के लिए जोड़ा जा सकता है। इसके पेड वर्जन में एक साथ कई विद्यार्थियों के साथ बिना किसी समय सीमा के संवाद किया जा सकता है। इस एप को प्लेस्टोर या एप्पल स्टोर से फ्री में डाउनलोड कर अपने मोबाइल, टेब या लेपटॉप पर चलाया जा सकता है। इस ऐप की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके द्वारा आप अपने मोबाइल या कम्प्यूटर स्क्रीन को विद्यार्थियों के साथ साझा कर सकते हैं।

GOOGLE CLASS ROOM-यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण मोबाइल एप है जिसके माध्यम से अपनी कक्षा को व्यवस्थित और प्रतिबंधित किया जा सकता है। वे कार्य जो गूगल क्लासरूम के माध्यम से किए जा सकते हैं-

शिक्षक- कक्षाओं का निर्माण कर सकते है, विद्यार्थियों के साथ जुड़ सकते हैं, असाइनमेंट का वितरण कर सकते हैं, महत्त्वपूर्ण लिंक विद्यार्थियों से साझा कर सकते है, विद्यार्थियों के काम का आंकलन कर सकते है, महत्त्वपूर्ण फीडबैक दिया जा सकता है।

विद्यार्थी- कक्षा में शामिल हो सकते हैं, शिक्षकों के साथ मैसेज के माध्यम से बातचीत कर सकते हैं साइनमेंट की प्रैक्टिस कर सकते हैं, अपने गृह कार्य को शिक्षक के साथ साझा कर सकते हैं तत्काल प्रतिक्रिया व ग्रेड प्राप्त कर सकते हैं।

TESTMOZ-यह एक उत्कृष्ट वेब टूल (वेब ब्राउजर) है जो आपको ऑटो वर्गीकृत प्रश्नपत्र बनाने की सुविधा प्रदान करता है। यह वेब टूल विस्तृत रिपोर्ट भी प्रदान करता है ताकि शिक्षक छात्रों के अंकों और प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कर सके। TESTMOZ छात्रों के लिए ऑनलाइन परीक्षा देने का एक बहुत तेज और सरल तरीका है। जिसका टेस्ट देना है उसका नाम दे दीजिए तथा एडमिन पासवर्ड सेट कीजिए। इसके द्वारा टेस्ट के नियमों का भी चयन किया जा सकता है जैसे परीक्षा का समय, प्रयास (अटेम्पट) आदि। इसमें छात्रों के लिए अधिकतम 50 प्रश्नों का निर्धारण किया जा सकता है। प्रश्न वैकल्पिक, सत्य-असत्य, मेच मेकिंग, रिक्त स्थान आदि प्रकार के हो सकते हैं। प्रश्नपत्र निर्माण के बाद विद्यार्थियों के एक लिंक साझा किया जाता है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने नाम के साथ लॉगइन कर सकते हैं।

उपर्युक्त तीनों टूल्स का इस्तेमाल करके विद्यालय के तीन महत्त्वपूर्ण घटकों (विद्यार्थियों से संवाद, गृहकार्य एवं परीक्षा) को प्राप्त किया जा सकता है।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय विकास नगर, बून्दी (राज.)
मो: 9214921322

www.rajsevak.com

डिजिटल भारत

डिजीटल दुनिया का संचार आईसीटी

❒ कान्ता मीना

वैश्वीकरण के दौर में भारत में शिक्षा के क्षेत्र में नित नए-नए प्रयोग होते आए हैं और हमारी शिक्षण व्यवस्था ने उसे सहर्ष अपनाया भी। हमें शिक्षा के क्षेत्रों में अपने शैक्षणिक सत्र को पूरा करते उससे पहले ही हमारे सामने एक वैश्विक महामारी कोरोना ने अचानक धावा बोल दिया, जिससे सम्पूर्ण विश्व अनभिज्ञ था। सब कुछ मानो थम सा गया हो। भारत में सभी सरकारी स्कूल, कॉलेज समेत तमाम शैक्षणिक संस्थानों को बंद करना ही सरकारों का एक अहम फैसला था अपितु हम सभी इसके लिए तैयार नहीं थे फिर भी भारतवासियों ने इसे एक चुनौती के रूप में लेते हुए इसका डटकर सामना किया। साथ ही शिक्षण व्यवस्था को कैसे सुचारू रूप से चलाया जाए, जिससे कि विद्यार्थियों का शैक्षणिक सत्र पूरा किया जा सके। केन्द्र सरकार ने आईसीटी को शैक्षणिक व्यवस्था सुचारू रखने के लिए अपनाया, जिसमें एक विकल्प के रूप में ई-लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा मिला, जिससे कोरोना काल में भी विद्यार्थियों के अधिगम की गति धीमी ना हो। केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के लिए यह अहम था कि उच्च शिक्षा के साथ-साथ स्कूली शिक्षा को भी मुख्य धारा से जोड़ा जाए। उसके लिए शिक्षण में आईसीटी आधारित शिक्षा तकनीक का उपयोग हमारे द्वारा अपनाया गया। तकनीक के क्षेत्र में राज्य सरकार पहले से ही कार्य कर रही थी। हम अगर राजस्थान की ही बात करें तो वर्तमान में सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आईसीटी लैब की स्थापना कर दी गई है। इन सभी विद्यालयों में आधुनिक तकनीक उपलब्ध है। यहां से सीधे ऑनलाइन कक्षाओं को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। साथ ही भव्य स्मार्ट क्लास रूम की स्थापना भी की गई है। स्मार्ट क्लास की संकल्पना ऑनलाइन शिक्षण अधिगम की भावना के अनुरूप होती है। कोरोना महामारी के बावजूद भी 525 नए आईसीटी लैब की स्वीकृति हमें भारत सरकार से मिली, जिसकी स्थापना का कार्य चल रहा है। आईसीटी लैब विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच का विकास करने वाली है। वर्तमान में स्वीकृत एवं संचालित आईसीटी कम्प्यूटर लैब की संख्या 10695 है। शिक्षा के लिए स्मार्ट क्लासरूम की विद्यालयों में स्थापना की जा रही है।

वर्तमान में आईसीटी के रूप में सोशल लर्निंग, माइक्रो लर्निंग, ई-लाइब्रेरी, ई-लर्निंग जैसी अवधारणाओं ने हमारे सामने नए विकल्प उपलब्ध करवाए हैं। यह तकनिकी माध्यम स्मार्ट डिवाइस डेस्कटॉप, लेपटॉप, टेबलेट, मोबाइल, प्रोजेक्टर, टी.वी., रेडियो, डिजीटल लाइब्रेरी से इंटरनेट के द्वारा शिक्षा प्रदान करता है। आईसीटी के प्रयोग विषय की कठिनाइयों से अवगत होते हुए उनका प्रस्तुतीकरण छात्रों के समक्ष सहज और सरल बना देता है जो कि छात्रों को मुख्य धारा से जोड़ते हुए उनकी मानसिक व बौद्धिक स्तर की उन्नति भी करता है। यदि हम सकारात्मकता सोच के साथ प्रयास करें तो यह निश्चित ही रुचिकर और उपयोगी साबित होगा, साथ ही वर्तमान पीढ़ी इन नवाचारों को सहर्ष स्वीकार भी करेगी। आईसीटी का प्रयोग व उपयोग स्वयं एक स्वतंत्र विषय के रूप में साथ ही सहायक उपकरण के रूप में है। इनके उपयोग से वर्तमान परिस्थितियों का भी सामना करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नए विकल्प तलाशें जा सकते हैं। वर्तमान शिक्षा विभाग व हमारे शिक्षकों के द्वारा परम्परागत विधियों के बदलाव के साथ-साथ नवाचारों को भी सहर्ष अपनाया जा रहा है। शिक्षण के क्षेत्र में आईसीटी के प्रयोग ने अध्यापकों के शिक्षण कौशलों के साथ उनके विषय के ज्ञान को भी परिमार्जित किया है। शिक्षण के क्षेत्र में आईसीटी का प्रयोग वर्तमान पीढ़ी को नवीन ज्ञान से जोड़ने के लिए आवश्यक है। आज वर्तमान में आईसीटी नई शिक्षा नीति की जरूरत भी होती जा रही है। आईसीटी का प्रयोग अध्यापकों के द्वारा विषय की रोचकता को बढ़ाने के साथ अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए भी जरूरी हो गया है। आईसीटी उपकरणों का प्रयोग तो कक्षा-कक्ष में अधिगम को स्थाई बनाने के साथ-साथ विषय में सजीवता भी लाता है। बालकों का ध्यान विषय पर केन्द्रित करने के साथ-साथ उसमें रुचि भी जाग्रत करता है। आज जब तकनीक ने सभी ओर अपने पैर पसार लिए है तो शिक्षक द्वारा अपने विषय के सम्पूर्ण ज्ञान का उपयोग करते हुए कक्षा-कक्ष में किसी भी विषय की संरचना, चलचित्र व वीडियों को प्रोजेक्टर या कम्प्यूटर के माध्यम से 3डी तकनीक व आईसीटी के उपकरणों को प्रयोग करते हुए समझाया जाए तो विद्यार्थियों में नवीनता व क्रियाशीलता को बढ़ावा मिलता है। परम्परागत शिक्षण कौशलों में भी आईसीटी के माध्यम से उनके अधिगम में सजीवता व रोचकता उत्पन्न की है क्योंकि जब भी कोई विषय विद्यार्थियों को ऊबाऊ व असहज लगता है तो शिक्षक द्वारा उस विषय के प्रति आईसीटी उपकरणों का उपयोग के साथ रोचकता उत्पन्न की जा सकती है। आईसीटी के माध्यम से सम्पूर्ण जगत एक कक्षा-कक्ष व शिक्षक एक सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक का कार्य कर सकता है। आईसीटी मुख्यतः दो रूपों में हमारे समक्ष है। एक ऑनलाइन मोड पर, दूसरा ऑफलाइन मोड पर। ऑनलाइन मोड की बात करते है तो जिन विद्यालय में आईसीटी लैब पहले से है। वहाँ से तो सीधे विद्यार्थियों से संवाद या कक्षाएँ सुचारू रूप से चलाई जा सकती है और जहाँ आईसीटी लैब अभी नहीं है वहाँ भामाशाहों का सहयोग लेकर इसे सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। इसके अलावा अभी चुनौतियाँ और भी हैं जैसे इंटरनेट का ना होना, ग्रामीण परिवेश, मध्यम व निम्न वर्गों के विद्यार्थियों के पास मूलभूत सुविधाओं का अभाव होना। इन सभी को ये नजर रखते हुए हमें शिक्षण व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना भी एक चुनौती है और शिक्षक हमेशा चुनौतियों के लिए तैयार रहते हैं फिर चाहे कोरोना महामारी में अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा दिखाते हुए ड्यूटी देना हो या फिर अन्य सेवाएँ देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देना, साथ ही सभी शिक्षक इस नवाचार को सहर्ष स्वीकार भी कर रहे हैं क्योंकि पुरानी पीढ़ी के लिए कुछ नया ही देते आए हैं। इसके लिए हमें आईसीटी की बढ़ती हुई उपयोगिता व महत्त्व को समझना होगा और इसे शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य धारा से जोड़ना होगा। निश्चित ही ये नए बदलाव शिक्षा जगत के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे।

पी.एच.डी शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज.)
मो: 9829397817

www.rajsevak.com

आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2021

1. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान।
2. विभिन्न पदों एवं कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (एपीएआर) चैनल में निम्नानुसार आंशिक संशोधन नवीन चैनल निर्धारण के संबंध में।
3. राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।
4. विभिन्न प्रकार की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2021-22 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर आवेदन प्राप्त करने के सम्बन्ध में निर्देश

1. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/लेखा/डी-2/28001/2021-22 दिनांकः 02.07.2021 ● कार्यालय आदेश ● विषयः बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान।

राज्य सरकार एवं निदेशालय स्तर पर बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण के समय-समय पर निर्देश दिए जाने पर भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए। उच्चाधिकारियों के विद्यालय निरीक्षण के दौरान पाया जाता है कि कमरों में बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान पड़ा है जिससे विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त कक्षा-कक्ष उपलब्ध नहीं हो पाते है। इसी प्रकार कार्यालयों में भी काफी मात्रा में बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान के कारण अधिकारी/कर्मचारियों को बैठने की उचित व्यवस्था नहीं है। स्वच्छ कार्यालय/विद्यालय के लिए बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का त्वरित निस्तारण अपेक्षित है। अतः राज्य सरकार के निर्देशों की पालना में बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का समयबद्ध अभियान के रूप में निस्तारण का निर्णय लिया गया है। अभियान मी मॉनिटरिंग के लिए निदेशालय माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर निम्न अधिकारी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है-

1. श्री नीरज बुडानिया, लेखाधिकारी
2. श्री विनोद जोशी, सहायक लेखाधिकारी-।

अभियान के निम्न चरण उनके सामने अंकित तिथि तक पूर्ण करने होंगे-

क्र.सं.	अभियान के चरण	दिनांक
1	सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 18 के अन्तर्गत सामान के निरीक्षण/सर्वेक्षण के लिए समिति गठित करना।	15.07.2021
2	सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 18 के अन्तर्गत गठित समिति के प्रपत्र एसआर-5 व 6 में मय हस्ताक्षर रिपोर्ट प्राप्त करना।	22.07.2021
3	निरीक्षण/सर्वेक्षण समिति की रिपोर्ट के आधार पर सामान्य एवं वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।।। के आइटम संख्या-11 के अन्तर्गत बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी घोषित करना।	29.07.2021
4	बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान जो नीलामी द्वारा निस्तारित किया जाना हैं, की नीलामी हेतु सामान्य वित्तीय लेखा नियम पार्ट-।। के नियम 22 के अन्तर्गत नीलामी समिति का गठन करना।	29.07.2021
5	नीलामी समिति हेतु गठित समिति की सहमति के आधार पर नीलामी सूचना जारी करना एवं सामान्य एवं वित्तीय लेखा नियम पार्ट-।। के नियम 25 के अन्तर्गत प्रचार-प्रसार करना।	01.08.2021
6	नीलामी कार्यवाही सम्पन्न करना।	नीलामी सूचना में निर्धारित तिथि को
7	नीलामी से प्राप्त राशि बजट मद 0202-01-102-50-02 में चालान द्वारा जमा करवाना।	नीलामी से राशि प्राप्त होने के दिवस या अगले कार्य दिवस

उपर्युक्त प्रक्रिया पूर्ण कर नीलामी से प्राप्त आय व रिक्त हुए कमरों की सूचना संबंधित जिले के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी निम्न प्रपत्र में प्रत्येक माह की 5 तारीख को अनिवार्य रूप से ईमेल school03power@gmail.com पर भिजवाना सुनिश्चित करावें।

क्र. सं	कार्यालय/विद्यालय का नाम	सामान का पुस्तक मूल्य	नीलामी से प्राप्त आय	जीएसटी	नीलामी से प्राप्त कुल आय	चालान नं दिनांक	नीलामी से रिक्त हुए कमरों की संख्या

जहां लेखाकर्मी का पद रिक्त हैं वहाँ जिले में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं मण्डल में संयुक्त निदेशक अपने अधीनस्थ जिला/मण्डल में कार्यरत लेखाकर्मी को सर्वे एवं नीलामी में मनोनीत करेंगे। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जावे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. विभिन्न पदों एवं कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (एपीएआर) चैनल में निम्नानुसार आंशिक संशोधन नवीन चैनल निर्धारण के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए-।/19-20 दिनांकः 20.07.2021 ● कार्यालय आदेश ● विषयः विभिन्न पदों एवं कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (एपीएआर) चैनल में निम्नानुसार आंशिक संशोधन नवीन चैनल निर्धारण के संबंध में।

शासन के पत्रांक प.17(10)शिक्षा-2/2020 जयपुर दिनांक 12.07.2021 की पालना में इस कार्यालय द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 23.11.2020 के तहत विभिन्न पदों एवं कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (एपीएआर) चैनल में निम्नानुसार आंशिक संशोधन/नवीन चैनल का निर्धारण किया जाता है। शेष चैनल परिपत्र 23.11.2020 के अनुसार रहेगा।

www.rajsevak.com

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	पदनाम	प्रतिवेदक अधिकारी	समीक्षक	स्वीकारकर्ता
1	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा	शासन सचिव/ प्रमुख शासन सचिव शिक्षा
2	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	संयुक्त निदेशक-संभाग	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा	शासन सचिव/प्रमुख शासन सचिव शिक्षा
3	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	सहायक निदेशक (प्रधानाचार्य -उमावि समकक्ष/संस्थापन अधिकारी/प्रशासनिक अधिकारी/अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	संयुक्त निदेशक-संभाग	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा
4	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	संदर्भ व्यक्ति-CWSN (वरिष्ठ अध्यापक समकक्ष)/ सहायक प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ सहायक	सहायक निदेशक	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	संयुक्त निदेशक-संभाग
5	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	कनिष्ठ सहायक	सहायक निदेशक	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
6	पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएं निदेशालय प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	वरिष्ठ अध्यापक/अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी/ अध्यापक/सहायक प्रशासनिक अधिकारी/वरिष्ठ सहायक/ कनिष्ठ सहायक	जिला शिक्षा अधिकारी (संबंधित अनुभागाधिकारी)	पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा

3. राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/पी-2/2012/दिनांकः 25.06.2021 ● कार्यालय आदेश ● विषयः राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 10.12.2020 एवं 01.02.2021 द्वारा माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान दिनांक 01.01.2021, 31.03.2021 तक चलाने के निर्देश दिए गए थे। उक्त अभियान की अवधि 30 सितम्बर 2021 तक बढ़ाई जाती है।

उक्त अभियान के शेष निर्देश यथावत रहेंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. विभिन्न प्रकार की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2021-22 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर आवेदन प्राप्त करने के सम्बन्ध में निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/छाप्रोप्र/ए/शालादर्पण/2019-20-दिनांकः 15.07.2021 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-मुख्यालय ● विषयः विभिन्न प्रकार की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2021-22 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर आवेदन प्राप्त करने के सम्बन्ध में निर्देश।

सत्र 2021-22 में राजस्थान राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक अध्ययनरत विद्यार्थियों से सम्पूर्ण औपचारिकताएँ पूर्ण करते हुए समस्त प्रकार की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाओं में ऑनलाइन आवेदन पत्र शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल के माध्यम से संस्थाप्रधान के द्वारा ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने की तिथि निम्नानुसार है-

क्र.सं.	विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
(अ)	छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाएँ ऑनलाइन अपलोड पश्चात सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021
(ब)	निदेशालय माध्यमिक शिक्षा को निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा/निदेशालय संस्कृत शिक्षा द्वारा समेकित प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	-	माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा तय प्रवेश की अंतिम तिथि के पश्चात् 10 दिवस में

उपर्युक्त समस्त छात्रवृत्ति योजनाओं के ऑनलाइन आवेदन हेतु ऑनलाइन आवेदन पत्र का प्रारूप, विस्तृत दिशा निर्देश, पात्रता एवं शर्तें, छात्रवृत्ति की दरें तथा संलग्न किए जाने वाले आवश्यक दस्तावेजों का विवरण शिक्षा विभाग की वेबसाइट education.rajasthan.gov.in / secondary के Scholarship Tab एवं शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल पर दिनांक 16.07.2021 से ऑनलाइन उपलब्ध होगा। अतः आप अपने अधीनस्थ समस्त संस्थाप्रधानों को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण करने के आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान कर आवेदन प्रक्रिया

www.rajsevak.com

पूर्ण करवाना सुनिश्चित करें। साथ ही नव प्रवेशी विद्यार्थी द्वारा भरे हुए आवेदन पत्र सम्बन्धित विद्यालय में सुरक्षित रखे जाएँगे। राजकीय विद्यालयों के अतिरिक्त राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों को प्राप्त छात्रवृत्ति आवेदन पत्र सम्बन्धित राजकीय नोडल विद्यालय के द्वारा जांच पश्चात जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक मुख्यालय कार्यालय में सुरक्षित रखे जाएंगे।

● संलग्न : विभिन्न पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्तियों हेतु दिशा-निर्देश

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक राजस्थान, बीकानेर।

विस्तृत दिशा-निर्देश वर्ष 2021-22

कक्षा 6 से 8 में अध्ययनरत अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति (SC-ST) के छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

1. पात्रता एवं शर्तें:-

1. छात्र/छात्रा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का ही हो। छात्र/छात्रा का जाति प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य, (केवल प्रथम बार छात्रवृत्ति आवेदन के समय)
2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा के माता-पिता या उनके संरक्षक (माता-पिता जीवित न होने पर) आयकर दाता न हो।
4. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृत्ति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
5. छात्र/छात्रा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित छात्रावास में नहीं रह रहा हो।
6. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दूसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
7. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.2014 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
8. पिछले सत्र 2020-21 में शालादर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शालादर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछले वर्ष की प्राप्त स्वतः सूचना के आधार पर जन आधार/आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बन्धित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैंक खाता जन आधार से लिंक है अन्यथा जन आधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच (Fetch) करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाएँ प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाएँ भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृत्ति की दरें इस प्रकार है:

क्र.सं.	वर्ग	कक्षा	दरें (अधिकतम 10 माह हेतु)
1	छात्र	6 से 8	75/- प्र. माह (SC व ST दोनों के लिए)
2	छात्रा	6 से 8	125/- प्र. माह (SC व ST दोनों के लिए)

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है-

1. छात्र/छात्रा के माता-पिता (माता-पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) का आय स्वघोषणा पत्र।
2. छात्र/छात्रा के गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण-पत्र (स्वप्रमाणित प्रति।)
3. विद्यार्थी का स्वयं का जाति प्रमाण-पत्र जो सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किया गया हो। (स्वप्रमाणित प्रति)।
4. आधार कार्ड या जन-आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणित प्रति)।

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :-

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

कक्षा 9 से 10 में अध्ययनरत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति (केन्द्र प्रवर्तित)

1. पात्रता/शर्तें :-

1. छात्र/छात्रा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का ही हो, छात्र/छात्रा का जाति प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है (केवल प्रथम बार छात्रवृत्ति आवेदन के समय)
2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 09 व 10 के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा के माता-पिता या उनके संरक्षक (माता-पिता जीवित न होने पर) की वार्षिक आय 2.50 लाख से अधिक नहीं हो।
4. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
5. छात्र/छात्रा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित छात्रावास में नहीं रह रहा हो।
6. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए

www.rajsevak.com

उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।

7. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
8. पिछले सत्र 2020-21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछले वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार /आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जनआधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच (Fetch) करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार है : (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति कक्षा 9 एवं 10)

कक्षा	विवरण	दरें	
		डेस्कॉलर	हॉस्टलर
9 व 10	छात्रवृति/माह (अधिकतम 10 माह के लिए)	225 रुपये	525 रुपये
9 व 10	पुस्तकें व एडहॉक ग्राण्ट प्रति वर्ष (एक मुश्त)	750 रुपये	1000 रुपये

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है :-

1. छात्र/छात्रा के माता-पिता (माता-पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) का आय स्वघोषणा पत्र
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/ कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण-पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. विद्यार्थी का स्वयं का जाति प्रमाण-पत्र जो सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किया गया हो (स्वप्रमाणित प्रति)।
4. आधार कार्ड तथा जन-आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणित प्रति)

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :-

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

कक्षा 6 से 10 में अध्ययनरत अन्य पिछड़ा संवर्ग (ओ.बी.सी.) के छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति (केन्द्र प्रवर्तित)

1. पात्रता/शर्तें :-

1. छात्र/छात्रा अन्य पिछड़ा वर्ग का ही हो, छात्र/छात्रा का जाति प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है (केवल प्रथम बार छात्रवृत्ति आवेदन के समय)
2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा के माता-पिता या उनके संरक्षक (माता-पिता जीवित न होने पर) की वार्षिक आय 2.50 लाख से अधिक नहीं हो।
4. छात्रवृत्ति प्राप्त करनें के लिए विद्यार्थी को कक्षा 6 से 10 तक क्रमोन्नत प्रमाण पत्र अनिवार्य है।
5. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
6. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
7. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
8. पिछले सत्र 2020-21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछले वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार/आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जनआधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच (Fetch) करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार है

विवरण	दरें (अधिकतम 10 माह के लिए)	
	डेस्कॉलर	हॉस्टलर
छात्रवृति/माह	100 रुपये	500 रुपये

www.rajsevak.com

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है:–

1. छात्र/छात्रा के माता-पिता (माता-पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) का आय स्वघोषणा पत्र
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/ कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण-पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. विद्यार्थी का स्वयं का जाति प्रमाण-पत्र जो सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किया गया हो (स्वप्रमाणित प्रति)।
4. आधार कार्ड तथा जन-आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणित प्रति)

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

सफाई से जुड़े और स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण व्यवसाय में लगे व्यक्तियों के बच्चों को देय पूर्व मैट्रिक (Unclean) छात्रवृत्ति

1. पात्रता/शर्तें :–

1. छात्र/छात्रा सफाई से जुड़े और स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण व्यवसाय में लगे व्यक्तियों के परिवार का ही हो। (छात्र/छात्रा के परिवार का उक्त व्यवसाय में लिप्त होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है)
2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 01 से 10 तक के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
4. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
5. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
6. पिछले सत्र 2020-21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शालादर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछल वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार /आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जनआधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच (Fetch) करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार हैं :–

Day Scholars		
कक्षा छात्र/छात्रा	छात्रवृति दरें (10माह हेतु)	वार्षिक अनुदान
1 से 10	225	750
Hostellers (छात्रावासी)		
कक्षा छात्र/छात्रा	छात्रवृति दरें (10माह हेतु)	वार्षिक अनुदान
3 से 10	700	1000

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है:–

1. छात्र/छात्रा के माता-पिता (माता-पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) के सफाई से जुड़े और स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण व्यवसाय में लिप्त होने का प्रमाण-पत्र
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/ कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण-पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. आधार कार्ड तथा जन-आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणित प्रति)

4. छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

कक्षा 6 से 10 में अध्ययनरत अति पिछड़ा संवर्ग (एम.बी.सी.) के छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

1. पात्रता/शर्तें :–

1. छात्र/छात्रा अति पिछड़ा वर्ग का ही हो, छात्र/छात्रा का जाति प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है (केवल प्रथम बार छात्रवृत्ति आवेदन के समय) (एम.बी.सी में 1. बंजारा, बालदिया, लबाना 2.गाडिया-लोहार,गाडोलिया 3. गूजर,गुर्जर 4. राईका, रैबारी(देबासी) तथा 5.गडरिया (गाडरी), गायरी जातियां शामिल है)

www.rajsevak.com

2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 06 से 10 तक के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा के माता-पिता या उनके संरक्षक (माता-पिता जीवित न होने पर) की वार्षिक आय 2.00 लाख से अधिक नहीं हो।
4. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
5. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
6. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
7. पिछले सत्र 2020-21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछल वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार /आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जन आधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार हैं :-

क्र.सं.	वर्ग	कक्षा	दरें (10 माह हेतु)
1	छात्र	6 से 8	50/- प्र.माह
2	छात्रा	6 से 8	100/- प्र.माह
3	छात्र	9 से 10	60/- प्र.माह
4	छात्रा	9 से 10	120/- प्र.माह

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है:-

1. छात्र/छात्रा के माता-पिता (माता-पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) का आय स्वघोषणा पत्र
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/ कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण-पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. विद्यार्थी का स्वयं का जाति प्रमाण-पत्र जो सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किया गया हो (स्वप्रमाणित प्रति)।
5. आधार कार्ड तथा जन-आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणित प्रति)

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :-

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

प्री-करगिल एवं पोस्ट-करगिल युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद/स्थायी रूप से विकलांग सैनिकों के आश्रितों को देय छात्रवृति

1. पात्रता/शर्तें :-

1. छात्र/छात्रा प्री-करगिल एवं पोस्ट-करगिल युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद/स्थायी रूप से विकलांग सैनिकों का आश्रित हो।
2. छात्र/छात्रा राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 01 से 12 तक के विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
4. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
5. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
6. पिछले सत्र 2020-21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021-22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछल वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार/आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैंक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जनआधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

www.rajsevak.com

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार हैं :–

क्र.सं.	कक्षा	दरें (अधिकतम 10 माह हेतु)
1	1 से 12	180/– प्र.माह

3. छात्रवृत्ति हेतु प्रथम बार आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है:–

1. छात्र/छात्रा के माता–पिता (माता–पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) के प्री–करगिल एवं पोस्ट–करगिल युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद/स्थायी रूप से विकलांग सैनिक होने का प्रमाणपत्र
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका–प्रमाणपत्र/ कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण–पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. आधार कार्ड तथा जन–आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणितप्रति)।

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :–

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	16.07.2021	31.07.2021

प्रपत्र–4 ''क''

(प्री–करगिल (1.4.99 से पूर्व) एवं पोस्ट–करगिल (1.4.99 के पश्चात्) युद्धों तथा अन्य विभिन्न इन्सरेन्सीज काउंटरों में शहीद/स्थायी रूप से विकलांग सैनिकों के आश्रितों हेतु छात्रवृति आवेदन पत्र)

1. शहीद /स्थायी विकलांग सैनिक का नाम.....
2. शहीद /स्थायी विकलांग होने की तारीख.....
3. रैंक/यूनिट नम्बर.....
4. शहीद/स्थायी विकलांग होने का प्रमाण पत्र संलग्न करें। .....
5. उत्तराधिकारी (फौज के अभिलेख अनुसार) प्रतिलिपि संलग्न करें। उत्तराधिकारी के निवास स्थान का पूर्ण पता भी लिखा जावें। .....
6. शिक्षार्थी का नाम व शहीद के साथ संबंध (आवश्यक प्रमाण पत्र संलग्न किया जावें) .....
7. कक्षा जिसमें अध्ययनरत है .....
8. विद्यालय का नाम व पूर्ण पता.....

प्रति हस्ताक्षर (जिला सैनिक कल्याण अधिकारी)

हस्ताक्षर विद्यार्थी

हस्ताक्षर अभिभावक

भूतपूर्व सैनिकों की कक्षा 11 व 12 में नियमित अध्ययनरत प्रतिभावान पुत्रियों को देय छात्रवृति

1. पात्रता/शर्तें :–

1. छात्रा भूतपूर्व सैनिकों की प्रतिभावान पुत्री हो।
2. राजकीय विद्यालय अथवा राज्य सरकार एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में नियमित एवं पूर्णकालिक कक्षा 11 व 12 की छात्राओं के रूप में अध्ययनरत हो।
3. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृति या भत्ता नहीं मिल रहा हो।
4. किसी भी कक्षा में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी यदि कोई विद्यार्थी अगले वर्ष भी उसी कक्षा में रहता है तो उसे दुसरे वर्ष (अथवा बाद के वर्ष के लिए) उसी कक्षा के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।
5. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.3(29)शिक्षा–6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान यह छात्रवृत्ति देय है।
6. पिछले सत्र 2020–21 में शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में ऑनलाइन आवेदन कर चुके विद्यार्थियों को वर्तमान सत्र 2021–22 में छात्रवृत्ति नवीनीकरण आवेदन हेतु, संस्थाप्रधान द्वारा केवल आय घोषणा पत्र विद्यार्थियों से प्राप्त करते हुए शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल में पिछल वर्ष की प्राप्त स्वत: सूचना के आधार पर जन आधार /आधार ऑथेंटिकेशन (Jan Aadhar / Aadhar Authentication), जन आधार से लिंक विद्यार्थी या परिवार के मुखिया के बैंक खाते से सम्बधित सूचना एवं विद्यार्थी के अभिभावक की वार्षिक आय को अपडेट करना अनिवार्य होगा। संस्थाप्रधान यह भी सुनिश्चित कर लेवे कि विद्यार्थी का बैक खाता जनआधार से लिंक है अन्यथा जनआधार से लिंक परिवार के मुखिया का बैंक खाते को पोर्टल पर फेच करना होगा। नव प्रवेशित विद्यार्थी से समस्त सूचनाऐं प्राप्त करके संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर सम्पूर्ण नवीन ऑनलाइन आवेदन में समस्त सूचनाऐं भरी जानी अनिवार्य होगी।

2. छात्रवृति की दरें इस प्रकार हैं :–

क्र.सं.	कक्षा	दरें (अधिकतम 10माह हेतु)
1	कक्षा 11 एवं 12	100/– प्र.माह

3. आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित समस्त दस्तावेजों की प्रमाणित सत्य प्रतियां ही संलग्न करनी आवश्यक है :

1. छात्र/छात्रा के माता–पिता (माता–पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) के भूतपूर्व सैनिक होने का प्रमाणपत्र (डिस्चार्ज प्रमाण–पत्र एवं परिचय पत्र अथवा जिला सैनिक कल्याण अधिकारी द्वारा जारी प्रमाणपत्र)।
2. छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/कक्षा क्रमोन्नत प्रमाण–पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)।
3. आधार कार्ड तथा जन–आधार कार्ड की छायाप्रति (स्वप्रमाणितप्रति)।

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन से सम्बन्धित तिथि :–

विवरण	प्रारंभ तिथि	अंतिम तिथि
छात्र/छात्रा द्वारा संस्थाप्रधान से रिक्त ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्त करने एवं	16.07.2021	31.07.2021

www.rajsevak.com

पूरित कर मय संलग्नक जमा कराने एवं संस्थाप्रधान द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाऐं ऑनलाइन अपलोड पश्चात् सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि		

भूतपूर्व सैनिकों की कक्षा 11 व 12 में नियमित अध्ययनरत छात्रा के रूप में प्रतिभावान पुत्रियों को देय छात्रवृति योजना

(सैनिक कल्याण अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र – ख)

क्रमांक : दिनांक : .....

प्रमाणित किया जाता है कि श्री..... पद.....संख्या.....भूतपूर्व सैनिक तथा इनकी पुत्री नाम.....कक्षा..... में अध्ययनरत है राजस्थान स्थित ग्राम..... तहसील..... जिला.....के मूल निवासी है।

दिनांक :

जिला सैनिक कल्याण अधिकारी
हस्ताक्षर मय मोहर

राजस्थान सरकार

पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए आवेदन पत्र प्रारूप

वर्ष 2021–22

विद्यार्थी की छात्रवृत्ति यूनीक आई.डी..... (पूर्ति संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल से की जावेगी

विद्यालय का नाम :

विद्यार्थी का स्वप्रमाणित फोटो

छात्रवृत्ति योजना का नाम जिसके लिए आवेदन किया जा रहा है :

विद्यार्थी का विवरण

1 विद्यार्थी का नाम : .....
2 जन्म तिथि : .....
3 धर्म (हिन्दु/मुस्लिम/सिख/ईसाई/पारसी/ बौद्ध/जैन/अन्य)
4 लिंग (पुरूष/महिला/ट्रांसजेण्डर) :.....
5 कक्षा जिसमें अध्ययनरत है :.....
6 विद्यार्थी का S.R. नम्बर (विद्यालय द्वारा भरा जावे).....
6 गत कक्षा के विद्यालय का नाम व पता :.....
7 गत वर्ष की कक्षा का क्रमोन्नत प्रमाण पत्र

कक्षा	पूर्णांक	प्राप्तांक	ग्रेड/ प्रतिशत	कक्षा क्रमोन्नत

8 जाति वर्ग (अजा/अजजा/अन्य पिछड़ा वर्ग/अति पिछड़ा वर्ग/ सामान्य/अल्पसंख्यक) :.....
9 डे–स्कॉलर/हॉस्टलर :.....
10 विद्यार्थी का आधार नम्बर/एनरोलमेंट नम्बर :.....
11 जन–आधार/एक्नोलेजमेन्ट नम्बर :.....
12 छात्र का बैक खाता जन–आधार कार्ड से लिंक है (हां/नहीं) :..... .....
13 विद्यार्थी का मोबाईल नम्बर :.....
14 विद्यार्थी का ई–मेल आई.डी. :.....

विद्यार्थी के परिवार का विवरण

15 पिता का नाम :.....
16 माता का नाम :.....
17 संरक्षक का नाम (माता–पिता के जीवित ना होने पर):.....
18 परिवार की वार्षिक आय:.....
19 स्थाई पता/जिले का नाम/राज्य का नाम :.....
20 राशन कार्ड नम्बर:.....
21 क्या विद्यार्थी इस छात्रवृति के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था या सरकारी विभाग से कोई सहायता प्राप्त कर रहा है (हाँ/नहीं) यदि हाँ तो विवरण दें :.....
22 केवल अस्वच्छकार योजनान्तर्गत अग्रलिखित प्रमाण–पत्र का उल्लेख करें जैसे:– (1) हाथ से मैला ढोने का, (2) टेनर और फ्लेयर्स (चर्म एवं चर्मशोध से संबंधित) (3) कचरा बीनने का, (4) जोखिम के कार्यो में लगे होने का

क्र.सं. योजना के विस्तृत दिशानिर्देशों के अनुसार संलग्न किए जाने वाले दस्तावेज संलग्न कर (✓) करें

1 माता–पिता (माता–पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) का आय स्वघोषणा–पत्र ( )
2 छात्र/छात्रा की गत वर्ष की परीक्षा की अंकतालिका/क्रमोन्नत प्रमाण पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)। ( )
3 विद्यार्थी का स्वयं का जाति प्रमाण–पत्र (स्वप्रमाणित प्रति)। ( )
4 विद्यार्थी की आधार कार्ड तथा जन–आधार/भामाशाह कार्ड (स्वप्रमाणित प्रति)। ( )
5 माता–पिता (माता–पिता के जीवित न होने पर संरक्षक) के सफाई से जुड़े और स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण व्यवसाय में लिप्त होने का प्रमाण–पत्र ( )
6 माता–पिता के प्री–करगिल एवं पोस्ट–करगिल युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद/स्थायी रूप से विकलांग सैनिक होने का प्रमाणपत्र ( )
7 भूतपूर्व सैनिक होने का प्रमाणपत्र (डिस्चार्ज प्रमाण–पत्र एवं परिचय पत्र अथवा जिला सैनिक कल्याण अधिकारी द्वारा जारी प्रमाणपत्र)।

नोट :– वांछित दस्तावेज संलग्न करते हुए सामने के कॉलम में (✓) का निशान अंकित करें।

हस्ताक्षर विद्यार्थी

माता–पिता/संरक्षक द्वारा घोषणा

मैं ..... (माता–पिता/संरक्षक) घोषणा करता हूँ/करती हूँ की मैने योजना संबंधी सभी नियमों/निर्देशों की भली भांति अध्ययन कर लिया है। छात्र/छात्रा के मूल दस्तावेज में अंकित आधार नम्बर, जन–आधार कार्ड, सही है एवं छात्र/छात्रा किसी अन्य प्रकार की छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं कर रहा है। विद्यार्थी का बैंक खाता उसके आधार से सीडेड तथा जन–आधार कार्ड से लिंक है। मेरे द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त

www.rajsevak.com

विवरण, संलग्न दस्तावेज, इस घोषणा में अंकित सूचनाएं गलत पाए जानें की स्थिति में यदि छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं होती है तो इसका समस्त दायित्व मेरा स्वयं का होगा। भविष्य में किसी भी प्रकार की जांच प्रक्रिया में मेरे द्वारा प्रस्तुत सूचनाएं अथवा दस्तावेज गलत पाए जाने की स्थिति में मेरे विरूद्ध पुलिस/वैधानिक कार्यवाही की जा सकेगी तथा मैं प्राप्त छात्रवृत्ति वापिस जमा करवाने का वचन देता हूँ/देती हूँ।

दिनांक :

हस्ताक्षर जांचकर्ता/कक्षाध्यापक माता-पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा..... पुत्र/पुत्री.....के छात्रवृत्ति आवेदन की जांच कर ली गई है आवेदन पत्र के साथ समस्त वांछित संलग्नक लगे हुए हैं। छात्र/छात्रा द्वारा प्रस्तुत आधार नम्बर, जन-आधार कार्ड एवं आय घोषणा पत्र आदि को शाला दर्पण पोर्टल पर अपडेट कर लिया गया है। अत: छात्र/छात्रा को सत्र 2021-22 की छात्रवृत्ति स्वीकृत की जाती है।

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर

मय मोहर

आय का घोषणा पत्र

(विद्यार्थी के पिता/माता/संरक्षक द्वारा भरा जावेगा)

पूर्व मैट्रिक छात्रवृति योजना में वर्ष 2021-22 के लिए

मैं .....

पुत्र/पुत्री/पत्नी.....

उम्र.....वर्ग(केटेगरी).....

निवासी .....घोषणा करता/करती हूँ कि मेरी समस्त स्रोतों से कुल वार्षिक आय.....रुपये है।

आय संबंधी उक्त विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है। मुझे इस तथ्य की जानकारी है कि मेरे द्वारा उद्घोषित आय गलत अथवा मिथ्या होना भारतीय दंड संहिता के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध है।

विद्यार्थी का नाम .....

विद्यार्थी की कक्षा .....

विद्यार्थी से घोषणाकर्ता का संबंध .....

हस्ताक्षर घोषणाकर्ता

नोट : समस्त उपर्युक्त वर्णित छात्रवृत्तियों की अन्तिम तिथि 16.08.2021 तक बढ़ा दी है।

माह : अगस्त, 2021

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
02.08.21	सोमवार	जयपुर	12	हिन्दी साहित्य	1	प्रेमधन की छाया स्मृति
03.08.21	मंगलवार	जोधपुर	11	राजनीति विज्ञान	1	राजनीतिक सिद्धान्त एक परिचय
04.08.21	बुधवार	उदयपुर	6	हिन्दी	12	संसार पुस्तक है
05.08.21	गुरुवार	बीकानेर	12	भूगोल	7	खनिज एवं ऊर्जा संसाधन
06.08.21	शुक्रवार	कोटा	7	सामाजिक विज्ञान	3	हमारी बदलती पृथ्वी
07.08.21	शनिवार	जयपुर		No Bag Day	गैरपाठ्यक्रम	
09.08.21	सोमवार	जोधपुर	11	राजनीति विज्ञान	2	स्वतंत्रता
10.08.21	मंगलवार	उदयपुर	12	राजनीति विज्ञान	1	शीतयुद्ध का दौर
11.08.21	बुधवार	बीकानेर	12	जीव विज्ञान	6	वंशागति का आणविक आधार
12.08.21	गुरुवार	कोटा	11	अंग्रेजी अनिवार्य	–	Grammar Modals
13.08.21	शुक्रवार	जयपुर	12	जीव विज्ञान	11	जैव प्रौद्योगिकी सिद्धान्त एवं प्रक्रम
14.08.21	शनिवार	जोधपुर		No Bag Day	गैरपाठ्यक्रम	
16.08.21	सोमवार	उदयपुर	12	इतिहास	1	ईंट मनके तथा अस्थियाँ
17.08.21	मंगलवार	बीकानेर	7	सामाजिक विज्ञान	6	नगर, व्यापारी और शिल्पजन
18.08.21	बुधवार	कोटा	4	पर्यावरण अध्ययन	15	हमारे गौरव
20.08.21	शुक्रवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	9	पानी रे तेरी अजब कहानी
21.08.21	शनिवार	उदयपुर		No Bag Day	गैरपाठ्यक्रम	
23.08.21	सोमवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	3	कुछ खास हैं हम
24.08.21	मंगलवार	बीकानेर	8	संस्कृत	6	गृहं शून्य सूतां विना
25.08.21	बुधवार	कोटा	12	हिन्दी साहित्य	4	केदारनाथ सिंह- बनारस
26.08.21	गुरुवार	जयपुर	6	हिन्दी	5	अक्षरों का महत्त्व
27.08.21	शुक्रवार	जोधपुर	8	संस्कृत	3	डिजीभारतम्
28.08.21	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम जन्माष्टमी		
31.08.21	मंगलवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	2	भारत का भौतिक स्वरूप

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● कार्य दिवस-24 ● कुल प्रसारण दिवस अवकाश-07 ● पाठ्यक्रम आधारित-20 ● गैरपाठ्यक्रम-4

www.rajsevak.com

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी : माह अगस्त प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.08.2021 से 31.08.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

क्र.स	दिनांक	वार	प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
			मीना की कहानियां	डाइट/यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्य पुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
2	02.08.21	सोमवार	जरा सुनो ना	यूनिसेफ	4	पर्यावरण अध्ययन	11	अच्छा खाना मिलकर खाना	जोधपुर	निरंजना पंवार	संयुक्ता गुप्ता	9	उर्दू	2	बहादुर शाह का हाथी	जोधपुर	हीना कौसर	मजाहिर सुल्तान जई
3	03.08.21	मंगलवार	कृष्णा की किताबें	यूनिसेफ	7	सा0विज्ञान–हमारे अतीत	1	हजार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों की पड़ताल	बीकानेर	अरविन्द बीठू	रेणु बाला चौहान	9	विज्ञान	1	हमारे आस पास के पदार्थ	बीकानेर	सुनिता गुलाटी	नीलम पारीक
4	04.08.21	बुधवार	नदी के किनारे	यूनिसेफ	5	हिन्दी	1	हम भारत के भरत खेलते	कोटा	आभा दाधीच	मंजेश चौरसिया	10	विज्ञान	2	धातु एवं अधातु	कोटा	रोहित प्रजापति	डॉ0गिरीराज किशोर दाधीच
5	05.08.21	गुरूवार	भाग सुनिता भाग	यूनिसेफ	7	गणित	2	भिन्न एवं दशमलव	जयपुर	डॉ0वर्तिका गुलाटी	महेश बाबू शर्मा	11	राजनीति विज्ञान	1	संविधान क्यों और कैसे?	जयपुर	रमेश चन्द कुमावत	विजयश्री कंवर
6	06.08.21	शुक्रवार	आज की ताजा खबर	यूनिसेफ	8	विज्ञान	2	सूक्ष्म जीव मित्र एवं शत्रु	उदयपुर	डॉ0अंजली कोठारी	डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा	12	जीव विज्ञान	1	जीवों मे जनन	उदयपुर	अनिता त्यागी	डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा
7	07.08.21	शनिवार	दौड़	यूनिसेफ	No Bag Day DIET-Jaipur 1- वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता–डॉ. किरण सिडाना 2. पर्यावरण संतुलन का मानव जीवन पर प्रभाव–लक्ष्मी शर्मा													
9	09.08.21	सोमवार	हाथ बढ़ाओ	यूनिसेफ	4	पर्यावरण अध्ययन	1	बचपन की यादें	उदयपुर	शिखा गुप्ता	डॉ0सत्य नारायण सुथार	10	हिन्दी क्षितिज	1	काव्य खंड पद–सूरदास	उदयपुर	डॉ0 बिन्नू कुंवर शेखावत	डॉ0मीना यादव
10	10.08.21	मंगलवार	जरा बचके	यूनिसेफ	6	सा0विज्ञान	1	विविधता की समझ	बीकानेर	चन्द्रप्रभा	रीता आहुजा	11	इतिहास	2	लेखन कला एवं शहरी जीवन	उदयपुर	सबिना कोहरी	डॉ0ओम प्रकाश विश्नोई
11	11.08.21	बुधवार	पर्ची उड़ाओ	यूनिसेफ	8	विज्ञान	5	कोयला व पैट्रोलियम	जयपुर	निधि अजय पच्चीसिया	छुट्टन लाल मीणा	10	सामाजिक विज्ञान	1	सत्ता की साझेदारी	जयपुर	हरिओम मीणा	संतोष मीणा

www.rajsevak.com

12	12.08.21	गुरूवार	तस्वीर बनाओ	यूनिसेफ	5	अंग्रेजी	5	Adding Colours	जोधपुर	श्रवण कुमार	मजाहिर सुल्तान जई	10	उर्दू	1	हम्द	जोधपुर	अकमल नईम	मजाहिर सुल्तान जई
13	13.08.21	शुक्रवार	हरी भरी पढ़ाई	यूनिसेफ	4	अंग्रेजी	7	A Railway Satation	कोटा	पूजा झाम	नवीन गहलोत	9	विज्ञान	7	जीवों में विविधता	कोटा	अनु गुप्ता	अल्का शर्मा
14	14.08.21	शनिवार	पॉकेट मार	यूनिसेफ	No Bag Day DIET-Jodhpur 1-आओ विज्ञान से सीखो–श्री केसरसिंह राजपुरोहित 2–शिक्षक की राष्ट्र निर्माण में भूमिका–श्रीमती संयुक्ता गुप्ता													
16	16.08.21	सोमवार	सुरीला संगीत	यूनिसेफ	8	गणित	1	परिमेय संख्याऐं	जयपुर	सोहन लाल गुप्ता	महेश बाबू शर्मा	10	सा0विज्ञान	2	भारत में राष्ट्रवाद	जयपुर	सुरेन्द्र विश्नोई	संतोष यादव
17	17.08.21	मंगलवार	शादी का तोहफा	यूनिसेफ	7	हिन्दी	6	रक्त और हमारा शरीर	जोधपुर	अल्का शर्मा	मजाहिर सुल्तान जई	11	अर्थशास्त्र	6	ग्रामीण विकास	जोधपुर	मंजू माकड़	श्याम सुन्दर सोलंकी
18	18.08.21	बुधवार	बड़ा नाम करेगा	यूनिसेफ	3	पर्यावरण	9	भोजन मे विविधता	बीकानेर	श्याम सुन्दर शर्मा	नीलम पारीक	10	अंग्रेजी	7	The necklace	बीकानेर	शैफाली	डॉ0ओम प्रकाश विश्नोई
20	20.08.21	शुक्रवार	रीता को रोको	यूनिसेफ	5	हिन्दी	6	स्वस्थ तन सुखी जीवन	कोटा	नवीन गहलोत	आभा दाधीच	11	हिन्दी (आरोह)	6	स्पीति में बारिश	कोटा	नीना त्रिवेदी	डॉ0आजाद सिंह
21	21.08.21	शनिवार	साथी हाथ बढ़ाना	यूनिसेफ	No Bag Day DIET- Udaipur विद्यार्थियों का मनपंसद दिवस– No Bag Day डॉ. अमृता दाधीच													
23	23.08.21	सोमवार	तन की शक्ति	यूनिसेफ	4	हिन्दी	5	दशहरा	जयपुर	कृष्णा शर्मा	संतोष मीणा	11	जीव विज्ञान	1	जीव जगत	जयपुर	सुजित शर्मा	डॉ0रश्मि गोगर
24	24.08.21	मंगलवार	सबसे अच्छा दोस्त	यूनिसेफ	6	संस्कृत	6	समुद्र तटः	जोधपुर	डॉ0मीना जांगिड़	श्याम सुन्दर सोलंकी	11	भौतिक विज्ञान	5	गति के नियम	जोधपुर	डॉ0सोनू सांखला	संयुक्ता गुप्ता
25	25.08.21	बुधवार	अंजान शक्स	यूनिसेफ	6	सामाजिक विज्ञान	7	अशोक एक अनोखा सम्राट	बीकानेर	संजय कुमार खत्री	सीमा शर्मा	11	हिन्दी साहित्य	6	खाना बदोश	बीकानेर	निर्मला गोदारा	नीलम पारीक
26	26.08.21	गुरूवार	कान, आँख खोलके	यूनिसेफ	3	हिन्दी	2	मीठे बोल	उदयपुर	सुचित्रा शर्मा	अंजना जैन	10	संस्कृत शेमुषी	2	बुदि्र्बलवती सदा	उदयपुर	कल्पना त्रिवेदी	संतोष कुमार व्यास
27	27.08.21	शुक्रवार	कमाल की कबड्डी	यूनिसेफ	6	अंग्रेजी	7	Fair Play	कोटा	प्रीती जैन	नवीन गहलोत	9	विज्ञान	6	ऊतक	कोटा	ओम प्रभा मेहता	अल्का शर्मा
28	28.08.21	शनिवार	छुपन छुपाई	यूनिसेफ	No Bag Day DIET-Bikaner 1- समय निष्ठा–रितु चौधरी 2– चरित्र निर्माण–रीता आहूजा													
31	31.08.21	मंगलवार	सावधान	यूनिसेफ	7	विज्ञान	7	मौसम जलवायु तथा जलवायु के अनुरूप जंतुओं द्वारा अनुकूलन	जोधपुर	रीना चौहान	गायत्री भारद्वाज	12	अर्थशास्त्र	5	राष्ट्रीय आय की अवधारणा	जोधपुर	मंजू वर्मा	गायत्री भारद्वाज

www.rajsevak.com

नैतिक शिक्षा

किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर इंटरनेट का प्रभाव

❒ डॉ. जयश्री माथुर

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इंटरनेट की दुनिया का प्रभाव समस्त मानव जाति पर पड़ा है जिससे हमारे विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थी भी अछूते नहीं रहे हैं। कोविड-19 के दौरान सरकार द्वारा महामारी को रोकने के प्रयास के अंतर्गत विद्यालयों को लंबे समय तक बंद रखना पड़ा है। किन्तु विद्यार्थियों के अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न ना हो इसके लिए सरकार द्वारा नए-नए नवाचार किए गए हैं। किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर इन नवाचारों द्वारा अध्ययन करने में इंटरनेट ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। हमारे किशोर विद्यार्थियों पर इंटरनेट की दुनिया ने न केवल उनके जीवन के शैक्षिक क्षेत्र को ही प्रभावित किया है, अपितु विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। इंटरनेट की दुनिया ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों के जीवन के प्रत्येक पक्ष को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित किया है-

शैक्षिक क्षेत्र : ऑनलाइन शिक्षण के अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की दुनिया में पहुँच वैश्विक स्तर तक हो गई है। इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री द्वारा विद्यार्थियों में अपनी रुचि के विषय का गहराई से स्वयं अध्ययन करने की आदत, मॉडल, प्रोजेक्ट निर्माण कार्य आदि का कौशल विकसित हुआ है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, बैंक आदि जैसी अन्य किसी प्रतियोगिता परीक्षा के लिए तैयारी करने हेतु इंटरनेट पर उपलब्ध टेस्ट सीरिज, माक टेस्ट, ऑनलाइन टेस्ट आदि का विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। विभिन्न शिक्षकों द्वारा इंटरनेट पर बनाए गए वीडियो, पीपीटी, आलेख, एप्स, टेस्ट सीरिज आदि द्वारा विद्यार्थी सीख रहे हैं। इसमें अतिश्योक्ति नहीं कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट का उपयोग कर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी स्वरोजगार हेतु विद्युत उपकरण मरम्मत, सॉफ्टवेयर का उपयोग एवं कृषि के नए तरीकों को सीखकर, अपने अभिभावकों की सहायता कर रहे हैं। किन्तु ऐसे क्षेत्र जहाँ नेटवर्क की समस्या है, वहाँ विद्यार्थी शैक्षिक क्षेत्र में अधिक लाभान्वित नहीं हो पाए हैं।

शारीरिक क्षेत्र : अभिभावक तथा शिक्षकों का मानना है कि इंटरनेट पर उपलब्ध मनोरंजक सामग्री जैसे ऑनलाइन गेम्स, वीडियो, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर विद्यार्थी अधिक समय व्यतीत करते हैं जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी शारीरिक गतिविधियों जैसे मित्रों के साथ घर से बाहर मैदान में खेलना, घूमना, व्यायाम आदि कार्यों पर कम समय व्यतीत करते है। दिन भर मोबाइल, लैपटॉप अथवा कम्प्यूटर का उपयोग करने के कारण उनकी नेत्र ज्योति बहुत अधिक प्रभावित हुई है। किशोर बालक-बालिकाओं का वजन बढ़ने लगा है। अनिद्रा, गर्दन, कमर, हाथ, सिर में दर्द आदि शारीरिक समस्याओं का उन्हें अक्सर सामना करने को मिलता है। तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों पर इंटरनेट का शारीरिक प्रभाव नकारात्मक रूप से कम रहा है।

मानसिक क्षेत्र- इंटरनेट की दुनिया ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों को मानसिक रूप से भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। मोबाइल के माध्यम से किशोर बार-बार इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए इतने अभ्यस्त हो चुके है कि यदि उन्हें इंटरनेट की सुविधा न मिले तो उन्हें अपना जीवन नीरस व ऊबाऊ लगने लगता है। इंटरनेट का उपयोग करने का मौका तलाशने के लिए किशोर अकेला रहना पसंद करने लगे हैं। अपने मन में उत्पन्न जिज्ञासाओं को आजकल किशोर घर के बड़ों और मित्रों के साथ साझा करने की अपेक्षा, स्वयं ही इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न साइट्स से हल करने का प्रयास करने लगे हैं। यह सभी कारण किशोर बालक-बालिकाओं के तार्किक व मानसिक योग्यता को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक क्षेत्र- किशोरों द्वारा इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग सोशल साइट्स और सोशल मीडिया के द्वारा किया जाता है। इसके कारण किशोर अपने परिवार के सदस्यों के साथ कम समय व्यतीत करते हैं। घरेलू कार्यों में अभिभावकों को कम सहयोग देते हैं। आस-पास मित्रों के साथ खेलना व मिलना कम हो गया है। इसके विपरित दूर के रिश्तेदारों व मित्रों के साथ सोशल नेटवर्क पर अपनी बातों को साझा करना, अपने जीवन से जुड़े विभिन्न फोटो, वीडियो आदि समय-समय पर भेजना उन्हें पसंद आने लगा है। सामाजिक कार्यों में किशोरों की सहभागिता कम होती जा रही है। वह अपने ही बनाए गए समूह में रहना पसंद करने लगे हैं।

सांस्कृतिक क्षेत्र- इंटरनेट के कारण किशोरावस्था के विद्यार्थियों के सांस्कृतिक पहलू भी अत्यधिक प्रभावित हुए है। इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वीडियो और साइट्स को देखकर विभिन्न क्षेत्रों के त्योहार, उत्सव आदि मनाने लगे हैं। घर पर मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सव जैसे जन्मदिन, वर्षगांठ, त्योहार आदि मनाने के तरीकों में बदलाव आया है। किशोरों के पहनावे, बोलचाल, भोजन व रहन-सहन पर इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री ने अपनी गहरी छाप छोड़ी है। विद्यालयों में भी किशोर इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वीडियो के माध्यम से उत्सवों के लिए विद्यालय में कार्यक्रम तैयार करते हुए दिखाई दे जाते हैं। इंटरनेट के माध्यम से किशोर सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति को समझ भी रहे हैं व उनके विभिन्न पहलुओं को अपने जीवन में अपना भी रहे हैं।

आर्थिक क्षेत्र- विद्यार्थियों द्वारा इंटरनेट का अधिक उपयोग किए जाने के कारण अभिभावकों पर महंगे मोबाइल, लैपटॉप व कम्प्यूटर आदि खरीदने का आर्थिक बोझ बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त इंटरनेट के डाटा चार्ज का खर्च भी अभिभावकों के लिए एक बड़ी समस्या बना हुआ है। वहीं कुछ किशोर खुद के एप्स व वीडियो बनाकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बन रहे हैं। विभिन्न प्रकार के व्यवसाय व कॅरियर निर्माण हेतु भी किशोर इंटरनेट के माध्यम से कई जानकारियाँ प्राप्त कर रहे हैं। इंटरनेट के माध्यम से किशोर बैंकिंग, बिल भुगतान, विभिन्न संस्थाओं में प्रवेश हेतु आवेदन, प्रतियोगी परीक्षाओं के फॉर्म आदि भरना आदि कार्यों में घर के बड़ों का सहयोग भी कर रहे है। नई तकनीक का उपयोग किशोर सकारात्मक दिशा में करें, इसके लिए शिक्षक व अभिभावक सहयोग करें और उनका आत्मविश्वास बढ़ाए।

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर (राज.)
मो: 9413915956

www.rajsevak.com

लोकगीतों की विविधता

❒ ओम जोशी

भारत में लोक गीतों की अपनी विशिष्ट पहचान है। ये लोक गीत चाहे सिक्किम, मिजोरम और त्रिपुरा की गारो, खासो, कुकी, अंगामी, बोडो और भूटिया जनजातियों के हो चाहे गुजरात और राजस्थान की कोली, भील, गरासिया और मीणा आदि जनजातियों में गाए जाने वाले गीत हो। सामाजिक और भौगोलिक तथा मौसमी परिस्थितियों के कारण उनके मानस पर विशेष प्रकार का असर पड़ता है। यही असर उनके जीवन की अनेक अभिव्यक्तियों के रूप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उदाहरण के तौर पर सुदूर पश्चिमी रेगिस्तान में जहाँ रेत ही रेत है जहाँ जीवन के विशिष्ट साधन और सुविधाएँ बहुत कम है, जहाँ मनुष्य को अपनी आजीविका के लिए बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं वहाँ राग रंग की मात्रा प्रायः कम रहा करती है और जो भी थोड़ी बहुत होती है उसमें सभी लोग सम्मिलित हो जाते हैं क्योंकि राग रंग के जो भी थोड़ी बहुत साधन उपलब्ध होते हैं उनको पूरी तरह उपयोग में लाने की बुद्धिमानी भी यह लोग बहुत किया करते हैं। ऐसा नहीं करे तो इस शुष्क दुनिया में इनका जीना ही मुश्किल हो जाए। ऐसे लोकगीत प्रायः रात्रि में जब दिन भर की थकान के बाद लोग एक जगह जमा हो जाते हैं जैसे कि गुड़ाल और कोटड़ी में तब गाए जाते हैं। चारों ओर बालू ही बालू और खुला वातावरण होने के कारण उनके गीतों में एक विशेष प्रकार की गूंज होती है। लोग गाते हुए अपनी धुनों की प्रतिध्वनि स्वयं अपने कानों से सुनते हैं और उसका रस लेते हैं। यही बात मेघालय में पहाड़ी जनजातियों खासी और गारों पर भी लागू होती है। धीरे-धीरे ये संस्कार गहरे हो जाने से उनके गीतों की गायकी में भी गूंज का संचार होता है तथा प्रत्येक स्वर रूक कर उसको लम्बाने की प्रवृत्ति प्रबल हो जाती है। यह कारण है कि मरुभूमि में गाए जाने वाले सभी गीत धीमी चाल में गाए जाते हैं इसी धीमी चाल के कारण वे अधिक जन समुदाय के लिए ग्राह्य तथा आनंददायक भी बन जाते हैं। जैसे कि बाड़मेर, बीकानेर और जैसलमेर की पणिहारी उदयपुर मेवाड़ की पनिहारी में स्वर रचना एक जैसी होते हुए भी उनकी चाल तथा रंगत में जमीन आसमान का अंतर होता है। इसी तरह बीकानेर की तरफ गाई जाने वाली पीपली और उदयपुर मेवाड़ की पीपली की धुनें भी प्रायः एक जैसी होते हुए भी दोनों की चालों में बहुत अंतर होता है। यही हाल इन्डोनी और गणगौर आदि गीतों का है।

कोटा, उदयपुर, बूंदी तथा कुछ अंश में जयपुरी लोकगीतों की लएं अपेक्षाकृत द्रुत होती है वे अधिकांश खटके प्रधान है आलाप और गूंज प्रधान नहीं। गूंज के लिए इन क्षेत्रों की भौगोलिक स्थितियां अनुकूल नहीं है। जिस तरह रेगिस्तान की ठंडी रातों में ऊंट पर चलने वाला यात्री अपने गीतों की स्वर लहरियों की गूंज का आनंद लेता हुआ अपनी यात्रा को सुगम और सरल बनाता है। गीतों की प्रतिध्वनि वह स्वयं सुनाता है। वैसी बात इन क्षेत्रों में नहीं होती। स्वयं गाए हुए गीतों की स्वर लहरियां दूर तक नहीं फैल पाती है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है तथा उनकी रंगत अल्पजीवी होने से वे स्वभाव से ही द्रुत बन जाती है। राजस्थानी लोकगीतों की गायकी का यह बहुत ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो लगभग सभी राजस्थानी गीतों को इस विशेषता के अनुसार इन दो श्रेणियों में विभक्त कर देता है।

यह दोनों ही स्वरूप अपने-अपने दायरे में अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। इन लोक गीतों की गायकी में एक मोटा अंतर यह भी है कि गीत जब किसी सधे हुए शास्त्रीय कलाकार द्वारा गाए जाते हैं तो उनकी मूल स्वर रचना वही रहते हुए भी उनकी गायकी में विलक्षण परिवर्तन हो जाता है। शास्त्रीय गायक लोकगीतों की प्रत्येक पंक्ति में एक विशेष कंपन और मुर्कियों का प्रयोग करके उसे आकर्षक और चटकीला करने की कोशिश करता है। निश्चय ही इस तरह गाए हुए गीत अधिक मंजे हुए और रोचक लगते हैं। शास्त्रीय संगीत पद्धति की लोच अवश्य ही आ जाती है परंतु लोकगीतों की गायकी की आत्मा से वे दूर हो जाते है। जब इस गायकी का विवेचन किया जाता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि उनके शब्दों के उच्चारण के भेद से गायकी में अंतर आ जाता है जैसे कि मारवाड़ और बीकानेर की तरफ राजस्थानी भाषा के शब्द उच्चारण में ओंकार बहुला हो जाते हैं और शब्दों के उच्चारण के साथ ही स्वरों की गायकी भी ओंकार बहुला हो जाती है। इन्हीं कारणों से भारतीय लोक गीतों को हम चार वर्गों में बाँट सकते हैं-

1. वे लोकगीत जो विशुद्ध ग्रामीण वातावरण में गाए जाते हैं और जो केवल स्वांत सुखाय होते हैं, यह गीत सामुदायिक होते है और विवाह समारोह उत्सव और पर्व आदि पर विशेष रूप से गाए जाते हैं।
2. वे गीत जो व्यवसायिक तथा पेशेवर जातियों द्वारा अपनी आजीविका कमाने हेतु गाए जाते हैं और जिनमें गायन वादन की विशिष्ट परंपराएं होती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी अपने कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त होते रहते हैं।
3. वे गीत जो शहरी वातावरण में शहरी लोगों द्वारा शौकिया ढंग से गाए जाते हैं।
4. वे गीत जो सधे हुए शास्त्रीय कलाकारों द्वारा गाए जाते हैं और जिन्हें वे अपनी विशिष्ट रंगत देते हैं।

इन उपर्युक्त शैलियों में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली शैली पेशेवर जातियों द्वारा गाए जाने वाली लोक गीतों की है। इन श्रेणी के गीतों की कोई निश्चित संख्या नहीं है वे सर्वाधिक लोकप्रिय है और उनका चलन केवल गाने वालों तक ही नहीं अपितु आम लोगों में भी है। जैसे कि पंडवानी लोक गायकी तीजनबाई के गाए गीत हो या मारवाड़ के मांगणियार कलाकारों द्वारा गाए गए लोक गीत हो या महाराष्ट्र के लावणी हो या कि दक्षिणी क्षेत्र की कथकली पृष्ठभूमि से सम्बन्धित संगीत हो। श्रोताओं की रुचि को आकर्षित करने की उनमें क्षमता है अथवा यूं कहे कि उनमें प्रदर्शनात्मक गुण कूट-कूट कर भरे हैं। प्रदर्शनात्मक गुण उन्हीं गीतों में होते हैं जिनमें स्वरों तथा शब्दों के विविधता के साथ कलात्मक चमत्कार हो। चमत्कार और माधुर्य दृष्टि से व्यवसायिक जातियों द्वारा गाए हुए लोकगीत ही सर्वाधिक मधुर प्रचलित और आकर्षक है। यही गीत लगभग सभी प्रदर्शनों तथा सार्वजनिक आयोजनों की शोभा बढ़ाते हैं। व्यवसायिक होने के नाते उनमें चमत्कारिक गुण है और श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर देने की विलक्षण क्षमता है। आइए इस विलक्षण क्षमता और प्रतिभा का हम सब मिलकर संरक्षण करें।

व्याख्याता
जोशियों का निचला बास, बालार्क मन्दिर के पास,
बाड़मेर (राज.)-344001
मो:9460086907

www.rajsevak.com

पुस्तकों की महत्ता

किताबें कुछ कहना चाहती हैं

❒ शालिनी थ्योफ्लस

कहा गया है कि 'पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी मित्र होती है।' ऐसी मित्र जो जीवन यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर साथी, प्रेरक, मार्गदर्शक शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती रही है। परन्तु सूचना एवं संचार क्रान्ति के इस युग में आज की पीढ़ी टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, वीडियो एवं मोबाइल गेम में ही अपने ज्ञान एवं मनोरंजन को खोज रहे हैं। इसका दुष्परिणाम ये हुआ है कि बच्चे एकाकी हो रहे हैं। संवेदनाएं खत्म हो रही है। आक्रोश बढ़ रहा है और संयम, धैर्य, विश्वास जैसे मूल्य अपना अस्तित्व खो रहे हैं।

पुस्तकों एवं जीवन मूल्यों के अस्तित्व पर मंडराते हुए इस खतरे को भाँपते हुए यूनेस्कों ने एक दिन पुस्तकों के नाम समर्पित करते हुए **23 अप्रैल को 'विश्व पुस्तक दिवस' घोषित किया है।** 23 अप्रैल ही क्यों? इसका कारण है कि अंग्रेजी साहित्य के महान साहित्यकार विलियम शेक्सपीयर के पुण्यतिथि दिवस पर जिनकी पुस्तकें साहित्य को समृद्ध करने एवं जीवन के विविध रंगों को उकेरने में अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। परन्तु जब देश एवं विदेश के परिप्रेक्ष्य में इस आयोजन के उद्देश्य पर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि विश्व पुस्तक दिवस का मूल उद्देश्य जीवन में पुस्तकों के महत्त्व को पुनः याद दिलाना मात्र ही परन्तु उसमें समाहित है–

- पुस्तकों को पुनः जनाधार प्रदान कर उनके प्रति वही लगाव पैदा करना।
- नई पीढ़ी में अध्ययनशीलता, कल्पना बोध एवं सौंदर्य बोध जागृत करना।
- पुस्तकों के माध्यम से बालक का समाजीकरण करना।
- पुस्तकों के रंगीन संसार, विविधता, पात्रों की रोचकता से नई पीढ़ी को जोड़ना।

अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार Francis Bacon के शब्दों में पुस्तकों की विविधता को समझे तो वह इस प्रकार है–

''Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digeste'' that is, some books are to be read only in parts; others to be read but not curiously; and some few are to be read wholly and with diligence and attention.

पुस्तकों के इस अन्तर को तभी जानेंगे जब आज बच्चे उनके करीब जाएंगे और अध्ययन करेंगे।

अब प्रश्न ये है कि आज के बालकों को रुझान पुस्तक अध्ययन की ओर लाए कैसे? कुछ प्रयास विद्यालय स्तर पर किए जा सकते हैं जो इस प्रकार है–

1. विद्यालय में 'बुक क्लब' की स्थापना की जा सकती है साहित्य अध्ययन एवं पुस्तकालय में विविध पुस्तकों में रुचि रखने वाले बालक–बालिकाओं को इसका सदस्य बनाकर उनके द्वारा पढ़ी गई रुचिकर पुस्तक, बाल साहित्य का सार प्रार्थना सभा व सामूहिक कार्यक्रमों में करने को कहे एवं अन्य की उत्सुकता जागृत करें। उस पुस्तक को प्रदर्शित भी करें।
2. वर्ष 2021 (वर्ल्ड बुक डे) विश्व पुस्तक दिवस का थीम है 'शेयर अ स्टोरी' यही कार्य सप्ताह के एक दिन विद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है। यह कहानी कहाँ पढ़ी, लेखक एवं क्यों पसंद आई, की व्याख्या सहित।
3. 'गिफ्ट अ बुक'–की थीम पर छोटी–छोटी चित्रकथाएँ, लोक कथाएँ, जातक कथाएँ, रंगीन कहानियाँ आदि की पुस्तक छोटे विद्यार्थियों को उपहार स्वरूप दी जाए। एवं पढ़ने को प्रेरित किया जाए।
4. पुस्तकालय से सर्वाधिक बुक इश्यू करवाने एवं पढ़ने वाले छात्र/छात्रा को वार्षिकोत्सव पर 'बेस्ट लाइब्रेरी स्टूडेन्ट' के रूप में पुरस्कृत किया जाए।
5. माह के अन्तिम कार्य दिवस को मध्यान्तर पश्चात ज्ञान, विज्ञान कहानियों, आत्मकथाओं की कुछ पुस्तकों को लेकर 'ओपन लाइब्रेरी' की शुरूआत की जा सकती है। जिससे बालक–बालिका पुस्तकों को देखें और उनमें अध्ययन की जिज्ञासा जागृत हो।

ये माना इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ज्ञान, विज्ञान, कहानियों एवं मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण साधन है परन्तु जो सिरदर्द, आँखों की परेशानियाँ, न्यूरोलॉजिकल समस्या तनाव उसी नीली रोशनी में छिपा है उनसे हम अन्जान नहीं है। जबकि किताबें हमारी याददाश्त बढ़ाती है। शब्द भण्डार को समृद्ध करती है। व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है। दिमागी क्षमता को बढ़ाती है एवं एकाकीपन व खालीपन को भरती है।

अतः इस बार पुस्तक दिवस पर हम प्रण ले कि अपनी दिनचर्या में पुस्तक अध्ययन को अवश्य शामिल करेंगे। दादी/नानी की कहानियों की तरह रोज नवीन कहानियाँ अपने बच्चों को भी सुनाएं और किताबों की दुनिया का परिचय कराए तभी ये आयोजन अपने निहितार्थ को प्राप्त कर पाएगा। 'सफदर हाशमी' की चंद पक्तियाँ कहती है–

किताबों में झरने मिले गुनगुनाते।
बड़े खूब परियों के किस्से सुनाते।
किताबों में साईंस की आवाज है,
किताबों में रॉकेट का राज है
हर इक इल्म की इनमें भरमार है,
किताबों का अपना ही संसार है।
क्या तुम इसमें जाना नहीं चाहोगे?
जो इनमें है पाना नहीं चाहोगे?
किताबें कुछ तो कहना चाहती है,
तुम्हारे पास रहना चाहती है।।

आइए इस पुस्तक दिवस पर हम भी अपनी प्रिय पुस्तक का चयन कर पुस्तक दिवस आयोजन को सफल बनाए।

प्रधानाचार्य
उ. कु. राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
कानोड़, भीण्डर, उदयपुर
मो: 8079021086

www.rajsevak.com

The Challanges and The Advantages

❒ Subhash Chandar

We all learn always somehow according to our circumstances. This doesn't mean that for learning. there is no need any teacher to teach. Learning is a natural process but we all need an expert or skilled teacher if we want to learn systematically. A man learns everytime through the life He or she learns by the parents when they passes the time with the family. This kind of learning always gives an open space to know about the world wide. All the circumstances are changed completely when they appear while the school because it's totally a different environment to the family. Now they feel somekind of disciplines those check their freedom to do everything without any hasitation. So we can say proudly that the school is the most proper place where the students feel better to learn with a self discipline under the trained and qualitisome personalities.

Learning in a traditional way:- Every person learns by what he or she sees and watches in his or her daily life and feels also some kind of new experiences. Learning is a constant process but the methods have been adopted in a many way according to the circumstances. By the earlier time, we have been observing that the education system had been only for teaching based not for learning. In such a contemporary way there were no options for the learners to express their ideas, put their views, embrowse their skills. He or She remained ownself only for watching what were going to be happen infront of his or her. There were no space for the learner's to be shown what she or he wanted. Thus we can say that the traditional method is a one way track where only the teacher can pass by. The teachers go through the theoritical way what they are to be asked to complete the prescribed syllabus. The learners can't play their best role until! the education system have been in the same policy. The education policy must be based on students' interest not on the bookish parameter. There should be a keep watching on the learner's interest, talent and possible skills that can be furnished. From the earlier stage of learning, it must bo noticed to what a student do play, keep in interest in his or her school days. We should try to avail the proper environment in which the learner can feel more comfortable. The environment must be easy to motivate for playing the activities which the learner wants to perform in a smooth way. Every students can be a perfect human resource if he or she has been provided a better plateform. We can never teach every learner in a same way as there are so many differences in them by birth and their environment.

India is the best garden of intellectual seedlings:- We all are known to our country's population but can we confirm that all of then are can be best human resource for us. Probably No. We can't take a guarantee to them because of their improper learning way. Today, India stands the second position in population in the world but how many human beings can prove their contribution towards their nation. Most of the people are dependent on the working class even today in the ago of machinery, and technologies. The world is growing so rapidly in every aspect of advancement or development whether its related to Scientific Researches, Technology Inventions, Medical Diagnosis, Sports Universalizations, International Tradings, Agro-reformations, Online-Marketing, Share-Marketing and the Space reseachings. But we are still battling with our basic needs . In spite of having the seventh part of land on the earth we have been depending on the advanced nations like Russia, America Britain or Japan etc. There is an Indian sayings "Heavy rains and dense population destroy their country." So we have been legging behind even having enormous population. The reason is clear that we have been failure to provide our human intellectual all those facilities which they can mature their skills. At the starting, we always ready to force our education policy on the student whether the outcome may be. We can never succeed to get the real achievements untill we won't be able to re-think on our education policy. There are enormous possibilities in our countary if the children can be avail a better environment.

We should never think about the literacy rates but only on the behaviour changes of the students. Our education system must work on to provide such a schools, colleges where the students personal ;interests can be given the priortize. Many a countaries have an education policy to teach their learners according to their basic talents and inborn interests. If there can be modified our education system or policy, our population can be proved world's best human resources. Having with so much population , we are still leading in less areas. We need more to revise our policy to give the chances to all hidden talents so we can lead to every part. The demand of teachings and learnings at the present time :-India is the youngest country of the modern world as there live more than 35% youth population. There are so many possibilities to emerge our country on world map in every area . We can lead in Sports, Technologies, Cultivations, Productions and Labour works also. We have to avail them such schools where they can perform by their inborn qualities. If we give the chances to go forward then there are so much possibilties to lead the world. Today is the technology's time so we have to prepare our generations according to this environment. Nowadays every task has been dependent on technology. The more you'll use technology the more you will be asume advanced. We have to more work on our agro system, Space researches, Science technology . Our generations are need to adopt new technologies, new ideas, now innovations for better of their future. Today, we need such innovations which can lead to the world . Less capitals more production should be the prime policy for our generations. In recently , we have been feeling and facing something unusual with COVID Pandemic. There have been so many challenges before us right to save the human resources, to the national economy and to uproot this pandemic . All the education system has been demolished due to this pandemic. The School's, Colleges, Academics and all the Institutes are still not in work. The students have been facing so many difficulties in their regular study. They are unable to keep continue in because of all this. 'Online Teaching ' A better innovation as a remedial source to keep continue the learning:- Indian inhabitants give in villages and all the world know how we have possesses in the technologies specially in the rural areas. We have still to work to empower our rural areas in technology to stand with the other word. While COVID-19 Pandemic We have been teaching our Children through online system with the help of Mobile phones, The Radios and the Televisions since 2020 . We all know that most of the parents are still feeling uncomfortably with online teaching. There are more than fifty percent parents haven't smart phones to teach their Children than how can be kept continue the teaching. The problem is not a short timed but the people haven't able to handle this situation so far. In urban environment , there .have been observed a good progress in learning and teaching with online system but whereas, rural areas there still need to work more on

www.rajsevak.com

this. The Radios and the T.V.s can be the best teaching aids for the students in the rural areas. The Rajasthan Government have implimented many innovative programmes to lead the schools without physical classes like SMILE 2.0, 3.0, SHIKSHAVANI and SHIKSH DARSHAN Programmes. While the students are at home , this is the best innovation to keep continue their studies. With the help of Online Programmes , the students are feeling much better slowly and begin to take an interest . Now they are learn. play, dance, sing, take a part in any online quiz, competitions . Even in a tough situation, the Online teaching and learning can be proved a better remedial resource to keep continue the learnere study. The teachers have a strong resposibility to keep in a regular touch to their students. They must come forward to help their students in any difficulties. Time to time , they should take a positive feedback and also give a boosting reinforcement. They shouldn't limit to the paper works or messaging system but create such an environment on Online and Offline to teach them like as the school going on . The Whats App Groups can be helpful for them to express their oral or verbal ideas, Put their responses of the online quizes also. The school should contact them regularly to get a positive feedback. The parents are expected to help their young ones while there have a spare time to sit beside them. In such a crucial condition we should support our children to maintain the situation. We all hope for the betterment of the students.

Principal
MGGS Bairasar, Churu
Mob.: 9784873840

बच्चों में जगाएँ लेखन प्रवृत्ति

❐ दिनेश विजयवर्गीय

हर बच्चे में सोच का स्तर अलग-अलग होता है वैसे ही लेखन हेतु चिंतन का स्तर तथा उचित शब्दों का प्रयोग करने की क्षमता भी अलग होती है। यद्यपि कहीं बच्चे मेहनत, लगन व अध्ययन से बहुत कुछ इस क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं। एक जागरूक साहित्य प्रेमी शिक्षक बच्चे की अभिव्यक्ति क्षमता को सही दिशा और प्रोत्साहन देकर विकसित कर सकता है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों में विशेषतः छठी क्लास से बारहवीं तक प्रयास किए जाए। कस्बे के एक सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शिक्षक ने बालकों की अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने तथा उनके चिंतन स्तर को बढ़ाने के लिए नवाचार किए। पिचहत्तर स्टूडेंट्स की क्लास में पचास छात्र एवं पच्चीस छात्राएँ भी अध्ययनरत थी।

संयोग से वह शिक्षक उस क्लास के क्लास टीचर भी थे। उन्होंने सब बच्चों को एक पेज लिखने हेतु एक टॉपिक दिया। मुझे वो गुरुजी इसलिए पसंद हैं। उन्होंने स्टूडेंट्स से कहा-'एक बच्चे को कक्षा पहली से बारहवीं तक लगभग चालीस अध्यापक पढ़ा चुके होते हैं। हर शिक्षक का व्यक्तित्व और पढ़ाने का तौर तरीका तथा बच्चों से जुड़ाव अलग-अलग रहता है। ऐसे में तुम्हारे मन में जिस शिक्षक की सर्वाधिक अच्छी छवि बने उसी पर लिखना है। बच्चों ने अपने सभी गुरुजनों को मन ही मन श्रेष्ठतम की तराजू पर तोला। चिंतन किया और फिर अपने प्रिय गुरु पर कलम चलाने लगे। एकाएक ऐसा लेखन करने पर सबकी एकाग्रता अपने प्रिय गुरु की विशेषताओं पर टिकी रही। उनका प्रिय गुरु जो उनके अंतर्मन में समाया हुआ था। उनके लिए प्रशंसा से भरे शब्द तलाशते लिखते रहे। सचमुच अभिव्यक्ति क्षमता जगाने के लिए शिक्षक ने ऐसा टॉपिक चुना जिस पर सहज रुप से चिंतन कर कलम चलाई जा सकती थी। बच्चों ने बहुत अच्छी अभिव्यक्ति दी। गागर में सागर भरने का प्रयास किया। शिक्षक ने सभी बच्चों की प्रशंसा करते हुए कहा-'शायद इस तरह तत्काल चिंतन कर अपने प्रिय गुरु पर लिखने का तुम्हारे जीवन में पहला मौका हो।'

साहित्य सृजन करने वाले शिक्षक ने बच्चों में लेखन प्रवृत्ति जगाने के लिए अपनी वह पत्र-पत्रिकाएँ जिनमें उनकी रचनाएँ- कहानी, कविता व बाल साहित्य प्रकाशित हुए थे, उसे लाकर बच्चों को बताया। रंगीन चित्र और विभिन्न विधाओं की प्रकाशित रचना देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए। कविता कहानी कैसे लिखते हैं? कैसे छपती है कि जानकारी लेने के लिए उत्साहित हो गए। गुरु जी ने बच्चों को बताया कि कोई कहानी, कविता किस तरह चिंतन कर लिखी जाती है। जागरूक रहकर रचना के लिए विषय तलाशना होता है।

गुरुजी के प्रेरणा प्रोत्साहन से कुछ ही दिनों में चार-पाँच छात्र-छात्राएँ कोई बाल कहानी तो कोई कविता लिखकर लाए। गुरुजी ने उनकी लिखी रचनाओं को उनसे क्लास में पढ़वाया। सभी बच्चे से ध्यान से सुनने लगे। यह उनका पहला प्रयास था। उसे उनसे क्लास में पढ़ाया। बच्चे उनकी रचनाएँ सुन हँसने लगे। रचना में कई प्रकार की कमियाँ थीं लेकिन जिसे गुरु जी ने क्लास रूम में बच्चों के सामने उन्हें दूर किया और फिर सुनाया। लिख कर लाने वाले बच्चों की पीठ थपथपाकर प्रोत्साहित कर बधाई दी। इन बच्चों ने बताए पते पर अपनी बाल रचनाएँ दो तीन दैनिक अखबार में भेजी। कुछ ही दिनों में तीन बच्चों की कविता, कहानी प्रकाशित हुई। बच्चों को बहुत खुशी हुई कि उनकी रचना उनके के नाम सहित प्रकाशित हुई। दूसरे दिन स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने प्रार्थना स्थल पर उन बच्चों की छपी हुई रचनाएँ सभी को बताईं। उन्होंने उन बच्चों को शाबाशी देकर प्रोत्साहित किया। जिन गुरुजी ने यह सब कर दिखाया उन्हें बधाई दी।

इसी प्रकार छात्रों को गुरुजी ने बताया कि हमारे शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा भी एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन नियमित किया जाता है जिसमें शैक्षिक लेखों, विभागीय आदेशों के साथ-साथ बच्चों की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। इस मासिक पत्रिका का नाम शिविरा है। जो कि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर से प्रकाशित होती है। इसी पत्रिका में बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिए एक स्थायी स्तंभ 'बाल शिविरा' प्रकाशित किया जाता है जिसमें किसी भी कक्षा में अध्ययनरत छात्र-छात्राएँ अपनी मौलिक रचनाएँ भेज सकते हैं। जैसे कि कहानी, कविता, आलेख, शैक्षिक विचार, मौलिक चित्र, पोस्टर आदि भेजकर छपवा सकते हैं। इसमें छपने वाली सामग्री इस पत्रिका के माध्यम से पूरे राजस्थान में ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न भागों में पहुँचती है। आप भी अपने विद्यालय के छात्रों की रचनाएँ प्रकाशन हेतु भेज सकते हैं।

215 मार्ग 4 रजत कॉलोनी बून्दी (राज.)-323001
मो: 9413128514

www.rajsevak.com

पुस्तक समीक्षा

सृजन- संवाद

लेखक : डॉ. नीरज दइया; **विधा** : साक्षात्कार; **प्रकाशक** : किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी (राज.); **संस्करण** : 2020; **मूल्य** : ₹ 300; **पृष्ठ** : 128

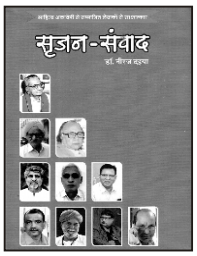

राजस्थानी भाषा भारत की प्रमुख भाषाओं में एक है। दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। जॉर्ज ग्रियर्सन, एल.पी. तैस्सीतोरी और सुनीति कुमार चटर्जी से लेकर अधिकांश भाषा वैज्ञानिकों ने एक भाषा के तौर पर राजस्थानी की समृद्ध परंपरा को सराहा है। गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर भी राजस्थानी कविता के प्रशंसकों में रहे हैं। साहित्य अकादमी हर साल देश की जिन प्रमुख भाषाओं के रचनाकारों को पुरस्कृत करती है, उनमें राजस्थानी भी एक है। यह पुरस्कार साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले देश के शीर्षस्थ पुरस्कारों में एक है। ऐसे में साहित्य अकादमी द्वारा किसी भाषा विशेष के रचनाकारों के पुरस्कृत रचनाकारों के सृजन सरोकारों को जानना एक रोचक अनुभव होता है और राजस्थानी भाषा के संदर्भ में यही महत्त्वपूर्ण अनुभव देती है डॉ. नीरज दइया की पुस्तक 'सृजन- संवाद।' नीरज दइया स्वयं साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचनाकार हैं। पुस्तक में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत दस राजस्थानी रचनाकारों से नीरज दइया की बातचीत शामिल है। ये दस रचनाकार हैं- कन्हैया लाल सेठिया, मोहन आलोक, यादवेंद्र शर्मा चंद्र, अर्जुन देव चारण, कुंदन माली, मंगत बादल, अतुल कनक, आईदान सिंह भाटी, मधु आचार्य आशावादी और बुलाकी शर्मा। अंतिम भाग में स्वयं नीरज दइया द्वारा अलग-अलग समीक्षकों नवनीत पांडे, लालित्य ललित, देवकिशन राजपुराहित, राजूराम बिजराणिया, राजेंद्र जोशी और मदनगोपाल लढ़ा को दिए गए साक्षात्कार तथा उनके आत्मकथ्य भी शामिल हैं।

कन्हैया लाल सेठिया को साहित्य अकादमी पुरस्कार सन् 1976 में मिला जबकि पुस्तक में शामिल बुलाकी शर्मा को यह पुरस्कार सन् 2016 में दिया गया। चार दशक का यह कालखण्ड सृजन सरोकारों की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य के लिए अनेक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। चूँकि एक आलोचक के रूप में नीरज दइया इन चार दशकों की साहित्यिक चेतना के सतत अध्येता रहे हैं इसलिए उनके सवाल कई ऐसे महत्त्वपूर्ण पड़ावों को स्वयं रेखांकित करते हैं, जो किसी भी भाषा के साहित्य के विकास के क्रम में महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। मसलन वो बुलाकी शर्मा से एक जगह सवाल करते हैं- 'राजस्थानी भाषा को (संवैधानिक) मान्यता नहीं है। पत्र-पत्रिकाएँ कम हैं। प्रकाशक- बिक्री का तंत्र ठीक नहीं। अकादमी का भी कोई भरोसा नहीं। ऐसे में कोई लेखक राजस्थानी में क्यों लिखे?' यह सवाल स्वयं में एक भाषा के रचनाकार के संघर्ष और अपनी भाषा में सृजन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता की कथा कहता प्रतीत होता है।

पुस्तक में दिए गए साक्षात्कार रचनाकारों की अपनी प्राथमिकताओं तथा उनके स्वभाव को भी रेखांकित करते हैं। यादवेंद्र शर्मा ''चन्द्र'' के साक्षात्कार में यह पीड़ा बहुत गहनता से रेखांकित होती है कि राजस्थानी में लिख कर कोई रचनाकार अर्थोपार्जन नहीं कर सकता। कविता के प्रति कन्हैया लाल सेठिया की यह दृष्टि उनके सृजन की समृद्ध संचेतना को भी निरूपित करती है -'अध्यात्म, मनोविज्ञान, विज्ञान- मतलब ज्ञान की अन्य शाखाओं को बिना समन्वित किए लिखोगे तो यह इक्कीसवीं शताब्दी तुम्हारे साहित्य की तरफ देखेगी ही नहीं। कविता तो तप है। आपको यदि भूखे मरना मंज़ूर हो, समाज में अपमानित होना मंज़ूर हो, अपनी औरत की लताड़ खाना मंज़ूर हो तो तुम बनो कवि।'आधुनिक राजस्थानी कविता की स्थिति पर चर्चा करते हुए अर्जुन देव चारण की यह बात महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है -''आज की राजस्थानी कविता किसी भी अन्य आधुनिक भारतीय भाषा से पीछे नहीं है, एक कदम आगे ही है राजस्थानी।'' जब इस बात की तुलना हम कन्हैया लाल सेठिया के इस कथन से करते हैं कि ''रोज़ डाक में बहुत किताबें आती हैं, उनमें एक-दो किताबें कविता की होती हैं। कविताएँ खूब लिखी जा रही हैं पर राजस्थानी की किताबों में बहुत सारी तो कचरा होती हैं'' तो अलग अलग पीढ़ियों के समय में सृजन संवेदनाओं के स्पंदन का भी भान होता है और एक भाषा के कविता संसार के विकास की यात्रा भी प्रतिपादित होती है। ऐसा नहीं है कि केवल अर्जुन देव चारण ने ही समकालीन राजस्थानी सृजन को अन्य भाषाओं के समकक्ष माना हो बल्कि इसी पुस्तक में शामिल कुंदन माली और मधु आचार्य 'आशावादी' भी यही बात कहते हैं। समकालीन राजस्थानी संवेदना की प्रतिनिधि उक्ति बन जाती है मंगत बादल की बात -'' युद्ध में केवल एक सैनिक ही आहत नहीं होता, बल्कि घर में बैठी उसकी माँ, पत्नी और बेटी भी आहत होती है।'' वो यह भी कहते हैं-'' कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि राजस्थानी कोई भाषा ही नहीं है। उनको हमें अपने काम से ज़वाब देना चाहिए। उनकी बातों को हम जितना तूल देंगे, उतना ही वो शोर मचाएंगे। वास्तविकता तो यह है कि ऐसा कहने वाले राजस्थानी या किसी भी भाषा के हितैषी नहीं हो सकते।''

पुस्तक राजस्थानी साहित्य की विविध विधाओं पर बात करती है लेकिन बार बार यह ज़रूरत रेखांकित की जाती है कि राजस्थानी साहित्य में अभी आलोचना के क्षेत्र में बहुत सारा काम करने की ज़रूरत है। पुस्तक के लेखक नीरज दइया इस क्षेत्र में लगातार काम कर रहे हैं। उम्मीद की जा सकती है कि इस दिशा में उनका काम राजस्थानी साहित्य के प्रेमियों के लिए उत्तरोत्तर सुख के सोपान सृजित करता रहेगा।

समीक्षक : **अतुल कनक**
3ए 30, महावीर नगर- विस्तार,
कोटा (राज.)-324009
मो: 9414308291

अदीठ साच

लेखक : कमल रंगा; **प्रकाशक :** सुषमा प्रकाशन, नत्थूसर गेट के बाहर, बीकानेर (राज.)-334004; **संस्करण :** प्रथम 2018; **पृष्ठ संख्या :** 104; **मूल्य :** ₹ 250

राजस्थानी के कवि-कथाकारों में कवि कमल रंगा एक ऊर्जावान एवं समर्थ रचनाकार के रूप में सतत सृजनशील रहे हैं। उनकी कहानियाँ

www.rajsevak.com

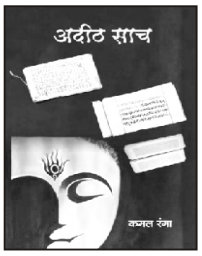

भी चर्चा में रही हैं और कविता-संग्रह भी। इस चर्चा के पीछे उनकी मौलिक दृष्टि की अहम भूमिका रही है। श्री रंगा अपनी रचनाओं की विषय-वस्तु में निरंतर बदलाव करते रहे हैं और विषय-वस्तु के साथ ही उनकी भाषा-शैली में भी हमेशा बदलाव होता रहा है। यही कारण है कि उनके सृजन से पाठक हर बार कुछ-न-कुछ नया ग्रहण करता ही रहता है।

'अदीठ साच' कवि का तीसरा काव्य-संग्रह है। इसमें कवि ने पौराणिक एवं धार्मिक ग्रन्थों के उपेक्षित चरित्रों एवं प्रसंगों को केन्द्र में रखते हुए मौलिक उद्भावनाओं की सृष्टि की है। संग्रह की कविताओं को तीन भागों में बांटा गया है। पहले भाग में त्रेता युग के अदीठ साच को 'हुवै चावै कोई' नाम दिया गया है। दूसरे भाग में द्वापर युग के अदीठ साच को 'बीजी हुवंती बात' और कई अन्य चरित्रों के अदीठ साच को 'हुवै भलांई' नामक तीसरे भाग में रखा गया है। इन तीनों शीर्षकों के अन्तर्गत प्रमुख रूप से स्त्री पात्र हैं साथ ही पुरुष पात्र भी हैं और कुछ अन्य प्रसंग भी, जो नई व्याख्या के साथ सामने आते हैं।

हिन्दी में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'उर्मिला' और 'यशोधरा' जैसी नारियों की मनोदशा और रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'रश्मिरथी' में कर्ण की व्यथा का प्राकट्य आज भी कालजयी है। राजस्थानी में इससे पूर्व सत्यप्रकाश जोशी, श्रीमंतकुमार व्यास आदि कवियों ने लेखनी चलाई है, किंतु एक साथ इतने पात्रों का चरित्र-चित्रण अद्यावधि किसी राजस्थानी कवि द्वारा किया गया हो, ऐसा देखने-सुनने में नहीं आया है। इस दृष्टि से कवि कमल रंगा का यह योगदान राजस्थानी काव्य के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। राजस्थानी भाषा में इस तरह का काव्य-सृजन का यह पहला एवं महत्त्वपूर्ण सार्थक प्रयास है।

'अदीठ साच' के पहले भाग में त्रेता युग से संबंधित अठारह कविताएँ हैं। इन कविताओं का स्रोत वाल्मीकि रामायण है। कवि अपनी कविताओं के द्वारा तत्कालीन युगबोध और जीवन-मूल्यों को वर्तमान जीवन-मूल्यों और युगबोध से संबद्ध करता है, तो उन पात्रों की मन:स्थिति उस युग से वर्तमान तक जुड़ जाती है। उस युग की उर्मिला मौन रहकर वियोगजनित दु:ख सह लेती है, किंतु मर्यादाएं नहीं तोड़ती। लेकिन आज की उर्मिला अबोली नहीं है। वह गूंगी गुड़िया नहीं है। वह अपनी पहचान के लिए वर्तमान की सारी मर्यादाओं को मानने से मना कर देती है। कवि 'लारै छूटी उर्मिला नै' कविता में गूंगी उर्मिला की जगह अपने हक के लिए बोलने वाली उर्मिला का वर्णन करते हुए कहा है- पण अबै/भांगती भींतां/छेकती कुंडाळिया/करती बाथेड़ा/थरपण सारू/आपरी ओळख/अेक नूंवौ धरम/लुगाई जात रौ/आज री उर्मिलावां! (पृष्ठ 18)

स्त्री जाति का यह नया धर्म उसके होने का, उसकी खुद की पहचान का है। 'अदीठ साच' में इसी भांति के नए-नए प्रयोग करके कवि कमल रंगा ने उर्मिला की भांति ही मांडवी, कौशल्या, शांता, मंथरा, त्रिजटा आदि स्त्री पात्रों की मनोव्यथा को आधुनिक संदर्भ में मुखरित किया है, जो सीधे-सीधे पाठक के हृदय को आंदोलित करने वाली है। इसी प्रकार पुरुष पात्रों में भरत, दशरथ, रावण आदि के माध्यम से कवि ने उनकी मनोदशा का जो मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है, वह सहज ही हृदयंगम हो जाता है। दशरथ-पुत्री शांता के संबंध में कवि की उद्भावना है कि दशरथ शायद बेटी के जन्म की चाह नहीं रखते। 'साची बात तौ आ' में कवि ने लिखा है -

राखता चावना बेटै री/आछी नीं लागती स्यात बेट्यां (पृष्ठ 22)

इस काव्य संग्रह में कवि की सर्वाधिक सहानुभूति भरत के साथ प्रकट हुई है। कवि ने भरत से संबंधित कविता में उनके चरित्र को उच्च कोटि का सिद्ध करते हुए लिखा है -

'पूठा पधारौ अजोध्या नगरी / परजा उडीकै राजा राम नैं!'/कोनी मानै कोई तरक/राम भरत रा/अर हियौ हार/तेवड़ लेवै सत्याग्रह भरत/मांग लेवै पादुका राम री/आय पूगै अजोध्या/भोगण सारू/असली बनवास!/ मिळै है कांई/अैड़ी छिब/आज रै राज-पाट में? (पृष्ठ 38)

इस कविता में 'आय पूगै अजोध्या/ भोगण सारू/असली बनवास' की व्यंजना बहुत गहरी है। इसमें भरत के त्याग-तप के साथ राम के वचनों का दृढ़ता के साथ सशक्त वर्णन देखने योग्य है।

'अदीठ साच' के दूसरे भाग में द्वापर युग के अदीठ साच को मूर्तिमंत किया गया है। यह युग त्रेता के बाद और वर्तमान युग से पूर्व का युग है। इस युग में मानव-मूल्यों का क्षरण होने लगा था। संस्कृति और समाज-व्यवस्था में विकारजनित विचलन घर करने लगे थे। कौरवों और पांडवों के संघर्ष में उस युग की मर्यादाएँ ध्वस्त होने लगी थीं। महाभारत के अनेक पात्रों से संबंधित प्रसंग जीवन की विसंगतियों से भरे पड़े हैं। पितामह भीष्म, कुंती, कर्ण, द्रौपदी, बर्बरीक और महाभारत के कर्णधार कृष्ण के चरित्र में भी इन विसंगतियों को देखा जा सकता है। यहाँ एक ओर तो कर्ण के सूतपुत्र कहलाने की व्यथा है, वहीं दूसरी ओर भरी सभा में द्रौपदी का चीर-हरण और उसे वस्तु समझ लेने की पीड़ा है। महाभारत के कुछ पात्रों को छोड़ सभी अभिशप्त हैं। इन पात्रों की परिवेदना और संताप तथा विद्रोह के मूल में धृतराष्ट्र का अंधत्व और पांडु की रुग्णता थी। ऐसी स्थिति में मनुष्यता का क्षरण होना ही था।

'जुगां पछै द्रौपदी' कविता में कवि कहता है- करता हा बात / मरजाद री / मानता हा देवी / उणी नैं / फगत अर फगत / जावती देख बाजी हाथ सूं/ लगाय दीन्ही उणी नैं/ चौपड़ रै चौरावै / धरम रा रुखाळां ई। (पृष्ठ 43)

उस युग में एकलव्य और बर्बरीक जैसे नायकों पर जिस प्रकार के अत्याचार किए गए, उनके स्मरण मात्र से मन विचलित हो उठता है। जिस समाज व्यवस्था में उन पर ऐसे अत्याचार किए गए और जिन्होंने अत्याचार किए, उनके सिर कभी भी गर्व से ऊपर नहीं उठ सकते। जबकि एकलव्य और बर्बरीक के त्याग को आज भी लोग याद करते हैं। इनके बलिदान की गाथा आज भी लोगों की जबान पर है। कवि रंगा ने 'गुरु दिखणा' में लिखा है :-

मांग्यौ हौ अंगूठौ / द्रोणाचार्य / गुरुदिखणा सरूप / अर देय दीन्हौ अेकलव्य / पण रैयग्यौ हौ जीवतौ/ इणी ढाळै / मांग'र माथौ कान्हौ / कर दीन्हौ तुरता-फुरत / बर्बरीक रौ धड़ अळघौ / अरे कान्हा! / आ कैड़ी गुरुदिखणा? / कैड़ी मांग? (पृष्ठ 49)

www.rajsevak.com

इस प्रकार कवि महाभारत के एक-एक किरदार की मनोदशा को उजागर करने का सफल प्रयास करता है। इस युग की विसंगतियों की चर्चा करते समय यदि कर्ण को भुला दिया जाए, तो हमारे मन में एक अपराध-बोध पनपने लगेगा। कर्ण के चरित्र पर भारतीय साहित्य में एक से एक बढ़कर कई अच्छी रचनाएँ रची गई हैं। शिवाजी सावंत की 'मृत्युंजय' जैसी अद्वितीय कृति को कौन भुला सकता है, किन्तु कवि कमल रंगा ने 'कर्ण' की मोक्षदायी विचारणा को जो औदात्य प्रदान किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। कवि लिखता है -

घणौ ई चेतायौ सूरज- / 'मत सूंप्यै कवच-कुंडळ / बैरूपिये इंदर नै / रैवैला अमर थूं कर्ण!' / नीं मानी चेतावणी बौ अपरबळी/ कैयौ मूंडामूंड- / 'कोनी चाईजै अमरपणौ / मिनख री कीरत ई उणरी मुगती है!' (पृष्ठ 58)

इस प्रकार तद्युगीन चरित्रों के माध्यम से कवि ने वर्तमान युग-यथार्थ की खरी पड़ताल की है और यह पड़ताल ही कवि को आर्षग्रन्थों के गंभीर अध्येता के रूप में भी अलग पहचान दिलाती है।

इस काव्य संग्रह के तीसरे भाग में नल-दमयंती, त्रिशंकु, विश्वामित्र, ययाति, सत्यकाम, जाबाल आदि चरित्रों को नई दृष्टि से नया रूप देने का सार्थक प्रयास भी परिलक्षित होता है, जो अभिनंदनीय है। कवि कमल रंगा का यह प्रयास इसलिए भी प्रशंसनीय है कि उन्होंने अलग-अलग युगों के पात्रों को देखने, परखने एवं समझने की एक नई दृष्टि पाठकों को सौंपी है।साथ ही उनका काव्यकर्म राजस्थानी के सुप्रतिष्ठित कवि डॉ. सी.पी. देवल, डॉ. अर्जुनदेव चारण आदि की परंपरा को आगे बढ़ाने वाला है। उनका सृजन-कर्म पाठकों को 'अदीठ साच' (अदृश्य सत्य) के गूढ रहस्य पर चिंतन-मनन करने को प्रेरित करता रहेगा। ये कविताएँ उनके स्मृति-पटल पर अमिट रहेंगी। मैं कामना करता हूँ कि कवि की नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा भविष्य में भी राजस्थानी काव्य-जगत में नूतन कीर्तिमान स्थापित करती रहेंगी। कवि कमल रंगा की कलम को नमन्!

समीक्षक : **डॉ. मदन सैनी**
प्राचार्य, सेसोमूं गर्ल्स कॉलेज कालूबास, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)-331803
मो. 7597055150

राजस्थानी लोकनाट्य विज्ञान

लेखक : बी.एल.माली 'अशांत'; **प्रकाशक** : राजस्थानी भवन फाउण्डेशन, 113, प्रेम नगर, जगतपुरा गेटौर, जयपुर (राज.) 302017; **संस्करण** : 2020; **पृष्ठ सं.** : 128; **मूल्य** : ₹ 300

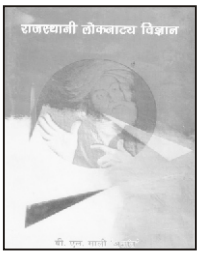

राजस्थानी लोक नाट्य विज्ञान राजस्थानी भाषा में प्रकाशित एक ऐसी पुस्तक है जिसमें लेखक ने राजस्थानी जनजीवन को लोक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है। यह कटु सत्य भी है कि 'लोक' पुरातनवादी शब्द है जिसका अर्थ अनुभवसिद्ध सम्पूर्ण संगठित समाज होता है। 'खेल' लोकनाट्य में लोक रंगमंच का रूप है। जहाँ से रंगमंच की यात्रा शुरू होती है, पृथ्वी पर लोकनाट्य पुरुषों द्वारा रचित लोक मन का आतंरिक रंग इसका दिग्दर्शन है। लेखक ने बड़े मानवीय योग के साथ इसे दस भागों में श्रेणीबद्ध किया है। पहले भाग में विषय प्रवेश के अंतर्गत; स्वरूप, लोकरंग और उसके मूल रूप। दूसरे भाग में लोक और नाट्य के अंतर्गत उसकी विशेषताएँ, अर्थ और परिभाषाएँ, उसका रूप और प्रकृति, लोकनाट्य का शिल्प और उसका मंचन, तीसरे भाग में लोकनाट्य का रूप विधान के अतर्गत उसका मंचन, उसका पर्याय, उसके तत्त्व के साथ मूल रूप से उसका मंचन, मंचन होने वाले नाटक का पारम्परिक संगीत, मंच की परम्परागत साज सज्जा और परिवेश, स्त्री पात्रों का पुरुष पात्र में चयन की सावधानी। चौथे भाग में लोक और लोकनाट्य मंचन का निर्देशन, पात्रों सहित संवादात्मक पद्य रचनाएँ, पात्रों के पहनने वाले कपड़ों का चयन एवं श्रृंगार, पारंपरिक संगीत रचनाएँ, पारंपरिक साज और राग, पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति। पाँचवें भाग में नाटक और लोकनाट्य की तुलना। छठवें भाग में आधुनिक रंगमंच और लोक रंगमंच। सातवें भाग में चिंतन। आठवें भाग में अंतरराष्ट्रीय रंगमंच और लोक नाट्य का आकर्षण। नवम भाग में रंगमंच की यात्रा में लोक अभिरुचि और दसवें भाग में लोकनाट्य विज्ञान में प्रयुक्त सन्दर्भ सूची को लेखक श्री बी.एल. माली 'अशांत' ने विस्तार से परिभाषित किया है। मेरा मानना है कि इस पुस्तक की रचना कर लेखक ने सही अर्थों में लोकनाट्य विज्ञान को परिभाषित किया है।

लोक रंग को विस्तारित करते हुए लेखक ने कहा कि इस युग से पहले भी आदिलोक के अंतर्गत पहाड़ों, गुफाओं, जीव-जंतुओं से सीमित साधनों में भी आदमी नए प्रयोग करता रहा है । लोक में रचा-बसा आदमी ने साधु-संतों, ऋषि मुनियों के आहार-विहार से बहुत कुछ सीखा है । समाज में लोक का काफी महत्त्व है। वह एक अपार समुद्र की भाँति है जिसमें वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों समाहित हैं।

लोकमन का गंभीर प्रकटीकरण लोक नाट्य के माध्यम से होता आया है, जिसे आम जन भलीभांति समझ लेता है। लोकनाट्य की रचना करने वाला गौण रहता है जबकि उसके कलाकार नाम कमा लेते हैं। लोकनाट्य हेतु किसी विशाल रंगमंच की आवश्यकता नहीं रहती, वह गाँव की चौपाल पर भी हो सकता है । लोकनाट्य ग्रामीण परिवेश की बोली में ज्यादा असरकारक होता है। लोकनाट्य में रौबीली आवाज के साथ वैसा ही हाव-भाव करने पर लोकनाट्य सजीव हो उठता है। स्वीकृत लोक परंपराओं पर आधारित नाट्य आमजन में अपनी छाप छोड़ता है। इसको और रोचक बनाने हेतु इसमें लोक संगीत, छंद, लोकोक्तियों को शामिल करके आमजन हेतु मनोरंजन के साथ नया संदेश दिया जा सकता है। यह विधा राजस्थान में विचारों पर आधारित बहुत पुरानी लोकनाट्य विधा है। कुचामनी, शेखावाटी, जयपुरी, तुर्रा-कलंगी, गवरी नाट्य, रम्मत, तमासा आदि प्रमुख हैं। लोक में लोकनाट्य और भी कई रूपों में प्रचलित है जैसे; स्वांग, लीला नाट्य, नौटंकी स्वरूप आदि। इसमें कठपुतली नृत्य एक अलग विधा है। इसी तरह 'हेला ख्याल' भी लोकनाट्य की श्रेणी में आता है।

लोक रंगमंच और आधुनिक रंगमंच यानी नाटक खेलने की जगह। जहाँ शब्दों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। रंगमंच पर निदेशक भावों को जीवन्तता प्रदान करता है, अभिनेता अपने अभिनय से सबको आकर्षित करता है। ध्वनि-प्रकाश, संगीत सब अपने रंग बिखेरते हैं तब मंच पर कला का प्रदर्शन जीवंत हो उठता है।

www.rajsevak.com

रंगमंच को आधुनिक काल में थियेटर के रूप में जानते हैं। अब नाटक लोक रंगमंच से निकलकर उत्तर आधुनिक काल की तरफ अग्रसर है। नाट्य लेखन को मंच पर हूबहू मंचन करवाना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य होता है इसमें अनुभव श्रेष्ठ होता है। अनुभवी रंग लेखक जो अपने संवादों से सभी जन को बांधे रख सके, अनुभवी निदेशक जो अभिनयकर्ता से शानदार अभिनय करा सके, ध्वनि प्रभाव के साथ म्यूजिक एवं उसके अनुरूप प्रकाश व्यवस्था की आवश्यकता रहती है। ये सभी मिलकर एक अच्छे नाटक का मंच पर मंचन करवा सकते हैं।

रंगमंच यात्रा में कलाकारों का समर्पित भाव इस कला को जीवंत बना देता है। राजस्थानी संस्कृति से ओत-प्रोत सारे रंग एक होकर लोकनाट्य साधना से फलीभूत हुए हैं। राजस्थानी रंगमंच को और ऊँचाइयाँ प्रदान करने हेतु कई लेखकों ने अपना योगदान दिया है। राजस्थानी धरती पर प्रेमरंग में रंगी 'लैला मजनूं' की कथा को आधुनिक रंगमंच द्वारा स्वीकार करते हुए देश के कई हिस्सों में इसका मंचन किया गया। इसी प्रकार राजा भरथरी, पूरण भगत, गोपीचंद, अमरसिंह राठौड़, जगदेव कंकाली, मूमल, उजली जेठवा आदि का मंचन देश के कई भागों में हुआ। लोकरंग का स्वरूप अपने समयानुसार परिवर्तित होता रहा है । कहावत भी है जो समयानुसार चलता है वह सफल होता है । 1965 और 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध में जयपुर आकाशवाणी से 'लड़े सुरमा आज जी' और 'गीगला रा बापू' लोक कलाकार गणपतलाल डांगी द्वारा लोक बोली में तैयार प्रस्तुतीकरण ने सभी का मन मोह लिया। झालावाड़, बीकानेर और जोधपुर आदि रंगमंच के केंद्र हैं। चूरू में भरत व्यास, जोधपुर में अर्जुनदेव चारण, महिपाल, बीकानेर में निर्मोही व्यास, जितेन्द्र जालोरी, सूरजसिंह पंवार आदि लोकनाट्य कलाकार प्रसिद्ध हैं। राजस्थानी नाट्य यात्रा रेखांकित करते हुए कई और कलाकारों/लेखकों के नाम इस प्रकार हैं जिन्होंने रंग यात्रा सृजन में अपना योगदान दिया है; निर्मोही व्यास, बी. एल. माली 'अशांत', अर्जुनदेव चारण, लक्ष्मीनारायण रंगा, जितेन्द्र जालोरी, गणेश सुथार, इकबाल हुसैन, उमेश चोरसिया के नाम प्रसिद्ध है ।

लेखक श्री बी.एल.माली 'अशांत' को मैं साधुवाद देता हूं कि राजस्थानी लोकनाट्य विज्ञान पर राजस्थानी में रंगमंच के पाठकों हेतु अच्छी पुस्तक दी है ।

समीक्षक : **राजाराम स्वर्णकार**
शिव-निवास, बर्तन बाजार, बीकानेर
मो. 9314754724

हम अजेय अपराजेय हैं

कवि : राजाराम स्वर्णकार; **प्रकाशक** : नव किरण प्रकाशन, बिस्सों का चौक, बीकानेर; **संस्करण** : 2020 **पृष्ठ** : 80; **मूल्य** : ₹200

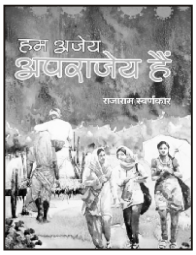

कवि कथाकार राजाराम स्वर्णकार का नया काव्य संग्रह हम अजेय अपराजेय हैं कोरोना से सीधा संवाद करती रचनाओं का अनूठा दस्तावेज है जिसमें कुल 33 काव्य रचनाएँ हैं। जिनमें 20 काव्य रचनाएँ सीधे तौर पर कोरोना से जुड़ी है। इन रचनाओं में कोरोना से लड़ने का जज्बा, साहस और निर्भीकता है। कविताओं में जीवन की अजेय अपराजेय आस्था के स्वर हैं। कहो मिस्टर कोरोना कैसे हो? रचना में एक बानगी कहो मिस्टर कोरोना कैसे हो? बोला, लगता मुझे मौत की/घड़ियाँ है आने वाली। कुछ भी नहीं बिगाड़ सका/पत्ता तक नही उखाड़ सका/मुझे चिढ़ाकर झूम रही/ फूलों से लदी हुई डाली। इसी शीर्षक की एक रचना में सुंदर प्रकृति चित्रण करते हुए रचनाकार ने जीव जंतुओं से कोरोना से संवाद की कल्पना करते हुए संदेश दिया हैं जाग गए इंसान अगर तो/कोरोना नहीं टिक पायेगा/जीव जंतुओं ने मिलकर के/जिसको पूरी तरह हराया है। इसी प्रकार रचना में गाँवों की सरहद पर आकर लोट-पोट हो जाते/चन्दन मान गाँव की माटी अपने शीश चढ़ाते/जन्मभूमि की यादें क्या मानस से हटा सकोगे? अपनी दुष्ट चाल से क्या यादों को मिटा सकोगे? में कोरोना को ललकारा है। कवि ने भारतीय जनमानस में बीमारियों के प्रति जागरूकता को रेखांकित करते हुए कोरोना को आगाह किया है अब आया है मौक़ा प्यारे नए लॉकडाउन का / आइसोलेशन कर तुमको देंगे मनमाना झटका / मानवता के महाशत्रु को ज़िंदा कभी न छोड़ें / महाकाल की काल कोठरी में ले जाकर छोड़ें। कवि ने कोरोना को लेकर पुस्तक में चार सवैये भी लिखे हैं वायरस ने किया जग को डांवाडोल/आज प्रभावित हो रहा धरती का भूगोल / धरती का भूगोल चीन से अमरीका तक/ रूस मध्य एशिया से लेकर अफ्रीका तक / हो ब्राजील, कनाडा, न्यूजीलैंड, साइप्रस / धूम मचाता जाता देखो एक वायरस । नया प्रयोग है । पुस्तक में कविता है कोरोना कंस में कोरोना विभीषिका का सजीव चित्रण किया है-''घूम रहे यमराज के, पट्ठे लातादाद/धमा चौकड़ी कर रहे, रावण की औलाद/पॉजिटिव चिह्नित हुआ, जो कोई मजबूर / उस घरवाले से रहे, घर वाली भी दूर।'' इसी प्रकार काव्य रचना ''कि सड़कें सूनी है आपदा दूनी है'', ''यह सार्वजनिक कसाईघर है'', ''थोथी अकड़ दिखाओ मत'', ''जब कभी कोई नया इतिहास लिखा जाय'' में समय के सच से रूबरू कराया है। जिनमें सतत रचनाशीलता, रचनात्मकता और ईमानदारी है। कवि कोरोना की विभीषिका से भयभीत नहीं है। वह कोरोना को सीधा ललकारता है- कोविड नाइनटीन की ऐसी क्या औकात, हम मन के महाराजा हमें अलमस्त रहना है, और शीर्षक रचना ''हम अजेय अपराजेय है'' में सकारात्मक प्रकाश है। कवि कहता है ''सृष्टि ने पहले भी देखे/विनाशकारी कई 'तमाशे'/ महाव्याधियाँ, महायुद्ध / और महाघोर षड़्यंत्र इरादे / रोक नहीं उसको कोई पाया / जीवन यापन प्रमेय है / हम अजेय अपराजेय हैं। पुस्तक में कवि ने अपनी कविता आएगी फिर गाँव में उजली-उजली भोर में कोरोना विभीषिका से जूझ रहे वीरों के सम्मान का आव्हान किया है- इन योद्धाओं का करें,जन-जन सब सम्मान / तभी देश मे बढ़ेगी, मानवता की शान। संग्रह में कोरोना से हटकर रचना 'एक भारतीय नारी का हलफनामा', 'माँ', मातृशक्ति की प्रभावी रचना है। 'कलाकारी', 'ऐसा दिन आएगा निश्चित', 'खुशनसीब है दर्द', 'हिम्मत न हारे', 'युग की गवाही', 'साहित्य में हवाला', 'मेरी पहली राइड', 'बाबाजी और लालाजी विविध चित्रों', भावों को व्यक्त करती प्रभावशाली रचनाएँ हैं। संग्रह में रचनाओं के साथ चित्र शब्दों के रंगों को गहरा करते हैं । रचनाओं में प्रकृति चित्रण नयनाभिराम बन पड़ा है। पुस्तक के रचना संसार मे विषय की विराटता और विविधता जबरदस्त

www.rajsevak.com

है। कविताओं, गीतों, ग़ज़लों में जीवन की संवेदनाएँ हैं । पुस्तक की भाषा सहज, सरल और सम्प्रेषणीय है। पुस्तक की रचनाओं में बिम्बों, प्रतीकों, उपमाओं, तुलनाओं का सार्थक प्रयोग है। पुस्तक के प्रारम्भ में वरिष्ठ कवि भवानीशंकर व्यास 'विनोद' की भूमिका ''अजेय मनुष्यता का शंखनाद'' रचनाओं के मर्म को अभिव्यक्त करती है। रचनाकार ने पुस्तक में अपनी बात ''मेरे भाव'' में अपने रचनाकर्म की अनुभूतियों को साझा किया है। कवि ने अपने इस चौथे काव्य संग्रह को अपने धर्म माता पिता राजाराम-श्रीमती पुष्पा देवी मथुरिया और समाजसेवी सीताराम-श्रीमती परमेश्वरी देवी मथुरिया को समर्पित किया है। पुस्तक का प्रभावशाली आवरण कनय शर्मा द्वारा बनाया गया है। पेपरबैक में छपाई और कागज़ स्तरीय है। आशा है राजाराम स्वर्णकार का यह नया काव्य संग्रह साहित्य जगत में विशिष्ट सिद्ध होगा।

समीक्षक : **अशफ़ाक़ क़ादरी,**
मोहल्ला चूनगरान, बीकानेर (राज.)-334005
मो: 9413190309

'कुछ पढ़ते..कुछ लिखते'

लेखक : डॉ. प्रमोद कुमार चमोली; **प्रकाशक** : विकास प्रकाशन, स्टेशन रोड, बीकानेर; **संस्करण** : 2021; **पृष्ठ** : 192; **मूल्य :** ₹ 400/-

महात्मा गाँधी ने डायरी-लेखन के महत्त्व को उजागर करते हुए लिखा था- 'जो सत्य की आराधना करता है, उसके लिए वह (डायरी) पहरेदार का काम करती है, क्योंकि उसमें सत्य ही लिखना है।'

डायरी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है। इसमें लेखक आत्म-साक्षात्कार करते हुए, स्वयं से संप्रेषण की स्थिति में होता है। लेखक के मानसिक उद्वेगों, अनुभूत विचारों की अभिव्यक्ति का डायरी लेखन एक सशक्त माध्यम है। यह लेखक के व्यक्तित्व का उद्घाटन करती है व समाज के विभिन्न पक्षों का जीवंत चित्र उपस्थित करती है। सतीशराज पुष्करणा के अनुसार-'डायरी के वे पृष्ठ ही साहित्य की विधा में स्वीकृत किए जाते हैं, जो वैयक्तिक होते हुए भी सार्वजनिन हों और उनमें सत्य, शिव एवं सुन्दर के दर्शन भी हों।' विश्व के अनेक महान व्यक्ति डायरी लेखन करते थे व उनके जाने के बाद भी उनके विचारों-अनुभवों से लोग लाभान्वित व प्रेरित होते हैं।

नित्य प्रति के व्यक्तिगत लिखित अनुभवों को डायरी की संज्ञा दी गई है, इसलिए माना जाता है कि डायरी आत्मगत विधा है, वस्तुगत नहीं। अंग्रेजी का 'डायरी' शब्द लैटिन भाषा के 'डायरियम' से निर्मित है व अंग्रेजी से इस शब्द को हिन्दी में स्वीकृत कर लिया गया है। इसे दैनंदिनी, रोजनामचा, दैनिकी के नाम से भी जाना जाता है। डायरी अंतर्मन की अभिव्यक्ति है। यह लेखक की अंतरात्मा को पढ़ने वाली प्रथम पाठक है।

डॉ. सत्यनारायण के शब्दों में-'डायरी में लेखक अक्सर खुलकर अपनी बात कहता है। उसकी अपनी रचना प्रक्रिया, अपना जीवन, प्रेरणास्त्रोत, अपनी कामयाबी का रहस्योद्घाटन डायरी द्वारा ही होता है। डायरी लेखक की एक तरह से आत्मकथा भी होती है। किसी भी लेखक के समय, परिवेश और उसके व्यक्तित्व को जानने समझने के साथ डायरी उसके परिवर्तनों की साक्षी भी होती है। लेखक घटनाओं का इस प्रकार वर्णन करता है कि पाठक सहज ही आकर्षित हो जाता है और उसे लगने लगता है कि यह सब मेरे साथ ही घटित हुआ है और वह उसके साथ अपने को आत्मसात कर लेता है। डायरी लेखक समय-समय पर अपने अतीत के अनुभवों की पुनर्समीक्षा करता हुआ, अपने को परिभाषित करता हुआ आगे बढ़ता है।'

साहित्यकार-शिक्षाविद् डॉ. प्रमोद कुमार चमोली ने भयावह कोरोना लॉकडाउन के दौरान 'कुछ पढ़ते..कुछ लिखते' पुस्तक की रचना करी। इसमें 21 मार्च 2020 से 3 मई 2020 तक के लॉकडाउन समय का चित्रण किया गया है। डायरी विधा में लिखी गई इस पुस्तक में इस काल को संवेदनशीलता से उकेरा गया है। साहित्यिक डायरी लेखन के तार सीधे-सीधे लेखक के हृदय से जुड़े होते हैं। डायरी में लेखक अपने सामर्थ्य-दुर्बलताओं, क्रिया-प्रतिक्रिया, शत्रुता-मित्रता आदि का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। डॉ. बैजनाथ सिंहल लिखते हैं-'वह (लेखक) जिन घटनाओं, व्यक्तियों, दृश्यों, कार्यों के संपर्क में आता है, उन्हें निजी परिप्रेक्ष्य में देखने के साथ-साथ जीवन-परिप्रेक्ष्य में भी देखता है।'

उस कठिन दौर की बेचैनी, निराशा, अवसाद के साथ-साथ सकारात्मक पहलुओं का भी डॉ. चमोली ने सजीव चित्रण किया है। यह एक ऐसा अभूतपूर्व समय था, जब भारत ही नहीं, अपितु पूरा विश्व कोरोना वायरस के खौफनाक चंगुल में फंस गया था। सब कुछ ठप्प पड़ गया था- व्यापार, मनोरंजन-स्थल, शिक्षण संस्थाएं, कार्यालय सभी इस तालाबंदी की चपेट में आ गए थे। किसी ने भी इस प्रकार की घटना की कल्पना तक नहीं की थी। आमजन घर की चौखट तक सीमित हो गए थे व इस लक्ष्मण-रेखा को पार करने की जुर्रत नहीं कर पा रहे थे। ऐसे मुश्किल हालातों में समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए।

डॉ. चमोली ने इस कठिन समय का 'सदुपयोग' इस महत्त्वपूर्ण कृति की रचना करके किया। यह डायरी इस कालखंड के जीवंत दस्तावेज के रूप में पाठकों के सम्मुख आती है। लेखक के भोगे हुए यथार्थ से हर व्यक्ति 'रिलेट' कर सकता है। इसमें चित्रित विविध घटनाएं व परिस्थितियां पाठक को अपनी सी लगती हैं।

डॉ. शिवनारायण के अनुसार-'डायरी-लेखन आत्मबोध का उत्खनन मात्र नहीं है, बल्कि आत्म-संलिप्तता की स्वीकृति भी है.... बस, भावना की शुद्धता। इसी शुद्धता की अभिव्यक्ति का खेल चलता है डायरी में। खेल जितना स्वस्थ, उतनी ही स्वच्छ डायरी। बड़ी जटिल प्रक्रिया है यह।' डायरी व आत्मकथा में अनेक समानताएं होते हुए भी मूलभूत अंतर है। डायरी प्रतिदिन का लिखा गया लेखन है तो आत्मकथा पीछे के एक पूरे जीवनकाल का, एक साथ कलमबद्ध किया गया लेखा-जोखा। डायरी में प्रतिदिन उठ रही भावनाओं को तुरंत लिख लिया जाता है पर आत्मकथा में भूतकाल की घटनाओं को याद करके लिखने पर विवरण, दृष्टिकोण, विवेचना में अंतर आ सकता है व इसीलिए यह खरेपन से दूर होती है जबकि डायरी सत्य के अधिक निकट। डायरी जहाँ सूक्ष्मदर्शीय

www.rajsevak.com

अवलोकन है वहीं आत्मकथा एक वृहद दृष्टि।

पुस्तक के अनुसार 22 मार्च 2020 को राजस्थान में 26 कोरोना संक्रमित थे व 3 मई 2020 को कुल संक्रमितों की संख्या बढ़कर 2772 हो गई थी। बाद में हमने देखा कि उस दौरान आमजन में कोरोना महामारी का जो भय था, वह लॉकडाउन समाप्त होते ही तेजी से खत्म हो गया व इसी लापरवाही का दुष्परिणाम था- कोरोना की अत्यधिक घातक द्वितीय लहर। आशंका जताई जा रही है कि अगर अब हमने फिर लापरवाही बरती, तो देश में कोरोना की और भी अधिक घातक तीसरी लहर आना तय है।

कोरोना काल के दौरान भय व चिंता के माहौल के बीच मानवीय मूल्यों में आई गिरावट को लेखक ने करीब से महसूस किया है। वे लिखते हैं-'सुबह उठने के बाद अखबार पढ़ा। एक नकारात्मक खबर ने सुबह-सुबह मूड खराब कर दिया। जोधपुर में एक डॉक्टर को मकान मालिक ने कोरोना के डर से मकान खाली करने को कह दिया। आखिर यह डर ही है कि इटली से भारतीयों को लिट करके लाने वाले एयर इंडिया के क्रू मेंबरों के साथ दिल्ली व मुंबई में पड़ोसियों ने आपत्तिजनक व्यवहार किया' (पृ. 27)। वे लिखते हैं-'न्यूज चैनल घृणा का व्यापार चलाने लगे हैं। दिन-रात कोरोना को धर्म से जोड़ रहे हैं। लेकिन यह सच है कि कोरोना धर्म या जाति पूछकर संक्रमित नहीं करता।' (पृ. 62)

लॉकडाउन के कारण लाखों मजदूरों व अन्य लोगों का शहरों से पलायन हुआ था। डॉ. चमोली ने 28 मार्च की डायरी में लिखा है- 'हजारों की संख्या में मजदूरों को सड़क पर देखकर कोई भी संवेदनशील व्यक्ति हिल सकता है। दरअसल, इस रिवर्स माईग्रेशन की तस्वीरों ने जो बयाँ किया है, वह यह प्रदर्शित करता है कि हमारे शहरों में इतने लोग बेघर हैं।' लेखक ने इस संदर्भ में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मदन केवलिया द्वारा रचित एक दोहे का उल्लेख किया है-

'बुढिया नब्बे साल की,
लेकर कुछ सामान
दिल्ली से पैदल चली, जाना राजस्थान।'

डॉ. चमोली शिक्षकों की घटती प्रतिष्ठा पर चिंतित हैं। वे लिखते हैं-'शिक्षकों की ड्यूटी भी कोरोना के लिए लगी है। वे भी फ्रंट पर काम कर रहे हैं, लेकिन कोई नाम लेने वाला नहीं है... वैसे जो भी बड़े सरकारी कार्य होते हैं, वे शिक्षकों के बिना नहीं हो सकते। फिर भी न जाने क्यों शिक्षकों की छवि नकारात्मक बनी हुई है... अफसोस तो तब होता है जब सभी लोग शिक्षक का मखौल बनाते हुए यह भूल जाते हैं कि वे आज जिस मुकाम पर हैं, शिक्षकों के कारण ही हैं।' (पृ. 82)

लॉकडाउन के दौरान लेखक अपने मित्रों से दूरभाष के माध्यम से सतत संपर्क में रहे, साथ ही अनेक मित्र उनकी स्मृतियों में आते रहे। सच तो यह है कि हम अपने मित्रों-परिचितों से कटते जा रहे हैं। वे लिखते हैं-'संबंधों को जिंदा रखने के लिए प्रयास की जरूरत होती है। कभी-कभी सोचता हूँ कि आखिर मैं ही सबसे बात क्यों करूँ ?.... बहरहाल, अंत में निष्कर्ष यही है कि सब-कुछ भूलकर दोस्तों को याद करना भी इबादत है।' (पृ. 100)

डॉ. चमोली कोरोना के विनाश भरे समय में भी आशावादी दृष्टिकोण से सृजन की बात करते हैं। वे लिखते हैं-'उमस भरी गर्मी में ताजी हवा के झोंके से जिस प्रकार की ताजगी का संचार होता है, ठीक उसी तरह की ताजगी सृजन से मिलती है।' (पृ. 115)

लॉकडाउन के दौरान यह अच्छी बात हुई कि पर्यावरण-प्रदूषण में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। डॉ. चमोली के शब्दों में-'अरबों रुपयों के खर्च के बाद भी गंगा का पानी साफ नहीं हो पाया। आज लॉकडाउन के कारण गंगा के साफ पानी के वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चित हैं। दिल्ली में गंदे नाले में तब्दील हुई यमुना साफ हो चुकी है। प्रदूषण का स्तर काफी कम हुआ है।' (पृ. 149)

लेखक अपने बीकानेर शहर के बारे में लिखते हैं-'बीकानेर की गंगा-जमुनी तहजीब एक मिसाल के रूप में देखी जा सकती है। यह वह शहर है जो कर्फ्यू का स्वाद भी पहली बार कोरोना के कारण चख रहा है।' (पृ. 161)

उन्होंने मानव स्वभाव की पडताल करते हुए लिखा है-'हम अपने जीवन का बहुत-सा समय दूसरों की बुराई या गलतियाँ ढूँढ़ने में लगा देते हैं। यदि इतना समय अपने आप को दें तो बहुत कुछ किया जा सकता है।' (पृ. 175)

इस कालखंड के दौरान अनेक आत्मीय लोगों को खोने की पीड़ा भी हम सबने सही है। डॉ. चमोली ने प्रसिद्ध अभिनेता ऋषि कपूर व इरफान खान, साहित्यकार डॉ. राजानंद भटनागर व आनंद वि. आचार्य के आकस्मिक निधन से हुई पीड़ा का मार्मिक वर्णन किया है।

डॉ. चमोली ने इस दौरान अनेक पुस्तकों का अध्ययन-मनन किया व उन पर अपनी टिप्पणियां भी की हैं। हालांकि कुछ स्थानों पर इन टिप्पणियों का विस्तार थोड़ा ज्यादा हो गया है, जो अनेक पाठकों के लिए बोझिल हो सकता है क्योंकि इनमें से अधिकतर पुस्तकों पर पूर्व में अनेक बार पत्र-पत्रिकाओं, गोष्ठियों में चर्चा हो चुकी है, साथ ही शायद आम पाठक के लिए इन गंभीर पुस्तकों पर की गई उतनी ही गंभीर टिप्पणियां रुचिकर न हों।

डॉ. चमोली शिक्षाविद् हैं, इस दृष्टि से उनसे यह अपेक्षा थी कि वे कोरोना के कारण शिक्षा के क्षेत्र में आए अभूतपूर्व बदलावों पर भी विस्तृत समीक्षात्मक विचार रखते। कोरोना काल में बंद शिक्षण संस्थाओं, निरस्त परीक्षाओं, प्राइवेट शिक्षण संस्थाओं व इनके शिक्षकों की समस्याओं व समाधान की दिशा में उनका चिंतन अपेक्षित था।

पुस्तक की भाषा सहज-सरल है। आशा है कि पुस्तक के अशुद्ध शब्दों को आगामी संस्करण में सुधार लिया जाएगा।

अंत में कहा जा सकता है कि साहित्य जगत में अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करवाने वाले, नाट्य प्रस्तुतियों में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले, शैक्षणिक नवाचारों से राज्य स्तर पर अलग पहचान कायम करने वाले व माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर में शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी के पद पर कार्यरत डॉ. प्रमोद कुमार चमोली को इस महत्त्वपूर्ण, सामयिक, सशक्त पुस्तक के लिए हार्दिक बधाई।

समीक्षक : **शरद केवलिया**
सचिव, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं
संस्कृति अकादमी, बीकानेर
मो. 9829008959

www.rajsevak.com

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

बोध कथा

समर्थ गुरु रामदास के शिष्य छत्रपति शिवाजी का अपने गुरु की भक्ती और आनंद को देखकर मन हुआ कि राज्य, शासन और अन्यान्य परेशान करने वाले दायित्वों से छुटकारा पा लिया जाए। इसलिए एक दिन जब समर्थ का आगमन हुआ तो शिवाजी ने उनसे कहा-गुरुदेव! मैं राज्य के इन झंझटों से परेशान हो गया हूँ। नित्यप्रति नई उलझनें। इसलिए मैं संन्यास लेने की सोच रहा हूँ। गुरुदेव बोले-'हाँ ठीक है। संन्यास ले लो उससे अच्छा और क्या हो सकता है। शिवाजी पुलकित हो उठे, बोले-'आप ऐसा कोई व्यक्ति बताइए जिसे मैं राज्य सौंप सकूं।' समर्थ बोले-'मुझे राज्य दे दे और निश्चिंत हो वन में चला जा।'

शिवाजी ने हाथ में जल लेकर राज्य दान का संकल्प कर लिया और वन को जाने लगे। उन्होंने दिनचर्या के कुछ साधन साथ ले जाना चाहे तो समर्थ बोले- 'तुम राज्य दान कर चुके, तुम्हारा उन पर कोई अधिकार नहीं है।' तब शिवाजी खाली हाथ ही जाने लगे तो समर्थ बोले-'दिनचर्या के लिए साधनों की आवश्यकता पड़ेगी तो कहां से लाओगे' शिवाजी ने उत्तर दिया-'कहीं नौकरी कर लूँगा, उन्हीं पैसों से व्यवस्था बना लूंगा।' समर्थ ने हँसते हुए कहा-'अच्छा तो तुम्हें नौकरी ही करनी है तो राज्य तो तुम मुझे दे ही चुके, अब तुम मेरे सेवक बनकर इस राज्य का संचालन करो। यह राजकाज ही तुम्हारी नौकरी है। इसके उपरांत कभी शिवाजी को राज्य करने में कोई तनाव अनुभव नहीं हुआ। सत्य यही है कि मनुष्य कार्य करने से नहीं वरन उसे बोझ समझकर करने से तनावग्रस्त होता है उसे दायित्व रूप में करने से मन निष्कल्प रहता है और तनाव मुक्त रहता है।

राजेश्वरी वैष्णव, कक्षा-10
रा.उ.मा.वि., बिशनगढ़, जालोर

बोध कथा

एक पिता ने अपने पुत्र को मिठाई के दो टुकड़े दिए और उससे कहा- छोटा टुकड़ा दोस्त को देना और बड़ा टुकड़ा खुद खाना। पिता का कहा सुनकर बालक ने 'हाँ' तो कहा, परंतु उसने बड़ा टुकड़ा साथी को दिया और स्वयं छोटा टुकड़ा खाने लगा। पिता दूर खड़े यह दृश्य देख रहे थे। उन्होंने बाद में पुत्र से पूछा-'पुत्र! तूने बड़ा टुकड़ा उसे देकर छोटा स्वयं क्यों खाया, मैंने तो तुझे साथी को छोटा टुकड़ा देने और स्वयं बड़ा टुकड़ा खाने हेतु कहा था।

वह बालक बोला- 'पिताजी! दूसरों को अधिक देने और स्वयं कम खाने में मुझे अधिक आनंद आता है।' उसके इस कथन पर पिता अपने पुत्र को निहारते हुए सोचने लगे कि सचमुच यही भावना मानवता के लिए आदर्श है और इसी पर विश्व शांति की सारी संभावनाएं हैं। मनुष्य अपने लिए कम चाहे और दूसरों को अधिक देने का प्रयत्न करे तो समस्त झगड़ों का अंत संभव है।

फूलवन्ती, कक्षा-11
रा.उ.मा.वि., बिशनगढ़, जालोर

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।
-वरिष्ठ संपादक

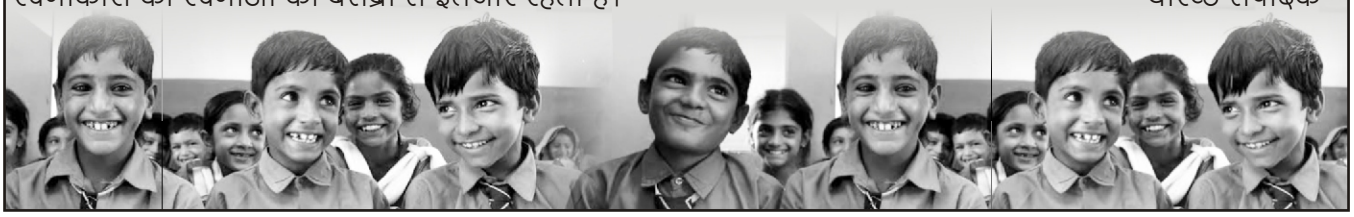

www.rajsevak.com

ज्योति सारण कक्षा-8 राउमावि. होडू, बाड़मेर

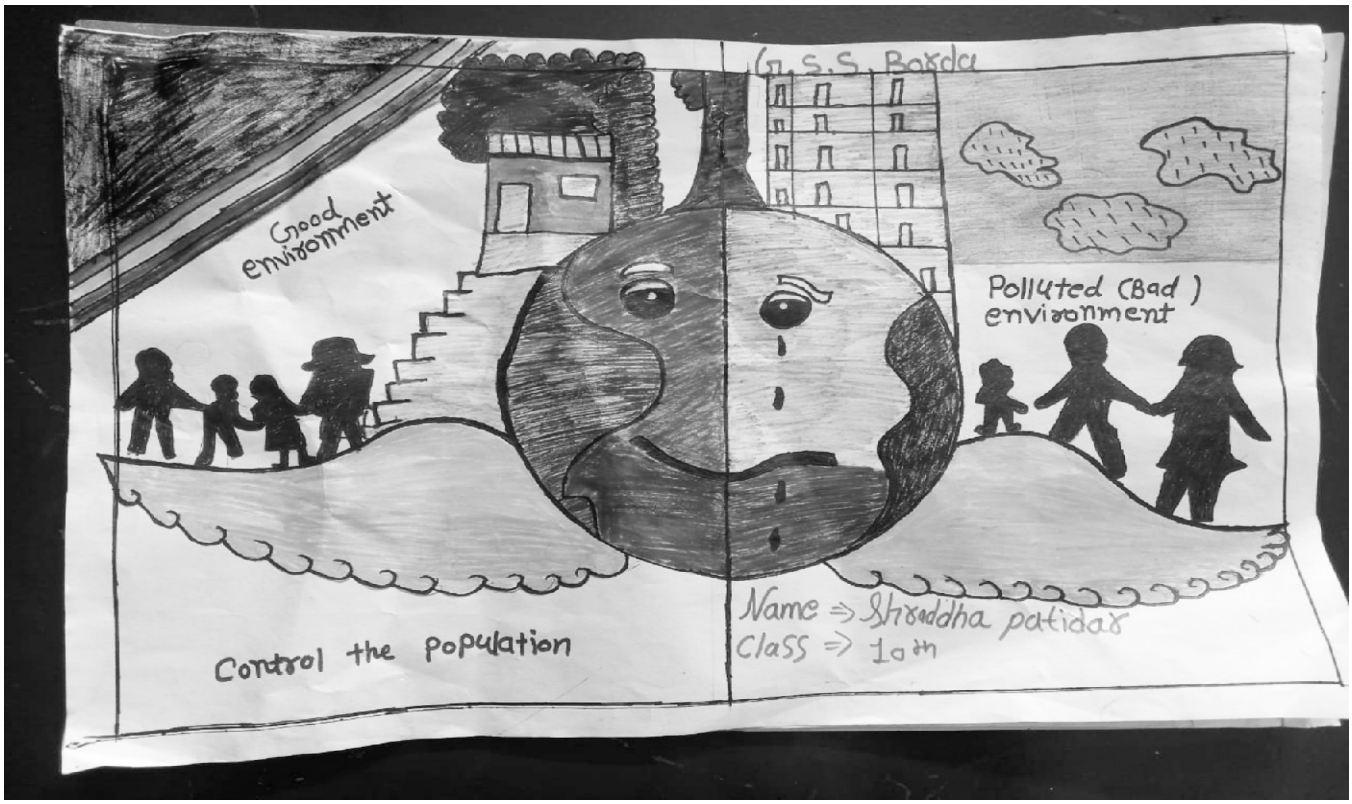

श्रद्धा पाटीदार कक्षा-10, राउमावि. बोरड़ा, झालरापाटन, झालावाड़

www.rajsevak.com

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

हिन्दी लघुकथा इतिहास के सबसे कम उम्र के लेखक अरमान ने सार्दुल स्कूल स्टॉफ को उपलब्धि का प्रतीक चिन्ह किया भेंट

बीकानेर– राजकीय सार्दुल सीनियर माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. सोनिया शर्मा ने विद्यालय के 16 वर्षीय छात्र अरमान नदीम की लघुकथा की किताब सुकून के प्रकाशन तथा हिन्दी लघुकथा इतिहास में सबसे कम उम्र का लेखक होने पर विद्यालय के लिए शानदार उपलब्धि बताया तथा जिला कलेक्टर नमित मेहता द्वारा किताब विमोचन को बड़ी उपलब्धि बताते हुए अरमान नदीम को शाला स्टॉफ के साथ अपने कक्ष में आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अरमान नदीम ने विद्यालय पुस्तकालय हेतु अपनी किताब सुकून एवं किताब का मुखपृष्ठ फोटोफ्रेम के रूप में भेंट किया। वरिष्ठ हिन्दी शिक्षक सुभाष जोशी ने कहा की विद्यार्थियों में साहित्यिक संस्कार होना शुभ संकेत है। डॉ. सोनिया शर्मा ने अपने विद्यार्थी की साहित्यिक उपलब्धि पर गर्व प्रकट करते हुए कहा की इस उपलब्धि को यादगार बनाए रखने के लिए इस किताब के मुखपृष्ठ को प्रतीक रूप में सहेजा जाएगा। प्रत्येक लघुकथा पर स्कैच बनाने कलाकार इमरोज़ नदीम का परिचय वरिष्ठ शाइर और विद्यालय के पूर्व वरिष्ठ शिक्षक गुलाम मोहिउद्दीन माहिर ने करवाया। सबसे कम उम्र के लघुकथाकार के रूप में शानदार उपलब्धि हासिल कर साहित्य संसार मे अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाने पर अरमान नदीम को डॉ. सोनिया शर्मा सहित शिक्षक सुभाष जोशी गुलाम मोहिउद्दीन माहिर, कन्हैया लाल राठौड़, कुलदीप सिंह, महेन्द्र मोहता, तब्बसुम अज़ीज़, पवन मित्तल, पूनम कंवर, मंजू वर्मा, मीना खत्री, पूनम कलावत आदि ने हौसला अफजाई करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया।

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ में भामाशाह द्वारा वाटर कूलर भेंट किया

झालावाड़– राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ में स्व श्री राधेश्याम जी बोहरा की स्मृति में बालिकाओं को पेयजल सुविधा हेतु वाटर कूलर भेंट किया गया। जिसका उद्घाटन श्री जयप्रकाश जी बोहरा के कर कमलों से फीता काटकर सम्पन्न किया गया। उपस्थित सदस्यों में श्री प्रमोद

कनेरिया पीईओ हरिगढ़, संस्थाप्रधान प्रेम दाधीच,एस एम सी सदस्य शैलेन्द्र सेन, ओमप्रकाश, सरोज मीणा, राम सिया, सियाराम, प्रियंका दुबे, कहकशा द्वारा कार्यक्रम में फलदार पौधों का वृक्षारोपण भी किया गया। समस्त बालिकाओं और उपस्थित ग्रामवासियों ने भामाशाह के प्रति आभार प्रकट किया।

शिक्षा निदेशक ने दिए ऑनलाइन पढ़ाई के गुर

राजसमंद– कोरोनाकाल में पटरी से उतरी शिक्षण व्यवस्था में लागू नवाचार को प्रभावी बनाने व शैक्षणिक कामकाज की समीक्षा करने राज्यभर के दौरे पर निकले शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी शनिवार को राजसमंद पहुँचे। उन्होंने महात्मा गाँधी सीनियर सैकण्डरी स्कूल राजसमंद में शिक्षा अधिकारियों व शिक्षकों की बैठक में आह्वान किया कि वे कोविड-19 की विषम परिस्थितियों को अवसर मान चुनौती के रूप में स्वीकार करें। सतत प्रबोधन, प्रोत्साहन देकर ऑनलाइन शिक्षण को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाने का प्रयास करें। शिक्षा निदेशक ने स्माइल-3 की चर्चा करते हुए कहा कि ऑनलाइन शिक्षण में राजस्थान पूरे देश में आदर्श बन कर उभरा है। विद्यार्थी मेपिंग क्विज, हवामहल, गृहकार्य, आओ घर से सीखे कार्यक्रम के साथ ही शिक्षादर्शन, शिक्षा वाणी का लाभ लाखों विद्यार्थियों को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि हर नए काम में समस्या आती है, हमें भी सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास से इस काम को तकनीकी दक्षता से आगे बढ़ाना है। शिक्षा निदेशक ने इस अवसर पर शिक्षक हित में उठाए कदमों की भी चर्चा की। स्वामी ने महात्मा गाँधी सीनियर सैकण्डरी स्कूल के शिक्षकों से भी चर्चा की। बैठक में संयुक्त निदेशक धर्मेन्द्र जोशी, जिला शिक्षा अधिकारी ओमशंकर श्रीमाली, परमेश्वर श्रीमाली सहित सातों खण्डों के शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे। परमेश्वर श्रीमाली, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी पंकज सालवी, प्रमोद पालीवाल, सोहन सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजन शिक्षाविद् दिनेश श्रीमाली ने किया। इससे पूर्व निदेशक का अतिरिक्त जिला शिक्षा रिजवान शेख, मनोज कुमार, शिवकुमारी और कमलेश काहल्या ने स्वागत किया।

विद्यार्थी सेवा केन्द्र का शिलान्यास

सीकर– श्री कल्याण रा.उ.मा.वि. सीकर के खैल मैदान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा विद्यार्थी सेवा केन्द्र खोलने के लिए

www.rajsevak.com

दिनांक 01 जुलाई, 2021 को शिलान्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा शिक्षामंत्री, राजस्थान सरकार थे तथा अध्यक्षता श्रीमान राजेन्द्र पारीक पूर्व उद्योग एवं आबकारी मंत्री राजस्थान सरकार ने की। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान सौरभ स्वामी (IAS) शिक्षा निदेशक बीकानेर, श्रीमान अविचल चतुर्वेदी जिला कलेक्टर सीकर, श्रीमान कुंवर राष्ट्रदीप पुलिस अधीक्षक सीकर, श्रीमान रिछपाल सिंह अधीक्षण अभियन्ता रा. स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर श्रीमान घनश्याम दत्त जाट सीडीओ. सीकर, श्रीमान आनन्द पारीक (विधायक पुत्र) सीकर, श्रीमान लालचन्द नहलिया डीईओ. सीकर, मनोज कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य श्री कल्याण रा.उ.मा.वि. सीकर तथा जीवण खां सभा सीकर थे। स्थानीय विद्यालय की वरिष्ठ अध्यापक भंवरी देवी का सेवानिवृत्ति समारोह का भी आयोजन किया गया जिसमें शिक्षामंत्री महोदय ने विद्यालय के स्टाफ व संचालित गतिविधियों की सराहना (प्रशंसा) करते हुए विद्यालय के खेल मैदान की विभिन्न गतिविधियों के लिए 50 लाख तथा विद्यालय परिसर में 5 कमरे बनाने की भी घोषणा की। इस राज्यस्तरीय कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के जीव विज्ञान व्याख्याता पुरुषोत्तम लाल स्वामी ने किया। कार्यक्रम में राकेश तेतरवाल सहायक निदेशक समसा, रिछपाल सिंह ADPC समसा, हरदयाल सिंह फगेड़िया ADEO, रामचंद्र सिंह बगड़िया ADEO, सुल्तान सिंह CBEO पिपराली, बलदेव सिंह बगड़िया, रामचंद्रसिंह, दिलीप सिंह आदि अनेक शिक्षाविद् तथा विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद था।

प्रधानमंत्री स्काउट शील्ड प्रतियोगिता लॉग बुक देखकर अभिभूत हुए जिला कलेक्टर महोदय

राजसमंद– जिले के पंचायत समिति कुंभलगढ़ के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमरवास के स्काउट ट्रुप द्वारा प्रधानमंत्री स्काउट शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत नशा उन्मूलन विषय पर वर्षपर्यंत आमजन को नशा उन्मूलन के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्य जय प्रकाश स्वामी ने बताया कि स्काउट प्रभारी विक्रम सिंह शेखावत और सहायक स्काउट प्रभारी हेमराज सैनी के मार्गदर्शन में 32 स्काउट ट्रूप द्वारा प्रधानमंत्री स्काउट शील्ड प्रतियोगिता के तहत जुलाई से लेकर जून तक नशा उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति एवं संस्थागत भलाई के लिए वर्ष पर्यंत गतिविधियाँ कर आमजन को नशा उन्मूलन के लिए प्रेरित किया। इस दौरान स्काउट प्रभारी के मार्गदर्शन में कोरोना गाइड लाइन की पालना करते हुए वर्ष पर्यंत स्काउट द्वारा नशा उन्मूलन विषय पर निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, विभिन्न स्थानों पर नशा उन्मूलन संबंधी स्लोगन लिखना, नशा उन्मूलन संबंधी पंपलेट वितरित कर आमजन को नशा नहीं करने के लिए जागरूक किया। विभिन्न अधिकारियों के द्वारा वार्ताओं का आयोजन किया गया। ग्राम पंचायत क्षेत्र में नशा उन्मूलन संबंधी रैलियां एवं साइकिल रैली निकालकर लोगों को नशा नहीं करने का संदेश दिया। प्रधानाचार्य जयप्रकाश स्वामी ने बताया कि वर्ष पर्यंत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करके इनकी लॉग बुक बनाकर जिला कलेक्टर महोदय राजसमंद, जिला पुलिस अधीक्षक, जिला परिषद मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी सीओ स्काउट राजसमंद आदि अधिकारियों को लॉग बुक का अवलोकन कराया गया। जिला कलेक्टर महोदय द्वारा स्काउट्स द्वारा नशा उन्मूलन के लिए किए गए वर्ष पर्यंत कार्यों के लिए धन्यवाद और स्काउट ट्रूप को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया। स्काउट प्रभारी विक्रम सिंह शेखावत ने बताया कि मुख्य खंड शिक्षा अधिकारी कुंभलगढ़ मोहनलाल बलाई, स्थानीय संघ कुंभलगढ़ सचिव कृष्ण कुमार यादव, उप प्रधान राधेश्याम राणा, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय दिवेर प्रधानाचार्य गणेश राम बुनकर बुनकर आदि के सहयोग से प्रधानमंत्री शील्ड कार्य आदि के सहयोग से संपादित हुआ।

बच्चों में वृक्षों के प्रति लगाव बढ़ाने हेतु तैयारी

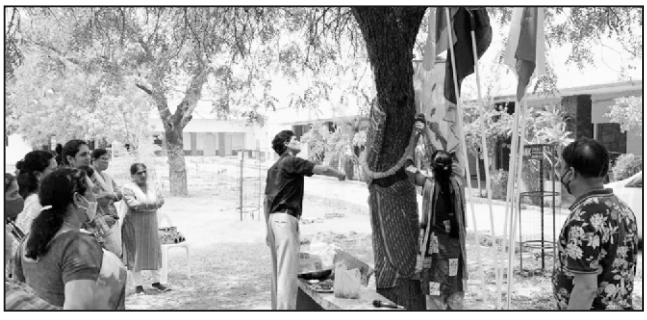

कोटा– राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मण्डाना में बच्चों में पर्यावरण के प्रति लगाव बढ़े इस विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया साथ ही वृक्षों को सजीव ईश्वरीय रूप मानकर वस्त्र पहनाकर रक्षा सूत्र बाँध खीर का भोग लगाया गया। प्रधानाचार्य दीपक चतुर्वेदी ने बताया वृक्षारोपण श्रेष्ठ कार्य है। विचार गोष्ठी में सभी स्टाप ने विचार रखे। विचार गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पर्यावरण के लिए प्रेरित करना है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य व समस्त स्टाप द्वारा पर्यावरण मित्र शारीरिक शिक्षक शिव प्रकाश शर्मा को सम्मानित किया गया।

www.rajsevak.com

जन्मदिन के अवसर पर पौधारोपण किया गया

जालोर– शारीरिक शिक्षक दलपत सिंह आर्य ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल में पौधारोपण किया गया। संस्थाप्रधान सुरेंद्र सिंह परमार ने बताया कि विद्यालय की शारीरिक शिक्षक के पद पर कार्यरत आर्य ने अपने जन्मदिवस पर पौधरोपण कर मिसाल पेश की है। परमार ने कहा कि धरती का सिंगार वृक्ष है। इसलिए हमें पर्यावरण को शुद्ध करने व पर्यावरण अच्छा हो उसके लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने चाहिए। इस मौके पर अध्यापक राजेश बालोत, स्वीटी सिसोदिया, पंखु देवी व पवनी देवी उपस्थित थे।

धार विद्यालय को भामाशाह ने भेंट किए इनवर्टर और प्रिंटर

उदयपुर– जिले के बड़गांव ब्लाक के आदिवासी अंचल में स्थित रा उ मा वि धार के शिक्षकों द्वारा इन्वर्टर और प्रिंटर विद्यालय को भेंट किए गए। प्रधानाचार्य डॉ. सत्यनारायण सुथार ने बताया कि धार विद्यालय आदिवासी अंचल में स्थित विद्यालय है जहाँ पर विद्युत की आपूर्ति अनियमित रहती गए और यह समस्या हर समय बनी रहती है इसके समाधान हेतु स्थानीय विद्यालय और पी ई ई ओ क्षेत्र के शिक्षक आगे आए और समस्या का स्थाई समाधान खोजने हेतु प्रयास किए परिणामस्वरूप स्थानीय विद्यालय की व्याख्याता श्रीमती बेला सोलंकी ने 25,000/- इसके अलावा अन्य शिक्षकों दिलीप मेहता, कुसुम कुंवर राव प्रतिभा राव, कृष्णकांत जोशी, जगदीश सिंह राजपूत नवदीप सिंह एवं प्रधानाचार्य डॉ. सुथार द्वारा 8,500/- की अतिरिक्त राशि एकत्र कर कुल 33,500/- का इनवर्टर खरीद कर विद्यालय को भेंट किया गया। साथ ही हाल ही में सेवानिवृत्त हुई स्थानीय विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती सीता शर्मा द्वारा 17,800/- का स्मार्ट वाईफाई प्रिंटर विद्यालय को भेंट किया गया। विद्यालय परिवार द्वारा इन भामाशाहों का भामाशाह सम्मान पत्र व उपरना ओढ़ा कर धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

जल वाटिका बनाकर विद्यालय को समर्पित

अजमेर–राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय ब्यावर में समर्पित ओम जल वाटिका का उद्घाटन श्रीमान संत केवल राम जी महाराज एवं संत गोपाल राम जी महाराज संत डॉक्टर श्री रामस्वरूप जी शास्त्री बाड़मेर संत श्री रामनिवास जी महाराज टोंक के आतिथ्य में हुआ। ओम जल

वाटिका स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश जी प्रजापति सेवानिवृत्त पोस्ट मास्टर पुत्र स्व. श्री चतुर्भुज जी प्रजापति (कारग्वाल) वालों की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम देवी प्रजापति द्वारा निर्मित यह जल वाटिका बनाई गई। पुत्र सीताराम प्रजापति पुत्र वधू नीलम राधेश्याम प्रजापति पुत्र वधू मीना कुमारी परमेश्वर प्रजापति पुत्र वधू दयावंती सभी ने मिलकर इस जल वाटिका में अपना सहयोग प्रदान किया। उद्घाटन समारोह में प्रधानाचार्य राजेश जिंदल पारी प्रभारी राजेंद्र प्रजापति व्याख्याता गुरु शरण गोयल भोपाल सिंह गणेश दास राम सिंह प्रेम चंद भाटी तारा चंद पंवार आदि उपस्थित हुए साथ ही दीपिका हरसुल देव नमन रेणुका हिमांशी दीप्ति मिताली एवं कारगवाल (प्रजापति) परिवार उपस्थित रहा। राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय लगभग 100 वर्षों से संचालित है परंतु अभी तक इस विद्यालय में मॉडिफाइड जल वाटिका नहीं थी प्रजापति परिवार ने यह जल वाटिका बनाकर विद्यालय के लगभग 1500 छात्रों को यह शीतल जल का लाभ मिलेगा इस विद्यालय में लगभग 50 गाँवों एवं शहर के 1500 छात्र विद्या अध्ययन करते हैं स्वर्गीय ओम प्रकाश जी कारवाल इनके पुत्र सीताराम प्रजापति राधेश्याम प्रजापति परमेश्वर प्रजापति इन्होंने भी इसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की इन सब की इच्छा थी कि इसी विद्यालय में यह जल वाटिका बने। विद्यालय प्रधानाचार्य भामाशाह परिवार का बहुत-बहुत आभार अभिनंदन व्यक्त किया।

भामाशाह ने 150 लीटर का वाटर कूलर भेंट किया

बीकानेर– हरियाणा के झज्जर जिले के बेरी गाँव की निवासी चंचल वत्स ने आज रा.सादुल उच्च मा.विद्यालय बीकानेर में 150 लीटर क्षमता का वाटर कूलर भेंट कर समर्पित किया इस अवसर पर उन्होने कहा कि कई दिनों से मेरे मन में बच्चों के लिऐ कुछ करने की इच्छा थी तो मैंने प्रदीप शर्मा और पवन मित्तल के सहयोग से प्रधानाचार्या जी से सम्पर्क किया तो उनकी स्वीकृति से आज ये पावन कार्य सम्पन्न हुआ है एवं मुझे विश्वास है

www.rajsevak.com

कि शाला में इसका सही उपयोग होगा। प्रारम्भ में प्रधानाचार्या डॉ. सोनिया शर्मा ने सब का स्वागत करते हुए चंचल वत्स का धन्यवाद किया कि उन्होंने सादुल स्कूल का चयन किया डॉ. शर्मा ने कहा कि कि इसका सही उपयोग करते हुए रखरखाव विद्यालय द्वारा किया जावेगा। इस अवसर पर उपस्थित क्षेत्रिय पार्षद रमजान कच्छावा ने कहा कि श्रीमती वत्स का यह पुनीत कार्य है और ऐसे कार्य करने वालों को ईश्वर अच्छे फल अवश्य देता है इस कार्य के लिए वे साधुवाद की पात्र है तथा इनकी प्रेरणा से और भी लोगों के मन मे सेवा का जज्बा जग सकता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए व.अ. सुभाष जोशी ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए बताया कि चंचल वत्स को विद्यालय द्वारा भामाशाह सम्मान भी दिया गया। इस अवसर पर प्रदीप शर्मा, राकेश वैद, पवन मितल, मंजू शर्मा, कन्हैया लाल राठौड़, कल्पना शर्मा, कृष्णा यादव, गौतम गौड, तब्सुम अजीज, कीर्ति बंसल इत्यादि उपस्थित थे।

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में वृक्षारोपण व सम्मान

झालावाड़– राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ में ब्लॉक अतिरिक्त शिक्षा अधिकारी श्री मोहनलाल राठौर का प्रमोशन ब्लॉक मुख्य शिक्षा अधिकारी के पद पर होने पर माला पहनाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर हरिगढ़ में नव नियुक्त पटवारी श्री दिलीप गहलोत व प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच, पीईईओ. श्री प्रमोद कनेरिया, ओम प्रकाश सेन, मोहन सिंह, सियाराम, सरोज मीणा, रामसिया, अजय कुमार आदि द्वारा विद्यालय में फलदार पोधों का वृक्षारोपण किया। इसके साथ ही इसका ठीक प्रकार से पालन करने का व्रत लिया।

स्थानीय निवासी द्वारा अलमारी भेंट की गई

जालोर– स्थानीय लालपोल निवासी अम्बालाल पुत्र स्वर्गीय राजाराम सरगरा ने राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लाल पोल को अलमारी भेंट की है। संस्थाप्रधान सुरेन्द्र सिंह परमार ने बताया कि स्कूल में परीक्षा हेतु अलमारी की सख्त आवश्यकता थी। शारीरिक शिक्षक दलपत सिंह आर्य की प्रेरणा से मजदूरी का काम करने वाले अम्बालाल सरगरा ने कोरोना की विकट परिस्थितियों के बावजूद खुशी-खुशी से अलमारी भेंट कर अनूठा उदाहरण पेश किया। आर्य ने उनका आभार जताया। अम्बालाल का संस्थाप्रधान परमार व पूर्व पार्षद भरत मेघवाल ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। मेधवाल ने कहा कि विद्या दान महादान है। इस अवसर पर अध्यापक राजेश बालोत, दलपत सिंह आर्य व स्वीटी सिसोदिया उपस्थित थे।

भामाशाह ने मलार विद्यालय को किया फर्नीचर भेंट

जोधपुर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलार पर भामाशाह फिर से मेहरबान हुए और प्रधानाचार्य कार्यालय को फर्नीचर भेंट किया। प्रधानाचार्य रामकिशोर गहलोत ने बताया कि मलार निवासी रेलवे विभाग में कार्यरत पप्पूराम एवं छोटाराम चोयल ने प्रधानाचार्य कक्ष के लिए टेबल एवं कुर्सी भेंट की जिसकी अनुमानित लागत 20,000/- है। साथ ही मलार विद्यालय से पदोन्नत होकर गए व्याख्याता कमलेश चौधरी ने भी प्रधानाचार्य कार्यालय हेतु चार आधुनिक कुर्सियाँ भेंट की जिसकी लागत 10,000 रुपये है। प्रधानाचार्य गहलोत ने एवं विद्यालय परिवार ने भामाशाहों का अभिनन्दन कर आभार व्यक्त किया। इस दौरान व्याख्याता भभूतराम चौधरी, राकेश चौरड़िया, भरे खाँ, लीला चौधरी, सम्पतराम, सोहनराम, नरेन्द्र चौधरी, बलवीर सिंह, पूनम, सोनू कँवर, भलाराम चौधरी, जेठाराम ढाका, गुरुदयाल सिंह आदि मौजूद थे। भामाशाह को प्रेरित श्री भलाराम चौधरी ने किया।

भामाशाह का सम्मान किया गया

जालोर–दिनांक 15 जुलाई, 2021 को स्थानीय विद्यालय भवन में पूर्व निर्मित में ठंडे पानी हेतु वाटर कूलर (कीमत 45,000) भेंटकर्ता श्री मांगू सिंह पुत्र श्री तेज सिंह जी बालावत (ग्राम नरसाना समिति सायला) के द्वारा लोकार्पण किया गया। इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि श्री जसवंत सिंह बलावत पूर्व अतिरिक्त विकास अधिकारी अध्यक्ष श्री कमल कांत दुपट प्रधानाचार्य रहे। इस मौके पर श्री असलम खान, खीम सिंह, उमराव खान, माल सिंह, कैलाश चंद्र, जितेन्द्र यादव, नंदकिशोर गर्ग, रामकुमार, रामगोपाल, शुभकरण सिंह ढाका, श्रीमती आसिफ रेहाना, राजश्री ठाकुर, रतन सोनगरा, दीना कुमारी सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहे। लोकार्पण के पश्चात भामाशाह का विद्यालय परिवार एवं ग्राम पंचायत नरसाना द्वारा प्रशस्ति पत्र व माल्यार्पण कर बहुमान किया गया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

हार्वर्ड ने बनाया ऐसा मास्क, जो संक्रमण भी बताएगा

हार्वर्ड और मेसाचुसेट्स विवि के शोधकर्ताओं ने ऐसा फेस मास्क तैयार किया है, जो 90 मिनट में संक्रमण का पता कर लेगा। वैज्ञानिकों ने इसके लिए एक पहनने वाला बायोसेंसर विकसित किया है, जो दरअसल पूरी प्रयोगशाला का काम करता है। यह इतना छोटा है कि मास्क पर क्लिप किया जा सकता है। इसे पहनने वाले व्यक्ति को 15 से 20 मिनट सांस लेने के बाद सेंसर का बटन दबाना होता है। 90 मिनट में कोविड संक्रमण का परिणाम आ जाता है। इन्फ्लुएंजा जैसे संक्रामक रोगों की पहचान में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। इस शोध के बारे में हाल ही नेचर पत्रिका में विस्तार से प्रकाशित किया गया है। **-साभार : राजस्थान पत्रिका दिनांक 1.7.21 के पेज नं. 15 से**

ग्रीन फील्ड में नौकरी करने के लिए बेताब भारतीय युवा

नई दिल्ली। ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स की ओर से स्थापित प्रिंस ट्रस्ट के नए अध्ययन में पता चला है कि भारतीयों समेत दुनियाभर के युवा ऐसी नौकरी चाहते हैं, जिससे विश्व की बड़ी चुनौतियों को हल करने में मदद हो सके। एचएसबीसी समर्थित अंतरराष्ट्रीय अध्ययन रिपोर्ट फ्यूचर ऑफवर्क के प्रारंभिक निष्कर्षों में पता चला है कि भारत में 85% युवा ग्रीन नौकरी यानी पर्यावरण से जुड़ी नौकरियों में रुचि रखते हैं। हालांकि इस क्षेत्र में 4 फीसदी ही मुख्यतः नौकरी कर रहे हैं। 84% भारतीय युवाओं का मानना है कि वे समाज की कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं।

जलवायु संकट एक बड़ी समस्या : भारत सहित चार महाद्वीपों में युवाओं पर किए गए सर्वेक्षण में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि युवा जलवायु संकट की स्थिति में परिवर्तन के सूत्रधार बनना चाहते हैं। भारत में सर्वेक्षण में शामिल पांच में से चार युवा उस क्षेत्र के पर्यावरणीय प्रभाव पर विचार करना चाहते हैं, जिसमें वे आगे नौकरी करेंगे।

डिजिटल सेक्टर भी युवाओं की पसंद : डिजिटल उद्योग भी युवाओं के एजेंडे में उच्च स्थान पर रहे। 83% ने डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़े क्षेत्र में नौकरी करने की इच्छा प्रकट की। ट्रस्ट भारत में 2018 से कार्यरत है और स्थानीय सहयोगियों मैजिक बस और आगा खान फाउंडेशन के साथ युवाओं को सीखने और काम पाने में मददगार कार्यक्रम संचालित करता है।

स्थायी रोजगार में भूमिका पर चर्चा : ब्रिटेन में 1976 में स्थापित किए गए प्रिंस ट्रस्ट का कहना है कि वह 18 देशों में मौजूद है और उसने 10 लाख युवाओं की काम, शिक्षा और प्रशिक्षण में मदद की है। पिछले हफ्ते लंदन के सेंट जेम्स पैलेस में एक कार्यक्रम में प्रिंस चार्ल्स और व्यापार जगत के नेताओं ने इस बात पर चर्चा की कि भविष्य के लिए रोजगार के अवसर कैसे पैदा हों।

12 वर्षीय अभिमन्यु सबसे कम उम्र में ग्रैंडमास्टर बने

नई दिल्ली। 12 वर्षीय अमरीकी चेस खिलाड़ी अभिमन्यु ने सबसे कम उम्र में ग्रैंडमास्टर बनने का रेकॉर्ड बनाया। भारतीय मूल के अभिमन्यु ने लियोन को हराकर यह उपलब्धि हासिल की।

सर्गेइ को पीछे छोड़ा : अभिमन्यु ने रूसी खिलाड़ी सर्गेई कर्जाकिन के 19 साल पुराने रेकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया है। अभिमन्यु की उम्र 12 साल चार महीने और 25 दिन है। सर्गेइ ने 12 साल 7 महीने की उम्र में ग्रैंडमास्टर का खिताब हासिल किया था।

बच्चों के बस्ते के बोझ को हल्का कर कंधों पर भार को किया कम

बीकानेर। नन्हें मुन्नों के बस्ते के बोझ को कम करने की शिक्षा विभाग की कवायद कुछ हद तक पूरी हो गई है। शिक्षा विभाग की ओर से 2019 में बस्ते का बोझ को कम करने के लिए शुरू किए पायलट प्रोजेक्ट को अब पूरे राज्य में लागू कर दिया गया है। अब कक्षा पहली से पांचवीं तक के बच्चों को अपने सभी विषयों की अलग-अलग पुस्तकें नहीं ले जाकर केवल एक ही पुस्तक ले जानी होगी। जिसमें सभी विषय शामिल होंगे।

तीन भागों में बांटी विषय सामग्री : राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर की ओर से तैयार की गई विषयवार सामग्री को तीन भागों में बांटा गया है। हर भाग में प्रत्येक विषय के कुल पाठयक्रम के एक तिहाई पाठों को हर भाग की पुस्तक में समाहित किया गया है। जिससे बच्चों को एक ही पुस्तक में सभी विषय की शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई गई है।

पहली, दूसरी के तीनों विषय हर भाग में : आरएसआईईआरटी. उदयपुर में संयुक्त निदेशक धर्मेंद्र जोशी ने बताया की हर विषय के वर्ष भर के पाठ्यक्रम को तीन भागों में बांटा गया है। पहली व दूसरी के बच्चों के हिंदी, अंग्रेजी तथा गणित की पहली पुस्तक 'आओ सीखें भाग-1' में तीनों विषय के एक तिहाई भाग की शिक्षण सामग्री शामिल की गई है। इस तरह दूसरी पुस्तक 'आओ सीखें भाग-2' अगले एक तिहाई भाग को और तीसरी पुस्तक 'आओ सीखे भाग-3' में शेष रही विषय सामग्री को शामिल किया गया है। जिससे बच्चों को केवल एक ही पुस्तक स्कूल ले जानी पड़े।

पहले हर विषय की अलग पुस्तकें : पहले हर विषय की अलग-अलग पुस्तक होने से पहली व दूसरी के बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी तथा गणित विषय की तीन पुस्तकें पूरे वर्ष भर तथा तीसरी से पांचवी तक के बच्चों को चार विषयों को चार पुस्तकों का भार ढोना पड़ता था। तीन तीन महीने की सभी विषयों की एक ही पुस्तक होने से बच्चे अब हर तीन महीने तक एक ही पुस्तक से सभी विषयों का अध्ययन कर सकेंगे।

भारतनेट के लिए वैश्विक बोली जल्द

कवायद : 2.5 लाख गांवों को डिजिटल बनाने की दिशा में आगे बढ़ी सरकार- केंद्र की महत्त्वाकांक्षी भारतनेट परियोजना के लिए जल्द ही वैश्विक बोली मंगाई जाएगी। ये दुनिया का सबसे बड़ा ग्रामीण संचार तंत्र कार्यक्रम है और सरकार की डिजिटल इंडिया पहल में एक अहम बिंदु है, जिसका लक्ष्य भारत को डिजिटल तौर पर सशक्त बनाना है। भारतनेट देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी में लाने का कार्यक्रम है। इसे भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लि. अमलीजामा पहना रहा है। इसका बजट अब करीब 61 हजार करोड़ हो गया है।

यहाँ तक पहुंची परियोजना : इस साल मई तक 1.56 लाख ग्राम पंचायतों में भारतनेट सर्विस चालू कर दी गई है। ये परियोजना इस साल अगस्त तक पूरी कर दी जाएगी। मार्च में केंद्र ने संसद में बताया था कि 5 लाख किमी से ज्यादा ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाई जा चुकी हैं। सैटेलाइट के जरिए ब्रॉडबैंड 5200 ग्राम पंचायतों में उपलब्ध कराया जाएगा। इनमें से 3600 पंचायतें सुविधा उठाने के लिए तैयार भी हो चुकी हैं।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

नागौर

सेठ रामचन्द्र रामनिवास सारड़ा रा. बा. उ. मा. वि. मारवाड़ मूण्डवा को सेठ श्री रामचन्द्र रामनिवास सारड़ा से 15 कैंपर प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये तथा 25:75 योजना में कम्प्यूटर लैब हेतु भेंट राशि 76,000 रुपये, श्री डॉ. हापुराम चौधरी से 04 छत पंखें, 03 अखबार स्टेंट टेबल व दो बड़ी आलमारिया लोहे की प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री भंवर लाल जाट (प्रधानाचार्य) से पुस्तकालय में 125 पुस्तकें और ऑडियो विजुअल शिक्षण सामग्री प्राप्त, जिसकी लागत 16,000 रुपये, भंवर लाल जाट प्रधानाचार्य से 4,000 रुपये प्राप्त श्रीमती उर्मिला सोनी (व्याख्याता) से जन्मदिन के अवसर पर 2,000 रुपये प्राप्त।

चित्तौड़गढ़

रा.सी.सै.स्कूल कानोज, ब्लॉक बेदेसर को श्रीमती सरला तोतला से एक लाख रुपये स्कूल को सप्रेम भेंट।

चूरू

रा.सी.सैकण्डरी स्कूल रामपुरा बेरी को मि. अमित कुमार से शिक्षा को सपोर्ट हेतु 65,201 रुपये प्राप्त हुए। **रा.सी. सै. स्कूल पाण्डेरुतल ब्लॉक तारानगर** को श्री हनुमान सिंह से शिक्षा को सपोर्ट हेत 51,000 रुपये प्राप्त हुए।

हनुमानगढ़

रा.सी.सै.स्कूल सूरतपुरा ब्लॉक भादरा को श्री अजय बहादुर से शिक्षा को सपोर्ट हेतु 50,000 रुपये प्राप्त।

जयपुर

रा.उ.मा.वि. जमवारामगढ़ को श्री तिलकुराज सक्सैना (अध्यापक) से एक सोफा सैट मय सेन्टर टेबल एवं कार्यालय हेतु कुर्सियाँ प्राप्त हुई जिनकी लागत 21,000 रुपये, श्री हनुमान सहाय वर्मा (से.नि. सहायक प्रशासनिक अधिकारी) से एक अलमारी प्राप्त हुई जिसकी लागत 10,500 रुपये, श्री जमील मोहम्मद (कनिष्ठ सहायक) से महापुरुषों के फोटोग्राफ प्राप्त जिसकी लागत 3,250 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि. सूडसर, श्रीडूँगरगढ़ में श्री सिराजुद्दीन से 1,01,000 रुपये की आर्थिक सहयोग से विद्यालय में रंग-रोगन का कार्य करवाया गया।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. हेलक (कुम्हेर) में श्री श्रीराम नम्बरदार द्वारा अनुमानित 3.10 लाख रुपये की लागत से कक्षा-कक्ष 20X20 मय बरामदा का निर्माण करवाया गया, श्री हरीश चन्द जाटव द्वारा 2.40 लाख अनुमानित राशि से 60 फीट लम्बा बरामदा का निर्माण करवाया गया, श्री गिरधारी कोली (पूर्व पंचायत समिति सदस्य) द्वारा 1.65 लाख रुपये की लागत से 40 फीट लम्बा बरामदा का निर्माण करवाया गया, श्री रामकुमार सिनसिनवार (प्रधानाचार्य) द्वारा 80,000 रुपये की लागत से 20 फीट लम्बा बरामदा का निर्माण करवाया गया, जनसहयोग समस्त ग्रामवासी (हेलक) से अनुमानित 5.00 लाख रुपये की लागत से 135 फीट लम्बा बरामदा का निर्माण करवाया गया। जनसहयोग समस्त ग्रामवासी (हेलक) द्वारा सीढ़िया (झीना) का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 48 हजार रुपये व मुख्य दरवाजा फाटक का निर्माण जिसका वजन 507 किग्रा. है जिसकी लागत 40,000 रुपये, विद्यालय विकास कोष से 75 फीट लम्बा बरामदा का निर्माण करवाया गया। श्री हाकिम सिंह (व्याख्याता) से 6,500 रुपये नकद प्राप्त, श्रीमती ललिता कुमार (अ.) से 6,200 रुपये प्राप्त, श्री श्रीराम चौधरी (व्याख्याता) से 5,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री श्री समय सिंह (सम्मो पटेल) (सरपंच), रा.बा. उ. मा.वि. हेलक, रा.उ.प्रा.वि. नगला ग्यासिया, रा.उ.प्रा.वि. गोला सिंह, प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री विशम्बर सिंह (सेवानिवृत्त) से 3,700 रुपये प्राप्त, सर्वश्री हरभानसिंह (व्याख्याता) श्रीमती नवीन लता यादव (व.अ.) प्रत्येक 3,100-3,100 रुपये प्राप्त। सर्वश्री इन्द्रपाल शर्मा (पुस्तकालयाध्यक्ष) तरुण कुमार (प्र.अ.), रामसिंह गुर्जर (प्र.अ.), देवेन्द्र सिंह (शा.शि.) प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये नकद प्राप्त, सर्वश्री बच्चू सिंह (अध्यापक), श्रीमती कविता (अ.), श्रीमती प्रियंका (अ.), श्रीमती गुलाब सिंह (अ.), श्रीमती सुधारानी (प्रबोधक), सुश्री मधु (अ.), श्रीमती राजवीर कौर (अ.), भूरी सिंह (कार्यवाहक प्र.अ.), चन्द्र प्रताप (अ.), हरेन्द्र चाहर (अ), सुश्री जागृति पहाड़िया, प्रमोद कुमार शर्मा (व्या.), चरणजीत सिंह (वरिष्ठ सहायक), प्रेमसिंह (अ.), महाराज सिंह बरखेरिया, देशराज बैसला, मूला, गनपत मास्टर, प्रताप भगत, देवीसिंह (थानेदा) सूका पंच, हरिशंकर (पोस्टमेन), राजेश, रामकुंवर (थानेदार), दलबीर बाबू, शीशराम, अमित शर्मा, लाखन शर्मा, भग्गो दायमा, अमर सिंह दनगस, राजाराम बरखेरिया, कुंवरपाल बघेल, सुलेमान खान, वशीर खान (व्या.), चन्दनसिंह (पूर्व प्रधानाचार्य), निहाल सिंह, हेतराम बैंसला, मंगतु खाँ, छतरो सक्सैना, मंगो, रामसहाय, राजाराम, बदले फौजी, मानसिंह, जगराम, भगवान सिंह, कुंवर पाल, नारायण बक्सी, लोकेन्द्र, पाल सिंह, लालचन्द, फतेहराम, भीमसिंह, विज्जन बरखेरिया, केहरि सिंह, यशपाल ठाकुर, मिश्री कोतवाल, साहब सिंह लोधा फौजी, मदन लोधा, मनसुख, पूरन सिंह ठाकुर, कारे जाटव, हरवर पण्डित, नेमा पण्डित, छीतरमल शर्मा, गोपाल मा., अनिरुद्ध, किशन लाल, पप्पू बघेल, सुरेश टेलर बीरो, राजेन्द्र सिंह बरखेरिया, समुन्दर सिंह प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये नकद प्राप्त। श्री राजाराम सैह से 21,101 रुपये नकद प्राप्त, डॉ. राजेन्द्र सिंह से 21,050 रुपये नकद प्राप्त, श्री दयाराम जाटव से 21,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री विजय पाल सिंह से 15,551 रुपये नकद प्राप्त, श्री सम्मो पटेल (सरपंच) से 11,000 रुपये नकद प्राप्त, सर्वश्री कुंवरसिंह, मुरारी शर्मा, दुर्गा सिंह (पूर्व सरपंच) प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री कैलाश शर्मा, भगवान सिंह शर्मा, महावीर वाटर वर्क्स, प्रो. योगेन्द्र सिंह, जगदीश हवेली, किशन लाल शर्मा, प्रत्येक से 3,100-3,100 रुपये नकद प्राप्त, सर्वश्री नरेन्द्र (पप्पू), बच्चू सिंह दायमा, गजराज सिंह, प्रेमसिंह, देशराज, रामबाबू पटेल (अ.), राजपाल (अ.), बन्टी, भवानी शंकर (व्या.), राजेन्द्र सिंह (अ.), सियाराम (दिल्ली पु.), थलेश शर्मा प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये नकद प्राप्त। सर्वश्री लक्ष्मण (राज. पु.), मानसिंह मा. जाटव, सम्पत सिंह प्रत्येक से 1,500-1,500 रुपये प्राप्त, सर्वश्री गिरधारी छावड़ी महेन्द्र सिंह (राधा अ.), रोहताश बरखेरिया, महेन्द्र छावड़ी, पृथ्वी (उप सरपंच), मिथलेश शर्मा, अमर सिंह, पूरन सिंह बक्शी प्रत्येक से 1,000-1,000 रुपये प्राप्त। श्री गिरधर फौजी से 1,600 रुपये नकद प्राप्त, सर्वश्री शिवराम, सूरज सिंह बक्शी, हरिराम मैंथना वाले, जगत सिंह, ब्रजलाल पंडित, लालाराम कोली, लक्ष्मण सेठ, हुकम सिंह, केदार सिंह, महावीर कोली, चरनसिंह लबानियां, जगदीश लबानिया, धर्मवीर लुहार, यशपाल, जसमत गोठिया, हिम्मत सिंह गोठिया, रोहताश दनगस, दुर्गा पटेल, गजेन्द्र शर्मा, जगदीश प्रजापत, महेन्द्र सिंह जाटव, हजारी लाल, मनोहर सिंह, शिवराम योगी, बबलू दनगस, पूरन बाबा, रवि बैंसला, वीरेन्द्र फौजी, गज्जो दनगस, राकेश (वार्ड पंच), भंवर सिंह, जगदीश जाटव, सुरेश शर्मा, मोहन सिंह जाटव, रज्जो जाटव, नेत्रपाल प्रजापत, इतवारी खाँ, नवाब खाँ, बुद्धि प्रजापत, हिम्मत सिंह बरखेरियां, शाबीत खाँ, मोहन बरखेरिया प्रत्येक से 500-500 रुपये नकद प्राप्त हुए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

हमारे भामाशाह

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अगस्त, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बालशिविरा

अगस्त 2021

शगुन शर्मा, कक्षा-9
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
छाजा का नागल

सपना मेहरा कक्षा-10
राउमावि. बोरड़ा, झालरापाटन, झालावाड़

बुलबुल सुथा कक्षा-10
राउमावि. बोरड़ा, झालरापाटन, झालावाड़

गुड्डी कक्षा -11 राउमावि. होडू, बाड़मेर

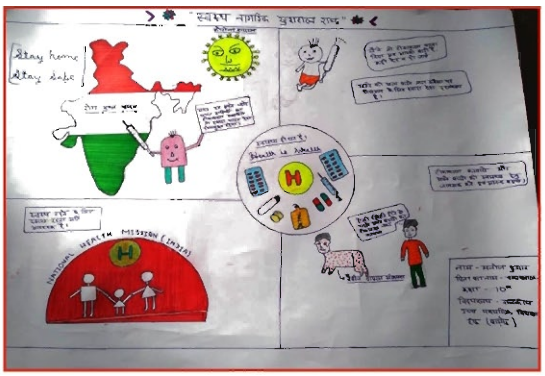

मनोज कुमार कक्षा-10 राउमावि. होडू, बाड़मेर

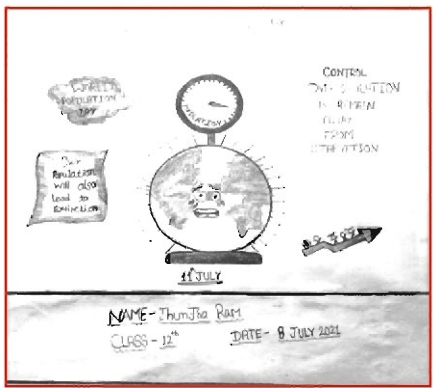

झुंझाराम कक्षा - 12
राजकीयउच्च माध्यमिक विद्यालय
होडू, बाड़मेर

राधेश्याम कक्षा - 8
श्रीमती राधा राजकीय उ. प्रा. विद्यालय
बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

शिवेशा अग्निहोत्री कक्षा-8
सोफिया उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर

www.rajsevak.com

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • अगस्त, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अगस्त, 2021 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : अगस्त, 2021

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यार्थी सेवा केन्द्र सीकर के शिलान्यास के अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री सौरभ स्वामी, अध्यक्ष श्री राजेन्द्र पारीक एवं अन्य शिक्षा अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक।

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा स्माइल-3 कार्यक्रम निरीक्षण अन्तर्गत निरीक्षणकर्त्ता शिक्षा अधिकारियों के साथ शिक्षकगण।

मेराम चंद हूंडिया रा. बा. उ. मा. वि. मोकलसर में भामाशाह श्री मनसुख सिंह पुत्र श्री उदय सिंह बालावत ने वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र की प्रेरणा से विद्यालय में ग्रीन बोर्ड भेंट किया। साथ है प्रधानाचार्य श्री भरत कुमार सोनी एवं स्टाफ।

राउमावि बूझड़ा नाई नोडल स्तरीय 'स्माइल कार्यशाला' में भाग लेते हुए नॉडल क्षेत्र के स्माइल प्रभारी, प्रशिक्षक ,प्रधानाचार्या किरणबाला जीनगर एवं नॉडल प्रभारी बीना कंवर तथा संचालक डॉ. बंशीलाल टाक।